कबीर की भाषा

माताबदल जायसवाल
हिन्दी-विभाग
प्रयाग विश्वविद्यालय
प्रयाग

कैलाश [illegible]
इलाहाबाद-२

प्रकाशक
कैलाश ब्रदर्स
इलाहाबाद-३,

मूल्य ११.००
संस्करण १९६५

मुद्रक :
लीडर प्रेस,
इलाहाबाद

स्वर्गीया माँ सुखदा देवी

की

पुण्य स्मृति में

तृतीया	(पु०)	केण, कइं	(पु०)	केहिं
	(स्त्री०)	काइं, काए	(स्त्री०)	केहि,काहि
पंचमी	(पु०)	कउ, कहे	(पु०)	कहुं
	(स्त्री०)	काहे	(स्त्री०)	काहिं
चतुर्थी और षष्ठी	(पु०)	कहो, कहु कस्स, कासु	(पु०)	काहं—ह
	(स्त्री०)	काहि, काहि	(स्त्री०)	काहि
सप्तमी	(पु०)	कहि, कहिं	(पु०)	काहिं
	(स्त्री०)	काहिं	(स्त्री०)	काहिं

किं, कवणु, काइं, क

	एक वचन	बहु वचन
	को	किवि, केवि
प्रथमा द्वितीया	कवण	कवणु
	कोवि < कोपि	
	कमना, कवण, कोई, कोइ < कोवि,	
	कुइ < कोई, काह	
(न०)	किं, कि, कवि, काइं,	काहं
तृतीया	कइं, केण, कवणें	केहि, केहिं
पंचमी	किहे	
षष्ठी	कासु, कसु, कहो, कहु, काह	
सप्तमी	कहिं	

स्त्रीलिंग में का—प्रकृति से कर्ता और कर्म एक वचन में 'क' या 'क', करण में 'काए' और काइं, सम्बन्ध में 'काहे', 'कहे', 'काहि', 'कहि' रूप पाये जाते हैं।

यत्, तत् और किम् सर्वनामों की 'ज','त' और 'क' प्रकृतियाँ अपभ्रंश साहित्य में भली प्रकार देखी जा सकती हैं।

५. अनिश्चयवाचक सर्वनाम—

अपभ्रंश के ये सर्वनाम पि, वि, मि, इ<सं० अपि; चि<सं० चित् लगाकर बनाये जाते हैं।

'किं' और 'काइं' अव्यय की भाँति भी प्रयुक्त होते हैं। 'कवण' प्रश्नवाचक सर्वनाम सदृश भी प्रयोग में आता है।

कबीर की भाषा

(व्याकरणिक प्रयोगावृत्तियों का विशेष अध्ययन)

माताबदल जायसवाल
हिन्दी-विभाग
प्रयाग विश्वविद्यालय
प्रयाग

कैलाश ब्रदर्स
इलाहाबाद-३

स्वर्गीया माँ सुखदा देवी
की
पुण्य स्मृति में

भूमिका

हिन्दी भाषा और साहित्य के इतिहास में महात्मा कबीर एक अद्भुत व्यक्तित्व लेकर अवतरित हुए हैं। मसि-कागद और लेखनी का स्पर्श न करने पर भी हिन्दी भारती के मन्दिर में तुलसी, सूर के पश्चात् उन्हीं को आसन दिया जाता है। हिन्दी साहित्य में संभवतः कबीर ही पहले कवि हैं जो संस्कृतरूपी कूप-जल से हट कर साहस-पूर्वक भाषारूपी बहते नीर के पान करने के लिए लोक समुदाय को आमंत्रित करते हैं। काव्य-कला की दृष्टि से भले ही कबीर की भाषा काव्योचित अथवा अलंकृत न हो किन्तु भाषा-वैज्ञानिक दृष्टि से कबीर की भाषा अत्यन्त समृद्धिशाली है। जिस प्रकार हम कबीर को भारतीय साहित्य-धर्म-साधना के चौराहे पर पाते हैं उसी प्रकार भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से कबीर भाषा के चौराहे पर भी आसीन हैं। इसी कारण से मध्य-कालीन समस्त कवियों में कबीर की भाषा का भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन सर्वाधिक महत्वपूर्ण होने के साथ-साथ अत्यधिक जटिल तथा उलझन में डालने वाला है। आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रथम खेवे के आलोचक जिस प्रकार कबीर के साहित्य-धर्म-उपासना के मूल्यांकन में पूर्वाग्रह का मोह नहीं त्याग सके उसी प्रकार कबीर की भाषा को भी सधुक्कड़ी, पचरंगी, खिचड़ी, अपरिपक्व आदि नामों से पुकारा गया है। कबीर की भाषा के संबंध में सबसे बड़ी उलझन का प्रथम कारण तो यह था कि कबीर के काव्य का कोई प्रामाणिक पाठ नहीं मिलता था। सौभाग्य से प्रयाग विश्वविद्यालय के प्रवक्ता डा० पारसनाथ तिवारी ने कई वर्षों के सतत प्रयास के पश्चात् कबीर ग्रन्था-वली का एक वैज्ञानिक संपादन प्रस्तुत किया, जिसे प्रयाग विश्वविद्यालय हिन्दी परिषद् ने प्रकाशित किया है। इस ग्रन्थ के प्रकाशन के पश्चात् ही मेरे मन में इस ग्रन्थ के भाषा वैज्ञानिक अध्ययन की उत्कंठा जागृत हुई। सर्वप्रथम मानक (स्टैंडर्ड) हिन्दी के उद्गम और विकास के लिए सामग्री संकलन के हेतु केवल खड़ी बोली के रूपों को चुनने के लिए सीमित दृष्टि से ही यह अध्ययन आरम्भ हुआ; किन्तु खड़ी बोली के रूप अन्य भाषा-रूपों से इस प्रकार गुथे प्रतीत हुए कि सीमित अध्ययन से न तो मुझे संतोष हुआ और न कबीर के प्रति न्याय होता दीख पड़ा। अतएव कबीर की भाषा का सर्वांगीण रूप से भाषा वैज्ञानिक अध्ययन आरम्भ किया और ध्वनि-पद-वाक्य तथा शब्द-कोश संबंधी कई सहस्र कांड बन गए; किन्तु इतना करने पर भी ऐसा प्रतीत हुआ; कि कबीर की

भाषा के भाषा वैज्ञानिक अध्ययन के लिए केवल ध्वनि-पद-शब्दकोश संबंधी एक या अनेक प्रयोगों के संकलन मात्र से कबीर की भाषा की प्रकृति को पहचानना कठिन होगा—अतएव इस उद्देश्य से पुनः अध्ययन आरम्भ किया गया कि कबीर के काव्य साखी-सबद-रमैनी में आए हुए समस्त व्याकरणिक प्रयोगों की समस्त प्रयोगावृत्तियों (Frquencies) का विवेचन किया जाए। इसी उद्देश्य की पूर्ति में लगभग २५० पृष्ठों का यह छोटा-सा एक प्रवन्ध तैयार हो गया है।

प्रस्तुत प्रबंन्ध में कबीर की भाषा के भाषा वैज्ञानिक अध्ययन तथा विश्लेषण का प्रयास किया गया है। मध्यकालीन कवियों में कबीर की भाषा हिन्दी भाषा के विकास की दृष्टि से जितनी अधिक महत्वपूर्ण है उतनी ही अधिक समस्यामूलक तथा उलझन में डालने वाली है। प्रस्तुत अध्ययन में इसी उलझे प्रश्न को सुलझाने का प्रयास किया गया है। इस प्रबंध की निम्नलिखित विशेषताएँ द्रष्टव्य हैं :—

१—हिन्दी साहित्य के प्रथम खेवे के आलोचक कबीर की भाषा के सम्बन्ध में अपने-अपने पूर्वाग्रह का मोह त्यागने में असमर्थ थे यही कारण है, कि सधुक्कड़ी, पचरंगी, खिचड़ी तथा अपरिपक्व आदि नामों से कबीर की भाषा को संबोधित किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में विना किसी पूर्वाग्रह के, विना किसी पक्षपात के वस्तुपरक विश्लेषण तथा विवेचन के आधार पर जो भी निष्कर्ष निकले सच्चाई से पाठकों के सम्मुख रख दिये गये हैं।

२—अध्ययन-पद्धति की दृष्टि से प्रस्तुत अध्ययन में ऐतिहासिक भाषा विज्ञान की यूरोपीय पद्धति (जिसका अनुसरण भारत में डा० चटर्जी, डा० सक्सेना तथा डा० धीरेन्द्र वर्मा आदि विद्वानों ने अपने शोध प्रबन्धों में किया) तथा अमरीकी पद्धति का समन्वित रूप अपनाया गया है।

३—कबीर की भाषा में प्रयुक्त प्रत्येक व्याकरण पद की प्रयोगावृतियों (Frequencies) का विवेचन इस अध्ययन की सबसे बड़ी मौलिकता अथवा विशेषता कही जा सकती है। वर्तमान बोलियों की दृष्टि से कबीर की काव्य-भाषा में भिन्न-भिन्न बोलियों के रूप प्रयुक्त हुए हैं। अतएव कबीर की मूलाधार बोली का निर्धारण तब तक नहीं हो सकता जब तक कि एक ही व्याकरणिक अर्थ को प्रकट करने वाले रूपों की प्रयोगावृत्तियों का तुलनात्मक तथा सापेक्षिक विवेचन नहीं किया जायगा। उदाहरणार्थ संबंधकारकीय परसर्ग के रूप में क० ग्रं० में 'का' 'को' 'कौ' केर' 'क' आदि अनेक परसर्ग प्रयुक्त हुए हैं। वर्तमान युग में ये भिन्न-भिन्न परसर्ग भिन्न-भिन्न हिन्दी की बोलियों से संबंधित हैं। प्रस्तुत अध्ययन में इतना ही बता देना पर्याप्त नहीं समझा गया कि क० ग्रं० में संबंधकारकीय परसर्ग के रूप में 'का', 'को', 'कौ' केर', 'क' आदि अनेक परसर्ग प्रयुक्त हुए हैं, बल्कि इस तथ्य का भी विवेचन किया गया है, कि कौन परसर्ग कितनी बार

प्रयुक्त हुआ है। इतना ही नहीं, समध्वनीय भिन्नार्थक पदों (Homphonous) की भी प्रयोगावृतियों का विवेचन किया गया है। उदाहरणार्थ क० गं० में पुरुषवाचक सर्वनाम उत्तम पुरुष, ए० व० का पदग्राम 'मैं' और अविकरणकारकीय परसर्ग 'मैं' समध्वनीय होने पर भी दो भिन्न-भिन्न पदग्राम हैं।

४—प्रस्तुत अध्ययन में प्रयोगाधिक्य के आधार पर ही क० काव्य की मूलाधार बोली का निर्धारण किया गया है। क० गं० में अनेक ऐसे रूप मिलेंगे जो तत्कालीन खड़ी, ब्रज, अवधी, राजस्थानी में सर्वनिष्ट हैं। ऐसे रूपों को मूलाधार बोली की प्रकृति-निर्धारण में नहीं लिया गया, इसके लिये केवल उन्हीं रूपों या पदों की प्रयोगावृत्तियों का सापेक्षिक अध्ययन किया गया है, जो खड़ी, राजस्थानी, ब्रज, अवधी, भोजपुरी आदि हिन्दी की बोलियों में भिन्न-भिन्न रूपों में पाये जाते हैं। यथा—संबंधकारकीय परसर्ग के रूप में 'की' सर्वनिष्ट हैं, किन्तु 'का' केवल खड़ी में 'को' 'कौ' केवल ब्रज, राजस्थानी में तथा 'केर' 'क' केवल अवधी, भोजपुरी में प्रयुक्त होते हैं। अतएव ये रूप मूलाधार बोली के निर्धारण में सहायक हो सकते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में इन्हीं विशिष्ट रूपों के आधार पर मूलाधार बोली (Basic dialect) का निर्धारण हुआ है। इस विषय में भी केवल एक पद श्रेणी में प्रयोगाधिक्य देखकर तुरन्त कोई निष्कर्ष नहीं निकाला गया, बल्कि संज्ञा, सर्वनाम विशेषण, क्रिया, अव्यय आदि समस्त पदश्रेणियों (Paradigm) में प्रयोगाधिक्य देखकर ही किसी बोली को मूलाधार बोली (basic dialect) की संज्ञा दी गई है। इस पद्धति को अपनाने पर प्रस्तुत अध्ययन में जो निष्कर्ष निकले हैं, उनके संबंध में (मेरी जानकारी में) न तो किसी भी विद्वान ने संकेत किया और न मैंने ही इस निष्कर्ष की प्रस्तावना मन में सोची थी। भले ही इस प्रबन्ध के निष्कर्ष अंतिम निष्कर्ष न ठहरें, किन्तु वस्तुपरक वैज्ञानिक पद्धति को अपनाते हुए इस प्रकार के परिणाम तक पहुँचने का यह अपने ढंग का प्रथम मौलिक प्रयास है।

५—आधुनिक भाषाविज्ञान की तुलनात्मक पद्धति को अपनाते हुए कबीर से १ शती पूर्व तथा १ शती पश्चात् और कबीर के समसामयिक कवियों की भाषा और क० ग० की भाषा के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर कबीर के आविर्भाव-काल तथा प्रस्तुत पाठ (कबीर ग्रंथावली—हिन्दी परिषद विश्वविद्यालय प्रयाग) का कालनिर्णय करने का प्रयास किया गया है। इस तुलनात्मक अध्ययन को वैज्ञानिक रूप से यदि पूर्णतया किया जाता तो इसी दिशा में इतना ही विस्तृत एक प्रबन्ध और तैयार हो सकता था, किन्तु स्थानसंकोच के कारण इस दिशा में इतना विस्तृत अध्ययन संभव नहीं हो सका, फिर भी इस दिशा को अपना कर कबीर के काल निर्णय की नयी पद्धति की ओर संकेत किया गया है। इस प्रकार कबीर की भाषा चदरिया के ताने बाने का वैज्ञानिक विश्लेषण करके उसे 'जस की तस' धर देने का प्रयास ही इस प्रबंध का मुख्य उद्देश्य

रहा है। इस प्रयास में सफलता कहाँ तक मिली इसे तो पारखी विद्वान ही कह सकते हैं। अपनी तुच्छ बुद्धि के साथ इस संबंध में मौन रहना ही मैं अपने लिये श्रेयस्कर समझता हूँ।

इस कार्य को आरम्भ करके इसे गन्तव्य स्थल तक पहुँचाने की सतत प्रेरणा तथा मीठी फटकार अग्रज तुल्य डा० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय (डीन स्टूडेन्ट वेलफेयर—इलाहा-वाद यूनीवर्सिटी) से मिलती रही है। प्रस्तुत अध्ययन में मध्यकालीन अवधी के लिए डॉ० वाबूराम सक्सेना, ब्रज भाषा के लिए डॉ० धीरेन्द्रवर्मा तथा भोजपुरी के लिए डॉ० उदयनारायण तिवारी की कृतियों से विशेष सहायता मिली है। इस अध्ययन में उठने वाली अनेक भाषा वैज्ञानिक ग्रन्थियों के सुलझाने में अपने वरिष्ट सहयोगी डॉ० हरदेव वाहरी के सत्परामर्श तथा निर्देशन से मैं अत्यंत लाभान्वित हुआ हूँ।

डॉ० राम कुमार वर्मा (अध्यक्ष हिन्दी विभाग), डॉ० उदयनारायण तिवारी (अध्यक्ष हिन्दी विभाग ~~प्रयाग विश्वविद्यालय~~ जवलपुर विश्वविद्यालय), डॉ० हरदेव बाहरी (वरिष्ट प्रवक्ता हिन्दी विभाग विश्वविद्यालय, प्रयाग) की सम्मति से प्रयाग विश्व-विद्यालय ने प्रस्तुत अध्ययन को डी० फिल के समकक्ष स्वीकार किया है। इन समस्त गुरुजनों और वरिष्ट अध्यापकों के प्रति विनम्र कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना पुनीत कर्त्तव्य समझता हूँ। मेरे सुहृद, सहपाठी तथा सहयोगी डॉ० पारसनाथ तिवारी द्वारा संपादित 'कबीर ग्रंथावली' तथा 'शब्दकोश' के बिना प्रस्तुत अध्ययन दुःसाध्य था। अपने और उनके बीच में धन्यवाद की दीवाल नहीं उठाना चाहता। मेरे मित्र तथा सहयोगी डॉ० मोहन अवस्थी, रमानाथ शर्मा तथा अन्य सहयोगियों के विचारविमर्श के फल-स्वरूप अनेक उपयोगी सुझाव मिले हैं। कैलाश ब्रदर्स इलाहाबाद के उदीयमान प्रकाशक श्री रामनाथ मेहरोत्रा के उत्साह के लिए साधुवाद देने में मुझे हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव होता है।

माताबदल जायसवाल

शिवरात्रि २०२२

विषय-सूची

—

वर्णग्रामिक अनुशीलन GRAPHEMICS

१.० कबीर (सं० १४५६-१५७५) की काव्य (साखी-सबद-रमैनी) भाषा के 'गठनात्मक अध्ययन' (Structural Study) के लिए सर्वप्रथम यह आवश्यक है, कि जिस लेखनप्रणाली में कबीर की भाषा लिखित रूप में प्राप्त है उसका वर्णग्रामिक[1] विश्लेषण कर लिया जाय। इस उद्देश्य-पूर्ति में सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि न तो कबीर ने स्वयं कभी कलम हाथ में धरा; न मसिकागद छुआ[2] और न कबीर की समसामयिक हस्तलिखित प्रति ही मिली। भाषा की भाँति लेखन-प्रणाली में भी यदा-कदा मंथरगति से परिवर्तन होता रहता है। कभी-कभी भाषा तो विकसित होकर परिवर्तित हो जाती है; किन्तु परम्परा का प्रेमी लिपिकार लेखन-प्रणाली की प्राचीन पद्धति को ही अपनाए रहता है और कभी-कभी परिवर्तन-प्रेमी लिपिकार लेखन-प्रणाली में इतना अधिक परिवर्तन कर देता है, कि एक ही पदग्राम या ध्वनिग्राम को अभिव्यक्त करने के लिए कई प्रकार की वर्तनी (Spelling) प्रचलित हो जाती है। जिसके माध्यम से प्राचीन भाषा के मूलस्वरूप को पहचानना अति दुस्साध्य हो जाता है। फिर भी किसी प्राचीन अथवा मध्यकालीन भाषा के भाषा वैज्ञानिक अध्ययन के लिए उसका समसामयिक या कालान्तर में प्राप्त लिखित रूप ही एकमात्र साधन है। अतएव ऐसे अध्ययन के लिए वर्णग्रामिक (Graphemic) विश्लेषण भाषा-गठन की प्रथम परत (Level) है। वर्णग्रामिक विश्लेषण का महत्त्वपूर्ण पुनर्परीक्षण (Check) अन्य ध्वनिग्रामिक परम्पराओं यथा—मात्रा, बलाघात, सुराघात, तुक और छंदपूर्ति आदि अन्य साधनों से हो सकता है।

१.१ ना. प्र. स. द्वारा प्रकाशित तथा डा० श्यामसुन्दर दास द्वारा संपादित कबीर

---

१. वर्णग्राम (प्रत्येक अभिलेख का लघुत्तम लेखन रूपों) (Graphs) में खंडीकरण (Segmentation) हो सकता है। ऐसे लघुत्तम लेखन रूपों को जिनका पारस्परिक आगमन वर्णक्रम में अन्य किसी लघुत्तम लेखन रूप से संबंधित नहीं होता वर्णग्राम (Graphem) कहा जाता है और जिन वर्णों का पारस्परिक आगमन वर्णक्रम में अन्य लघुत्तम लेखन रूपों से पूर्णरूपेण पूर्वाभासित हो जाता है उन्हें 'सहवर्णग्राम' (Allographs) कहा जा सकता है।

—हेनरी एम० हेनिंग्सवाल-लैंग्वेज चेंज एण्ड लिंग्विस्टिक्स अध्याय- २.२१

२. मसि कागद छुआ नहीं कलम धरी नहिं हाथ...

ग्रन्थावली में संपादक का कथन है, कि जिस हस्तलिखित प्रति के आधार पर यह ग्रन्थ संपादित किया गया है, उसकी पुष्पिका में संवत् १५६१[1] विक्रमी का उल्लेख हुआ है; किन्तु अनेक कारणों से इसकी पुष्पिका पर संदेह किया जाता है। हिन्दी परिषद् विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित 'कबीर ग्रन्थावली' के संपादक डा० पारसनाथ तिवारी का अनुमान है, कि उक्त पुष्पिका में उल्लिखित संवत् कदाचित् शक् संवत् है जो विक्रमीय संवत् १६९६ के लगभग पड़ता है।[2] किन्तु इस प्रति के वर्णग्रामिक विश्लेषण (प्रथम और अंतिम पृष्ठ के आधार पर) से तो इसका प्रतिलिपि-काल संवत् १६९६ भी मानने में संकोच होता है; क्योंकि वे वर्णग्राम जो हिन्दी वर्णग्राम में बाद में आए हैं इसमें मिलते हैं। यथा—

(१) प्रस्तुत प्रति में 'ड' का सहवर्ण ग्राम 'ड०' (ड़) भी मिलता है :—

हाड०ी = हाड़ी (आधुनिक) पृ० १
उघाडि०या = उघाड़िया (") "
लडि० पड० या = लड़िपढ़या (") "

(२) मध्यकाल की हस्तलिखित प्रतियों सं० का 'ज्ञ' वर्णग्राम 'ग्य' वर्णग्राम के रूप में मिलता है जब कि, इसमें यह 'ज्ञ' के रूप में ही मिलता है। 'ज्ञ' लिखने की प्रवृत्ति हिन्दी में कालान्तर में १७ वीं शती ई० के बाद विकसित हुई है।

१.२ अभी तक की खोजों के अनुसार देवनागरी लिपि में 'ड' का सहवर्णग्राम 'ड़' १९वीं शताब्दी के प्रथम चरण से ही मिलता है। इसके पूर्व १७ वीं शती ई० की किसी भी प्रति में ऐसा नहीं मिलता। यह तो संभव है कि सहवर्णग्राम— 'ड०' — सहवर्णग्राम 'ड़' का पूर्व रूप हो किन्तु अन्य किसी प्रति में न मिलने से यह तो सिद्ध हो जाता है, कि यह प्रति १५६१ संवत् की नहीं हो सकती है अतएव कबीर की काव्य भाषा के भाषा वैज्ञानिक अध्ययन के लिए यह प्रति विशेष महत्वपूर्ण नहीं सिद्ध होती। डा० पारसनाथ तिवारी के अनुसार पुरोहित हरिनारायण के संग्रह में सुरक्षित प्रति जो अब अत्यन्त जीर्ण हो गयी है संवत् १७१५ (१६५८ ई०) में लिखी गई है। कबीर की जितनी प्रतियाँ मिली हैं उनमें तिथि काल की दृष्टि से यह प्रति सर्वाधिक प्राचीन हैं।

---

१. **डा० श्यामसुन्दर दास—कबीर ग्रन्थावली—ना० प्र० स०, भूमिका पृ० १ "कबीरदास जी के ग्रन्थों की इन दो प्रतियों में से एक तो संवत् १५६१ की लिखी है और दूसरी संवत् १८८१ की"**

२. **डा० पारसनाथ—कबीरग्रन्थावली—हिन्दी परिषद, प्रयाग विश्वविद्यालय १९६१ ई०, भूमिका पृ० १२।**

देवनागरी लिपि एक आक्षरिक लिपि (Syllabic Script) है जिसमें आक्षरिक वर्णग्रामों (Syllabic Graphems) के माध्यम से ही स्वर तथा व्यंजन के द्योतक निम्नलिखित वर्णग्राम प्रयुक्त हुए हैं। इन वर्णग्रामों को आधुनिक देवनागरी लिपि में प्रयुक्त वर्णग्रामों के संदर्भ में निम्नलिखित रूप से स्पष्ट किया जा सकता है।

[ ] में सहवर्णग्राम और < > में वर्णग्राम दिए गए हैं खेद है कि मुद्रण की कुछ असुविधाओं के कारण यहाँ पर मूल प्रति के वर्णग्राम ज्यों के त्यों नहीं दिए जा सके।

१.३

	हस्तलिखित प्रति के वर्णग्राम	आधुनिक वर्णग्राम		संदर्भ
(१)	<अ>	<अ>	अंक	सा० ४. २०. १
(२)	<आ> [-ा]	<आ> [-ा]	आंकुस	सा० २९. १६. २
(३)	<उ>	<उ> [ु]	उतंग	प० २. १९. २
			अंकुर	प० ११९. ५
			गुरु	प० २. १
(४)	<ऊ>	<ऊ> [ू]	अकूरु	प० १९८. ४
			ऊँच	प० १९६. ५
			गुरू	प० १४६. ७
(५)	<ओ> [ो]	<ओ> [ो]	ओंकार	र० १. १
			अगोचर	प० ७२. ४

N. B. वर्णग्रामिक गठन तीन सन्दर्भों में प्रयुक्त होता है:—

१. Syllabic writing :—अक्षरात्मक लिपि वह लिपि है जिसमें लिपिग्रामिक गठन के अनुसार एक लिपिग्राम—एक Syllable या अक्षर प्रकट करता है—

यथा : क=क्+अ
ग=ग्+अ

२. Alphabetic writing :—जिसमें एक वर्णग्राम एक ध्वनिग्राम प्रकट करता है—

यथा— k = क्
b = ब्

३. Ideo Grapic :—जिसमें एक वर्णग्राम एक पदग्राम (Morphem) प्रकट करता है। यथा— चीनी भाषा

(६)	<औ>	[-ौ]	<औ>	[ौ]	औगुन	सा० ६. ५. १
					अचंभौ	प० ११०. ३
(७)	<ए>	[े]	<ए>	[े]	एक	२.५
(८)	<अै>	-[ै]	<ऐ>	[ै]	अैसा	प० १३. ७
					अंचवै	प० १२२. १३
(९)	<इ>	[-ि]	<इ>	[ि]	इक	प० ३७. १४
					अंखिया	सा० २. २३. ९
(१०)	<ई>	[-ी]	<ई>	[ी]	ईंधन	प० १०५. १
					अंगुरी	सा० २५. ७. १
(११)			<ऋ>	-ृ	मृतक	प० १४८. ४
					मृत्यु	र० १२. २
	रि		<ऋ>		त्रिन	प० ६२. ५
					त्रिखि	प० १६२. ७
					त्रिखा	प० १४५. ६
					त्रिसना	प० ५०. ३

१.४

(१२)	<क>	[क्]	<क>	[क्+]	अंक	सा० ४. २०. २
					क्यूँ	प० ६८. ६
					क्वांरी	प० १६०. २
					भक्ति	प.१३२२.५ .१८०.१
(१३)	<ष>	[ष्]	<ख>	[ख्+]	षंड	प० १३२.५
					षजूरि	सा० २२. १. १
					ष्वार	सा० २१. २२. १
(१४)	<ग>	[ग्]	<ग>	[ग्+]	अंग	प० ११९. १०
					ग्यारसि	प० १७७. ६
(१५)	<घ>		<घ>		ऊंघ	सा० ७. १२. १
(१६)	<च>	[च्]	<च>	[च्]	अंचलि	प० १६२. ९
					पच्छिम	प० १७७. १०
(१७)	<छ>		<छ>		अछता	सा० १५. ८०. २
(१८)	<ज>	[ज्]	<ज>	[ज्]	अंतरजामी	प० १७. २
					ज्यूँ	प० २२. ५
					ज्वाब	सा० २६. ८. २
(१९)	<झ>		<झ>		अबूझ	१४. ६. १

(२०)	<ट>	<ट> [ट]	अयट्ट	सा० १. १५. १
(२१)	<ठ>	<ठ>	अठ	प० ३१. २
(२२)	<ड>	<ड>	डहडही	सा० १३. २. १
(२३)	<ढ>	<ढ>	ढीकुली	सा० १२. ६. १
(२४)	<ण>	<ण>	अजांण	सा० ११. १०. २
(२५)	<त>	<त> [त]	अंत	प० ९. ४
			तत्व	सा० १६. १४. १
			तत्त	प० १. ८
(२६)	<थ>	<थ>	अकथ	प० ११७.९
(२७)	<द>	<द>	अंदेस	सा० ६. ७. २
			द्यौस	सा० १५. ३८. २
			द्यौं	सा० १. ९. १
(२८)	<ध>	<ध>	अंधरा	प० १५७. ६
(२९)	<न>	<न>	अंषियन	र० ३६. ९
			न्यारा	प० १४. ४
(३०)	<य़>	<य>	अंषियन	र० ३६. ९
(३१)	<र>	<र>	अकूरु	प० ११८. ४
			क्रिसन	प० १०३. ४
(३२)	<ल> [ल]	<ल> [-ल]	अंकुल	प० ९७. ५
			ल्यौं	प० ३५. ९
(३३)	<व़>	<व>	अंचवै	प० १२२. १३
			वहै	प० १३. ४
(३४)	<स> [illegible] [स] [श]	<स> [स]	सोना	सा० १५. २५. २
			अदिष्ट	सा० १४. ६. १
			तष्टा	सा० २१. २५. १
			अष्ट	
			अस्थूल	सा० १७.५.२
			श्री रंग	प० १०. ८
			श्री गोपाल	प० २६. ३
			श्री रांम	प० ४६. ६
(३५)	<ह>	<ह>	हमारा	प० ५. ६
(३६)	(प) (ट)	(प) (ट)	पंजर	सा० २. ३३. १
			प्यारा	प० ६. ४

(३७)	<फ>	<फ>	इफतरा	प० ८७. ३
(३८)	<व>[ॾ+	<व> ॾ	बउरा	प० ९७. १
			बब्बा	प० ११०. ३
			ब्याही	प० ११०. ३
(३९)	<भ>	<भ>	भइया	प० १२५. १
(४०)	<म>[म]	<म>	अंकमाल	सा० ५. ३९. २
(४१)	<ग्य>	<ज्ञ>	ग्यांन	र० चौ० १. २
			ग्याता	प० १३८. ७
(४२)	<त्र>	<त्र>	त्रिकुटी	प० १४४. ६
			त्रिगुण	प० ५३. ७
			पत्र	प० १८. ३
(४३)	<ं>	<ं> (÷)	वांस	प० १४. ४
			अंति	प० १८. २

(४४) वाक्य विराम
या
वाक्य विवृति (॥) (।) ॥ श्रीरामजी ॥

(४५) (॥-॥) (।) किसी भी छंद के अन्त में
(वाक्य के पूर्व या छंद के दो या चार चरणों के बाद)

N. B.—< > में लिखित वर्णग्राम जिस वर्णग्रामिक वातावरण में आएँगे उसमें [ ] लिखित वर्ण नहीं आएंगे। और जिस वर्णग्रामिक वातावरण में [ ] वर्णग्राम आयें उसमें < > नहीं आएँगे। अतएव दोनों परिपूरक वितरण में होने के कारण [ ] में लिखित वर्ण (Allograph) सह वर्णग्राम हो जाते हैं।

१.५ उपर्युक्त ४५ वर्णग्रामों की सूची के अनुशीलन से निष्कर्षतः कहा जा सकता है—१७ वीं शती ई० (१८ वीं शती विक्रमी) में लिखी हस्तलिखित प्रति में अधिकांश वर्णग्राम (Graphem) अपने सहवर्णग्रामों (Allographs) के सहित आधुनिक देवनागरी में प्रयुक्त वर्णग्रामों के समान हैं। केवल कुछ ही वर्णग्रामों में कुछ भिन्नता मिलती है।

(१) '(अै)' आधुनिक (ऐ) वर्तमान ऐ वर्णग्राम से भिन्न है यद्यपि दोनों का सह-वर्ण ग्राम या 'मात्रा' समान है। ' ` ' केवल ए को बोध कराने का सहवर्णग्राम है इसी भ्रम को दूर करने के लिए संभवतः अ के ऊपर ै लगने की प्रथा चली है।

ऋ/

(२) प्राचीन वर्णग्राम ऋ, वर्तमान देवनागरी लिपि में वर्तमान है (भले ही हिन्दी में ऋ ध्वनि न हो) जब कि मध्यकालीन इस प्रति में सर्वत्र यह एक संयुक्त लिपिग्राम 'रि' में परिवर्तित हो गया है। केवल तीन प्रयोगों में मात्रा ृ के रूप में ऋ विद्यमान है।

(३) ख एक प्राचीन लिपिग्राम है संभवतः ख से र व का भ्रम हो जाने के कारण सर्वत्र प्राचीन ख का ष से लिखने की प्रणाली चल पड़ी होगी । क्योंकि मध्य-कालीन भारतीय आर्य भाषाओं में मूर्धन्य 'ष' ध्वनिग्राम के लुप्त हो जाने से 'ष' वर्णग्राम अतिरिक्त (Redundant) हो गया था अतएव उसका प्रयोग 'ख' के स्थान में होने लगा ।

(४) <ङ>, <ञ> प्राचीन लिपिग्राम थे; किन्तु मध्यकाल के पश्चात आधु-निक भा० आ० के लेखन प्रणाली से लुप्त हो चुके प्रतीत होते हैं ।

(५) <ड़> <ढ़> लिपिग्राम इस समय तक संभवतः आविष्कृत नहीं हुए थे भले ही भाषा में ये संस्वन (Allophone) विकसित हो गए थे ।

(६) <य़्> <व़्> के नीचे विन्दु लगाकर लिखने की प्रथा थी यद्यपि <य> <व> प्राचीन लिपिग्राम है संभवतः मिलते जुलते लिपिग्राम 'प व से भ्रम न उत्पन्न हो इसलिए य, व को नीचे विन्दु लगाकर लिखने की प्रथा चली होगी ।

(७) व से सर्वत्र 'ब' का बोध होता था । यद्यपि १९वीं शती उत्तरार्ध से 'ब' लिखने की प्रथा फिर से प्रचलित हो रही थी ।

(८) प्राचीन ज्ञ और त्र दोनों संयुक्त लिपिग्राम थे—मध्यकाल में संभवतः क्रमशः ग्य और त्र के रूप में सुरक्षित रहे । मध्यकालीन क्ष इस प्रति में संयुक्त लिपिग्राम के रूप में 'क्ष' नहीं मिलता है ।

(९) श् केवल स् के सहलिपि ग्राम के रूप में अवशेष था जो केवल र् के साथ ही लेखन पद्धति में प्रचलित था । इसी प्रकार 'ष्' भी 'स्' का सहलिपिग्राम था जो केवल ट, ठ, ड, ढ, ण के पूर्व लिखा जाता था ।

(१०) अनुस्वार ं और अनुनासिकता ं दोनों के लिए केवल ं लिपिग्राम प्रचलित था । अर्थ की भिन्नता से ही यह भेद प्रकट होता था ।

(११) वाक्यांश के अंत में या छंद पूर्ति के पश्चात् केवल वाह्य विवृति या वाह्य विराम (Terminal Juncture) लिखने की प्रथा थी । अन्त विवृत्ति (Internal Juncture) सूचक अन्य विराम चिन्हों का अभाव था ।

(१२) अनुस्वार सूचक ' ं ' से कहीं कहीं द्वित्व भी प्रकट किया गया है—यथा—

फरंकि—फरक्कि
पंगी—पग्गी प० १. ७
पटंतरै – पट्टतरै सा० १. १

ध्वनिग्रामिक अनुशीलन

२.० वर्णग्रामिक विश्लेषण, तथा बलाघात-सुराघात, मात्रा, तुक, ध्वनि-पद-वाक्य-गठन के आधार पर कबीर की कविता में ४१ ध्वनिग्रामों की स्थापना की जा सकती है। इनमें ३९ खंडीय (Segmental phonemes) तथा २ खंडतर ध्वनिग्राम (Supra Segmental Phonemes) हैं। खंडीय ध्वनिग्रामों के अन्तर्गत १० स्वर तथा २९ व्यंजन ध्वनिग्राम[1] हैं क्योंकि ये ध्वनियाँ स्वल्पान्तर युग्म (Minimal pair) में आकर अर्थभेदक होती हैं अर्थात् समान ध्वन्यात्मक परिवेश (Identical phonetic environment) में घटित होकर भी व्यतिरेकात्मक (Contrastive) रहती हैं, इसीलिए इन्हें ध्वनिग्रामों की संज्ञा दी जा सकती है।

२.१ मूल स्वर   अ   आ   इ   [इ़]   ई   उ   [उ़]   ऊ
ए   (ए)   ओ   [अे:]

संयुक्त स्वर   एं   [अए–अइ़]   [ऐं]
औ   अओ–अउ

[ ] के अन्तर्गत सहध्वनि ग्राम (Allophone) अंकित किए गए हैं।

---

१. **ध्वनिग्राम** (Phoneme) 'A minimum unit of distinctive sound feature' Bloomfield. 'Language' 5·4

अर्थात

भाषा की लघुतम अर्थ भेदक इकाई को ध्वनिग्राम की संज्ञा दी जाती है।

सहध्वनिग्राम (Allophone) "Any sound or subclass of sounds which is in complementary distribution with another so that the two together constitute a single phoneme is called an allophone of that phoneme"

—H. A. Gleeson 'An Introduction to Descriptive Linguistics'—16.10

अध्ययन सामग्री केवल लिखित रूप में प्राप्त है अतएव उपर्युक्त ध्वनिग्रामों के संध्वनियों (Allophones) की ध्वन्यात्मक प्रकृति (Phonetic nature) उच्चारण स्थान, प्रयत्न, श्रोत्रीय प्रभाव (Acoustic effect) के संबंध में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता है। ध्वनिग्रामिक वितरण (Phonemic distribution) के फलस्वरूप अनुमान किया जा सकता है कि उपर्युक्त स्वर अल्पाधिक रूप से आधुनिक मानक हिन्दी (Standard Hindi) के समान हैं। अतएव आधुनिक हिन्दी के संदर्भ में इन स्वरों को मानचित्र में निम्नलिखित रूप से दिखाया जा सकता है।
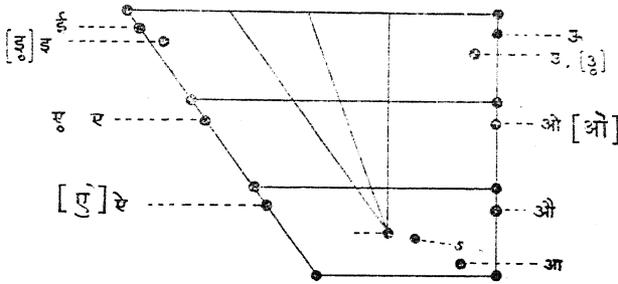
समान ध्वन्यात्मक परिवेश में घटित होने तथा स्वल्पान्तर युग्म म अर्थभेदकता के गुण से समन्वित होने के कारण उपर्युक्त स्वरों की ध्वनिग्रामिक (Phonemic) स्थिति आधुनिक मानक हिन्दी में सहज सिद्ध हो जाती है। अन्य आ० भा० आ० भाषाओं में भी इनकी यही स्थिति है। अतएव कबीर ग्रन्थावली की भाषा में स्वल्पान्तर युग्मों (Minimal pair) के दृष्टान्त देकर इनकी ध्वनिग्रामिक स्थापना की विशेष आवश्यकता प्रतीत नहीं होती है।

क. ग्र. में अनुस्वार और विवृत्ति, गौण ध्वनिग्राम (Secondary phoneme) के रूप में पाए जाते हैं। इनकी स्थापना स्वल्पान्तर युग्मों के आधार पर सिद्ध होती है।

———

व्यंजन ध्वनिग्राम

२.२ कबीर ग्रंथावली की एक चौंतीस रमैनी में संस्कृत के ५२ [1] अक्खरों (अक्षरों) की परंपरा की ओर संकेत किया गया है। प्रस्तुत रमैनी में 'ओं (ओंकार) के अतिरिक्त किसी स्वर से कोई रमैनी नहीं आरम्भ की गई; किन्तु एक-एक व्यंजन से आरम्भ करके ३४ रमैनी होती हैं। इस रमैनी के प्रत्येक प्रथम चरण में आने वाली व्यंजन ध्वनियों का क्रम तथा विवरण निम्नलिखित है।

						[स]	
क्	च्	ट्	त.	प्	[ज]	[य]	[ष]
ख्	छ्	ठ्	थ्	फ्	र्	स्	
ग्	ज्	ड्	द्	ब	ल्	ह्	
घ्	झ्	ढ्	ध्	भ्	व्		
[न्]	[न्]	ण्	न्	म्			

प्रस्तुत व्यंजन तालिका के सन्दर्भ में कबीर ग्रन्थावली में प्रयुक्त स्वल्पान्तर युग्मों में व्यतिरेकात्मक रूप बनाए रखने वाले व्यंजन ध्वनिग्रामों का विश्लेषण करने से यह ज्ञात होता है। (१) कि उपर्युक्त तालिका में अधिकांश वही व्यंजन ध्वनिग्राम हैं जो कबीर-काल के पूर्व संस्कृत-पाली-प्राकृत-अप० में वर्तमान थे और जो आज आधुनिक हिन्दी तथा उसकी बोलियां में पाए जाते हैं। [ ] में चिन्हित ध्वनियों की स्थिति विचारणीय है। प्रस्तुत रमैनी में 'घ' और 'झ' के पश्चात् क्रम से 'न' लिपिग्राम से ही पंक्तियाँ आरम्भ की गई हैं, जिससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि (क) वर्णक्रम में घ के पश्चात् 'ङ०' और 'झ' के पश्चात् आने वाले 'ञ' ध्वनि की ध्वनिग्रामिक स्थिति नहीं रह गई थी अतएव उन्हें 'ङ०, 'ञ' प्राचीन लिपिग्रामों से व्यक्त करना उपयुक्त नहीं समझा गया (ख) फिर भी ये ध्वनियाँ संभवतः संस्वन के रूप में उच्चरित होती थीं, क्योंकि यदि उच्चरित न होती तो घ और झ के बाद 'न' से पंक्ति आरम्भ करने की आवश्यकता न पड़ती। अतएव यह सिद्ध हो जाता है कि 'ङ०' 'ञ' ध्वनिग्राम तो नहीं थे, किन्तु 'न' के संस्वन के रूप में प्रयुक्त होते थे और (ग) ये केवल सवर्गीय ध्वनियाँ थीं अर्थात् कवर्ग के पूर्व ध्वनिग्राम 'न' ङ० संस्वन के रूप में चवर्ग के पूर्व 'न' ध्वनिग्राम [ञ] संस्वन के रूप में सुनाई पड़ता था। (घ) यह भी सिद्ध हो जाता है कि ये संस्वन केवल माध्यमिक स्थिति में प्रयुक्त होते थे—आदिम और अंतिम स्थिति में

---

१. बावन अक्खिर लोक त्रै—सब कछु इनहीं मांहि"—चौ० र० १

इनकी उपस्थिति नहीं मिलती है। कबीर ग्रन्थावली में प्राप्त सामग्री के आधार पर भी उपर्युक्त निष्कर्ष की सिद्धि हो जाती है। यथा:—

(क० ग्रं०)	कंकर	कङ०कर
	कंगन	कङ०गन
	कंचन	कञ्चन
(क० ग्र०)	कंखर	कङ्खर
	गंगा	गङ्गा
(क० ग्र०)	चंचु	चञ्चु

(२) इसी प्रकार ढ के पश्चात् ण लिपिग्राम से पंक्ति आरम्भ की गयी है जिससे यह संकेत मिल जाता है कि कबीर ग्रन्थावली में ण को एक ध्वनिग्राम के रूप में माना गया है। जो आदिम-मध्यम-अंतिम तीनों स्थिति में प्रयुक्त होता था। कहीं-कहीं 'न' और 'ण' मुक्त परिवर्तन (Free Variation) की स्थिति में हैं।

(३) नागरी वर्णमाला में परम्परा से प्रयुक्त वर्णक्रम में पवर्ग के पश्चात् अर्धस्वर (अंतस्थ) 'य' आता है। अतएव प्रस्तुत रमैनी में 'म' के पश्चात् रमैनी 'य' से आरम्भ होनी चाहिए थी, किन्तु रमैनी में 'य' के स्थान में 'ज' लिपिग्राम प्रयुक्त है। इससे यह संकेत मिल जाता है, कि कबीर काल में 'य' के स्थान में 'ज' होने लगा था। कबीर ग्रन्थावली में प्रस्तुत सामग्री के विश्लेषण से ध्वनिग्राम के रूप में 'य' की स्थापना भलीभाँति हो जाती है। हाँ यह अवश्य है कि आदिम स्थिति में उसका प्रयोग बहुत ही सीमित है।

(४) उपर्युक्त वर्णक्रम (लिपिग्राम क्रम) में परम्परा के अनुसार 'व' के पश्चात्–श लिपिग्राम आना चाहिए, किन्तु रमैनी में 'श' से कोई पंक्ति नहीं आरम्भ की गई, अतएव यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है, कि कबीर 'श' की स्मिति न तो ध्वनि-ग्रामिक और न सहध्वनि ग्रामिक मानते हैं। यही कारण है, कि इसके द्योतन के लिए परम्परा से प्रचलित 'श' लिपिग्राम भी नहीं दिया गया—कबीर ग्रन्थावली की भाषा सामग्री के विश्लेषण से भी इस तथ्य की पुष्टि हो जाती है कि 'श' ध्वनिग्राम के रूप में नहीं मिलता है। विरल संस्वन (Rare allophone) के रूप में श्री में (श् + र्) यह वर्तनी में अवश्य वर्तमान है—भले ही उच्चारण स्री के समान रहा हो।

(५) प्राचीन नागरी लिपिग्राम क्रम (वर्ण क्रम) के अनुसार 'श्' के पश्चात् क्रमशः 'ष' लिपिग्राम आना चाहिए। वैदिक तथा संस्कृत भाषा में इस लिपिग्राम से मूर्धन्य 'ष' का बोध कराया जाता था, किन्तु पाली-प्राकृत–अप० में ही इसकी ध्वनिग्रामिक स्थिति लुप्त हो चुकी थी फिर भी कबीर ने अपनी रमैनी में व के पश्चात् इस लिपि-ग्राम से रमैनी की एक पंक्ति आरम्भ की है। अतएव इसे हम 'स' लिपिग्राम का सहलिपि-ग्राम मान कर 'स' के एक संस्वन का बोधक स्वीकार करेंगे। कबीर ग्रन्थावली में अधि-

कांशत: मूर्धन्य ध्वनियों के पूर्व सर्वत्र। (ष) सह-लिपिग्राम का प्रयोग हुआ है। यथा—अदिष्ट, तष्टा, अष्ट आदि। इस ध्वन्यात्मक परिवेश (ष) से 'ख' ध्वनिग्राम को नहीं बल्कि स ध्वनिग्राम के एक संस्वन का ही बोध कराया गया है। रमैनी में व के पश्चात् ष से कबीर का यही मन्तव्य रहा होगा। अतएव इस 'ष' को प्रस्तुत सन्दर्भ में ख ध्वनिग्राम का बोधक नहीं माना जा सकता है।[1]

(६) रमैनी में ह के पश्चात् (ष) लिपिचिह्न पुन: दिया गया है। परम्परा से प्रचलित नागरी लिपिग्राम क्रम (वर्णक्रम) में ह के पश्चात् संयुक्त लिपिग्राम क्ष आता है। मध्यकाल में प्राचीन क्ष क्ख, ख में परिवर्तित हो गया था अतएव कबीर ने इसके स्थान में 'ख' ध्वनिग्राम दिया है जिसे आधुनिक नागरी की लिपिग्राम माला के अनुसार 'ख'[2] से व्यक्त करना चाहिए। 'ष' लिपिग्राम से नहीं।

(७) कबीर ग्रन्थावली में त्र, ग्य (ज्ञ) संयुक्त व्यंजनों को त्र और ग्य से युक्त लिपिग्राम से व्यक्त किया गया है; किन्तु प्रस्तुत रमैनी में नहीं दिया गया। इस प्रकार उपर्युक्त रमैनी में लिखित लिपिग्रामों के आधार पर भाषा वैज्ञानिक विवेचन से यह संकेत मिल जाता है कि कबीर ग्रन्थावली में कबीर काल तक भाषा के ध्वनिग्रामात्मक गठन में जो परिवर्तन आ गया था उसे किसी न किसी प्रकार स्वीकार किया गया है। अर्थात् वे पुराने ध्वनिग्राम जो अपनी ध्वनिग्रामिक स्थिति खो बैठे थे और केवल किसी अन्य ध्वनिग्राम के संस्वन के रूप में वर्तमान थे इन्हें केवल संस्वन के रूप में ही व्यक्त किया गया था फिर भी उस समय तक की हिन्दी में जो नयी ध्वनियाँ या नए संस्वन विकसित हुए थे उन्हें द्योतित नहीं किया गया है। (१) कबीर काल तक ड का एक नया संस्वन 'ड़' और 'ढ' का एक नया संस्वन 'ढ़' विकसित हो गया था। किन्तु प्रस्तुत रमैनी में इस तथ्य की ओर संकेत नहीं किया गया है। (२) न, म, ल के महाप्राण रूप क्रमश: न्ह, म्ह, ल्ह—नए ध्वनिग्रामों के रूप में विकसित हो गए थे—

यथा:—   कान – प० १६५-४, १. १२. १

१. कबीर ग्रन्थावली के संपादक डा० पारसनाथ तिवारी ने इस प्राचीन 'ष' सहलिपिग्राम को भूल से 'ख' ध्वनिग्राम का बोधक समझ कर आधुनिक 'ख' लिपिग्राम से व्यक्त किया है। किन्तु प्रस्तुत सन्दर्भ में इसे 'ख' ध्वनिग्राम का बोधक नहीं अपितु स के एक संस्वन का बोधक मानना चाहिए—अतएव यहां 'ष' लिपि चिन्ह ही लिखना चाहिए। ख लिपिचिन्ह से नहीं—भले ही अन्यत्र सर्वत्र ष लिपिचिह्न आधुनिक ख का स्थानापन्न हो किन्तु यहाँ पर ऐसा नहीं है। यहाँ का ष[स] है, ख नहीं।

२. कबीर ग्रन्थावली के संपादक डा० तिवारी ने इसे 'ष' लिपिचिन्ह से व्यक्त किया है जो वैज्ञानिक नहीं प्रतीत होता है।

कान्ह – प० १३६, १३१-१०

मसि पड़सी कालि — कालि – सा० १६. ७२. २

काल्हि – सा० १५. २२. २, २. १२. २

कुमार

कुम्हार – सा० १२. १. २, १५. ६४. १

स्वल्पान्तर युग्म में व्यतिरेकात्मक (अर्थभेदक) रूप बनाए रखने के कारण 'न्ह' तो निश्चित रूप से ध्वनिग्राम के रूप में ही माना जाएगा——ल्ह, म्ह की ध्वनिग्रामिक स्थिति बहुत स्पष्ट नहीं है। इस प्रकार कबीर ग्रन्थावली में पाए जाने वाले २९ व्यंजनों को आधुनिक मानक हिन्दी के सन्दर्भ में निम्नलिखित तालिका में व्यक्त किया जा सकता है—

	द्वयोष्ठ्य	दन्त्य	वर्त्स्य	मूर्धन्य	तालव्य	कंठ्य	काकल्य
स्पर्श	प् ब् फ् भ्	त् द् थ् ध्		ट् ड् ठ् ढ्		क् ग् ख् घ्	
स्पर्श संघर्षी					च् ज् छ् झ्		
नासिक्य	म् (म्ह)		न्, न्ह	ण्	[ञ]	[ङ]	
पार्श्विक			ल् (ल्ह्)				
लुंठित			र्				
उत्क्षिप्त				(ड़्) (ढ़्)			
संघर्षी			स्				ह्
अर्द्धस्वर	व्				य्		

२.३ खंडेतरध्वनिग्राम

ये ध्वनिग्राम मूलखंडीयध्वनिग्रामों के ऊपर एक अतिरिक्त परत : की तरह प्रयुक्त होते हैं।

(१) अनुस्वार और अनुनासिकता

बास	सा० ९. २३. २, १५. ६७. १ "' १८. २. १ २०. ८. १ = सुगंधि : :
बांस–	प० १४. ४, सा० २२. ८. २, २२. १३. १=बांस
अति-	प० १५. ११, ५१. ८ : =बहुत––विशेष
अंति	प० १८. २, सा० १५. ४. २ : =अंतिम-
पड़ा-	सा० १. २०. २ : =पड़ना का भूतकालिक रूप :
पंडा	प० १६३. ४ : =पुजारी :
खडा-	८. १३ . १ : खड़ा होना का भूतकालिक रूप
खंडा-	प० १४३. ५ : खंड : भाग+आ :
पख-	सा० १७. २. २
पंख-	प० १. ३

(२) आंतरिक विवृत्ति

तिन का ॥ सा० २. ५०. २ : =घास :
तिन+का ॥ प० ८०. ५ : =उनका सर्वनाम :
जन महि ॥ सा० १५. ६. १ (जनम को)
जन+महिं ॥ (जनमें)

कबीर-ग्रन्थावली में अनुस्वार तथा विवृत्ति जहाँ एक ही ध्वन्यात्मक परिवेश (Phonetic environment) में आने पर व्यतिरेकात्मक होकर अर्थ-भेदक होते हैं वहीं उन्हें एक ध्वनिग्राम की संज्ञा दी जाएगी अन्यथा नहीं। यही कारण है कि कबीर ग्रन्थावली में इन्हें गौण ध्वनिग्राम कहा जा सकता है, क्योंकि य कभी ध्वनिग्राम होते हैं कभी नहीं।

अनुस्वार के निम्नलिखित ६ संस्वन मिलते हैं––

(ङ०) ङ० मिश्रित अनुनासिकता––जिसे कवर्गीय अनुनासिकता कहा जा सकता है, यथा:––

कङ्गन
पङ्कज –– प० ३०. ३
पङ्ख –– प० १. ३

: : 'ञ' मिश्रित अनुनासिकता यह चवर्गी अनुनासिकता है यथा :––

कञ्चन
चञ्चल

पञ्चे १५. ६१. १

पञ्जर २. ३३. १

(ण्) ण् मिश्रित अनुनासिकता—यह मूर्धन्य अनुनासिकता है

यथा:— डण्डा प० ६२. ६

डण्ड प० १४३. ४

डण्डूल सा० २५. २४. १

पण्डित- प० ८५. ८

पण्डा- प० १६३. ४

(न) न् मिश्रित अनुनासिकता— यह दन्त्य अनुनासिकता है

यथा:— था पन्थी २. ३१. १

(म्) म् मिश्रित अनुनासिकता— यह पवर्गीय अनुनासिकता है —

यथा:— कुम्भ प० ३४. ८

कुम्भक प० १५. ७

(ॅ) यह शुद्ध अनुनासिकता है जो उपर्युक्त ध्वन्यात्मक परिवेश के अतिरिक्त घटित होती है। यथा:— बांस- प० १४. ४

संक्रामक अनुनासिकता—परवर्ती न् म् के प्रभाव से उनके पूर्व की ध्वनि अनुनासिक हो जाता है ।

यथा— नांम प० २०. ६, २०. ८

रांम ५. १० ५.१२

बांन १२१. ४, १३२. २

२.४ स्वरध्वनिग्राम-वितरण

उपर्युक्त खंडीय स्वरध्वनिग्राम शब्द की आदिम, माध्यमिक और अंतिम तीनों स्थितियों में मिलते हैं। संध्वनियों : (allophones) सहित इनकी उपस्थिति के उदाहरण निम्नलिखित हैं:—

स्वर ध्वनिग्राम	संध्वनि	आदिम-संदर्भ	माध्यमिक-संदर्भ	अन्तिमस्थिति	संदर्भ
अ	अ	अकास प० १०२. ५	अगम प० १. १०	अघट्ट	सा० १. १५. १
		सा० १३. ३. १	सा० ९. ५. १	ड्रिम्भ	प० ८६. ७
	अं, अँ	अंक सा० ४. २०. २	अभिअंतर प० १३०. ९	कहं	प० ३. ७
		अँखियन प० २. २६. ९			
आ	आ	आखर प० १६. ४	माल सा० ४. ३९. २	अंगना	प० १५. ६
		आगम प १०१. ३	अगार प० २. ५३. १	अंगा	प० ७९. ५

	आँ	आंवरा सा० १. ६. १		अंखियाँ सा० २. ३२. १
		सा० १८. ६. १		
इ	इ	इक प० ३७. ४	अंखियन सा० २.३६.९	अघाइ सा० १५.१४.२
	इं	इंद्र प० १४. ९. ६	आंखिन प० १३७. २	अगहिं प० १६०. ७
			किंवा प० १०. ९	
	इ ०			जोकोइ सा० ४. ४०. १
				सब कोइ ४. ४२. १
				सोइ २८. ७. १
ई	ई	ईमान प० १७२. ३	अमीता प० ६४. ४	अढ़ाई प० ११. ४
	ईं	ईंधन प० १०५. १		कहीं सा० १५. ८७. १
उ	उ	अनइय प० ११७, २	कउआ प० २८. ४	अकूस प० १९८. ४
		अकुर प० १९. ५		
	उं	उजियारा १५. ६२. १		किएउं प० ११. ३
				कबहुं प० १७. ६
	उ	× × × ×	× × ×	सुखदेउ सा० ४. ४०. २
				पांचउ सा० ५. १. २
	ऊ	ऊगा सा० ९. ५. १	अकूस प० १९८. ४	अवधू प० ५६. १
	ऊं	ऊंहा सा० २९. १९. २	आऊंगा प० १९३. १	अजहूं प० २३. ७
			कनफूंका प० १६५. ५	कबहूं प० ३६. ३
ए	ए	एकन प० १६४. ६	अहेरी र० १२. १	आए प० ५. २
	एं		केंचुली सा० २४.१६.२	कहें प० २९. ४
			मेंडुक प० ८४. ६	सुनें प० २९. ५
	ए		बेवहारा र० १४. १४	
			कछु एक चौ० र० १।२	
			कोइ एक सा० २८.७.२	
			तेइ र० ३. १	
ऐ	ऐ	ऐसा प० १३. ७	आवैगी प० १२. १	अंचवै प० १२२. १३
	ऐ		क० र० ११	(सुखकै विरखियउ जगत- उपाया २. ११)
	ऐं	ऐंड़ प० ७३. २	करैंगे सा० १५. ५६. १	आदरैं सा० ११.१५. २
				सोनैं प० १३१. २
			बैंन सा० २८. ७. १	
ओ	ओ	ओढ़न प० ५३. ५	अगोचर प० ७२. ४	आओ प० १५. ९

औं   ओंकार चौ० र० १।५ कोंपल सा० १९. १७. १ का प० ७२. ११
सा० १४. ४१. २

ओ̆   कोहरा प० ७६. ४
सोड़ सा० २८. ७. १
जोलहा र० १८
सोड़ र० २. ६
जोलहै प० ५३. ६
जो कोड़ सा० ४. ४०. १
सब कोड़ ४. ४२. ४

औ   औ   औघट चौ. र २.८   कसौटी सा. १९.४.१   अचमी प. ११०.३
औतार प. १५४.४

औं   औंधा प. ११२.७   लौंन सा. १.२४.१   कहौं प. ९०.७
र. १७.१०

क   +   +   +   +   + +
मृतक प. १४८.४
मृत्यु र. २.१२.२

उपर्युक्त उद्धरणों के विवेचन से निष्कर्षतः कह सकते हैं :—

(१) अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ—में से प्रत्येक स्वर के कम से कम २ सहध्वनिग्राम अवश्य मिलते हैं। एक तो निरनुनासिक और दूसरा सानुनासिक रूप। दोनों एक दूसरे के परिपूरक रूप में आए हैं, क्योंकि दोनों कहीं भी एक ही ध्वन्यात्मक परिवेश में नहीं आते। केवल कुछ ही स्थल हैं जहाँ दोनों एक ही ध्वन्यात्मक परिवेश में आकर स्वल्पान्तर युग्म का निर्माण करते हैं और अर्थभेदकता का लक्षण सुरक्षित रखते हैं ऐसे स्थलों में अनुस्वार एक खंडेतर ध्वनिग्राम के रूप में माना जाएगा। यथा—बास - बांस, अति - अंत आदि।

(२) इ उ ए ओ में से प्रत्येक का एक तीसरा सहध्वनिग्राम इ़ उ़ ए ओ̆ भी मिलता है जिसकी स्थापना लिपिग्रामिक गठन से तो संभव नहीं होती किन्तु दोहा (साखियों) और चौपाई (रमैनियों) में छन्द की मात्रा गणना तथा तुक के सहारे इनकी सहध्वनिग्रामिक स्थापना की जा सकती है। ये स्वर न तो आक्षरिक थे और न इनके सानुनासिक रूप ही मिलते हैं।

(इ़) (उ़) किसी लिपिग्राम या सहलिपिग्राम से चिन्हित नहीं किए गए। फिर भी अनुमान लगाया जा सकता है, कि ह्रस्व स्वर के पश्चात् आने वाले शब्दान्त या अक्षरान्त के इ और उ ह्रस्व इ, उ से भी ह्रस्वतर उच्चारण रहे होंगे।

यथा— स्वारथ को सब कोइ सगा—जग सगलाही जांन । ४.४२.१

कबीर बिचारा क्या करे—सुख देइ बोले साखि ४.४०.२

आधुनिक अवधी की भाँति इनका उच्चारण फुसफुसाहट स्वर के निकट रहा होगा। (ए) (ओ) को व्यक्त करने के लिए कोई लिपिग्राम या सहलिपिग्राम नहीं मिलता है। प्रकृतित: ये दोनों स्वर दीर्घस्वर हैं छंद शास्त्र के अनुसार इनकी दो मात्राएँ निर्धारित हैं; किन्तु कबीर ग्रन्थावली में यत्र-तत्र शब्द के मध्य में इन्हें ह्रस्व मानने से ही छंदपूर्ति संभव होती है। अतएव यह अनुमान लगाया जा सकता है कि शब्द के आदि और मध्य में ह्रस्व ए और ओ उच्चरित होते थे।

यथा :—(ए) तेरा जन एक आध है कोई — (प. ३२)

(ई) स्वरथ को सब कोइ. सगा — १३ मात्राएँ (४-४२-१)

(ओ) कबीर जो कोइ. सुंदरी — १३ मात्राएँ

(औ) गुन गावै लौ लीन होइ. — १३ मात्राएँ

(ए) कछु एक मन में और — ११ मात्राएँ

(औ) ओहु मारग पावै नहीं — १३ मात्राएँ

(ए.) भूलि परै एहि माहिं — ११ मात्राएँ

(३) ऋ मूल स्वर के रूप में ऋ का उच्चारण कबीर से पूर्व ही प्राकृत और अपभ्रंश काल में ही लुप्त हो चुका था। कबीर ग्रन्थावली में तो ऋ लिपिग्राम भी नहीं मिलता—केवल इसका सहलिपिग्राम ही मिलता है—यथा—मृत्य, मृतक—इस प्रकार कुछ विरल शब्दों में मात्रा के रूप में ही इस स्वर की कल्पना की जा सकती है। अन्यथा इस स्वर का उच्चारण रि या इर् में परिवर्तित हो गया था।

(४) ऐ (अै) औ—आधुनिक हिन्दी में 'ऐ', औ दोनों संयुक्त स्वर के रूप में उच्चरित होते है। कबीर ग्रन्थावली में दोनों स्वरों के बोधक लिपि-ग्राम (अै औ : या सहलिपिग्राम) ै, ौ मिलते हैं। अतएव अनुमान यही है, कि कबीर में ये दोनों संयुक्त स्वर के रूप में प्रयुक्त हैं; किन्तु निश्चय के साथ यह नहीं कहा जा सकता, कि इनका उच्चारण आधुनिक मानक हिन्दी की भाँति (अए। अओ) था अथवा आधुनिक ब्रज और खड़ी बोली की भाँति मूलस्वर अर्धविवृत दीर्घस्वर (यथा—पैसा ऐंपन् चले) ओर , बोर, चलिबो आदि के निकट था अथवा आधुनिक अवधी की भाँति इनका उच्चारण अइ अउ की ओर अधिक झुका था—क्योंकि कबीर ग्रन्थावली में अइ, अउ, के स्वर ६: मिलते हैं। अतएव अइ—अउ उच्चारण की संभावना भी हो सकती है।

व्यंजन वितरण

२.५ कबीर ग्रन्थावली में निम्नलिखित समस्त व्यंजन ध्वनिग्राम शब्द या अक्षर की आदिम और माध्यमिक स्थिति में निश्चयात्मक रूप से वर्तमान हैं। अंतिम स्थिति में इन व्यंजनों की उपस्थिति बहुत निश्चित नहीं है क्योंकि कबीर ग्रन्थावली की भाषा छंदोबद्ध भाषा है जिसमें छंद पूर्ति के लिए ह्रस्व ध्वनि को दीर्घ और दीर्घ को ह्रस्व बना देना साधारण बात है। कबीर ग्रन्थावली में शब्दों को व्यंजनान्त मान लेने पर छंद-पूर्ति या मात्रापूर्ति संभव नहीं। अतएव छंद को आधार मान कर हमें यही कहना पड़ेगा कि कबीर ग्रन्थावली में शब्द के अन्त में व्यंजन की उपस्थिति नहीं मानी जा सकती है। शब्दों को स्वरान्त ही मानना पड़ेगा। छंदबद्ध भाषा में अकारान्त शब्द जनसामान्य की भाषा में भी अकारान्त (स्वरान्त) थे अथवा व्यंजनात्मक—यह स्थिति स्पष्ट नहीं है। अतएव अकारान्त शब्दों के उपांत में आने वाले व्यंजनों का भी विवरण प्रस्तुत विवेचना में देना उपयुक्त समझा गया है।

व्यंजनध्वनिग्राम संस्वन	आदिम स्थिति		माध्यमिक स्थिति-		उपान्त या अंतिमस्थिति
क्-क्	कंवल-	प. १८ ३	अंकुल-	प. ९७.५	अंक - ४.२०.२
ख्-ख्	खंखर	सा. १५.४५.२	अंखियन-	सा. २.३६.९	अलख - प १४५ ४
	खडा-	८ १३ १			
ग्-ग्	गंग	प. २४.३	अंगना	प. १५.६	जग- प २ ५
घ्-घ्	घड़ा-	प. ८.२	अवट्ट	१.१५.१	अव- प. १४५.६
च्-च्	चरखा	प. ११०.७	अंचलि	प. १६२.९	ऊँच- प. १९६.५
छ्-छ्	छपरा-	सा. ४.४७.२	अछता	सा. १५.८०.२	कुछ- सा. ९.९.२
ज्-ज्	जंजाल-	३.१४.१	अंतरजामी	प. १७.२	अकाज-सा. ३.१८.१
झ्-झ्	झगरा-	प. २७.१	अबूझी	सा. ४.१२.२	अबूझ- सा. १४.६.
ट्-ट्	टकसार	सा. ९.४१.२	अघट्ट	मा १ १५ १	ओट्- सा ३:१० २
ठ्-ठ्	ठगिनि-	प १६३.१	अठारह	प. १५५.७	अठ- प. ३१.२
			डड्डा	चो. र. ४.५	
ड-ड	डंड	प ६२ ६	कुंडलि	सा० ७ १: १	अखंड प १६० ६
			डंड	प ६२ ६	
			डंडूल	२५ २४ १	

			उड़ाइ	सा १६ ३७ २	अबिहड़	८ १६ १
ड़			उजाड़ि	सा ४ ३३ १	अजड़	४ ४ २
			कड़िया	सा १६ ३८.२	ऐंड़-	प. ७३.२
			कड़ुवापन	०५.६१.१		
			कपड़ा-	१५.६१.१	आघड़-	२९.६.१
			छड़ी-	३१.५.२	गरुड़-	प १५ ३ ३
			जड़िया-	१५ ५५.१	गाड़-	र. ३.८
			घोड़ा-	प. ४.२	गुड़-	प. ५९.३
ढ	ढंढोरता-	९.३२.२				
	ढढ्ढा-चौ.र.४.७					
ढ	ढंग-	सा. ६.९.१	अढ़ाई-	प. ११.४	पढ़	
	ढीकुली	सा. १२.६.१	ओढ़न-	प. ५३.५		
	ढंढ-	चौ. २.४.२	काढ़ि-	प. २६.२	टेढ़	प. ४४.२
			पढ़ता-	प. १६१.५	गढ़	प. २५.१
			पढ़नसाल-	प. २६.२		
ढ़्			ढूड़िया-	६.४.१		
			गड़न-	प. ६६.२		
			गड़ि-	प. १३०.२		
त्	तेगी-	प. १९	अतर-	चौ. २.५.१	अगत	प. ४९.१
	तपु-	प. ४६.४			भगत	प. १.४
थ्	थापनि	१.११.१	अथिर-	१५.२५.१	अकथ	प. ११७.९
	थरहरें-	प. ७०.२				
द्	दखिन-	सा. २.१३.२	अंदेस-	सा. ६७.२	अहलाद-	३०.२३.१
	दरसन-	प. १५.११				
ध्	धंध-	र. १४.३	अंधरा-	१५७.६	अंध-	प. ८५.१
प्	पसु-	प. ६७.५	अपनी-	प. १५.१०	अकलप-	१२.८.१
	पहार-	प. २६.६	अपना-	प. ६५.२		
फ्	फंक-	चौ. र. ६.३	इफतरा-	प. ८७.३		
	फंद-	प. ९४.६	कनफूंका-	प. १६५.५		
ब् ब्-	बंदा-	प. १६३.८	अंबर-	प. १२५.१	अजब-	प. २.१
भ् भ्	भंवर-	प. ७०.१	अचंभौ-	प. ११०.३	अगरभ-	प. ३६.३
	भगत-	प. १.४	कुंभ-	प. ३४.८		

शेष

ण्	ण्	णगां - चौ. ३.४.९	शाणां - चौ र. ४९ चांणक	गग - प. १३३.४ अजांण - सा.११.१०.२
न्	न्	नई - सा. ८. ३. २ नगरिया - प. ९५. १	अगना - प. १५.६	अकन - प. १६०.३
	ङ.		कंकंस कंकर-प. १३.१.५ कंगन : :प. १७. ४	
	ञ		कंगुरे: : १४.३६.२ कंचन प. ३२.४ कुंजर प. २३.६ कुंजो ८. ८०.४	
	[न्–ण्]			गुन गुग
न्ह	न्ह	न्हवाए- प. १७७.२ न्हाई - १२.७ १ न्हान - ९.३२.१	चोन्हाँ - प. ११५.३	इन्ह - प. २०.४ कान्ह - प १३६.१३१.
म्	म्	मंछी - २.५४.२	अंतरजामी - प. १७.२	अगम - प. १.१०
म्ह	म्ह		बाम्हन - प. १६०.४ कुम्हार - सा. १२.१.२ कुम्हिलानी - प. ७०.३	
य्	य्	यह - प. १३.३ यूं - प. १४१.३ सर्वनाम में केवल १२ बार प्रयुक्त किसी संज्ञा शब्द के आदि में नहीं	अंखियन- सा. २.३६.९ हिदया - ११.२.२	हिदय-प. १४९.९
				शष
र्	र्	रंकु - प. ७८.२ रखवारा - प. १६२.२	अंधियारा-सा. ९.१.२	अंगार - सा.२.५३.१
ल्	ल्	लंका - प. ९६.४	अंचलि - प. १६२.९	माल - सा.४.३९.२
ल्ह	ल्ह		ओल्है - ७.१२.१ चूल्हे - ११०.७ काल्हि	
व्	व्	वह - प. १४७.८ वारपार - र. १४.७	अंचवै - प. १२२.१३ स्वाद - प. २५.४	भाव - प. ४०.२ केसव - प. १९३.३

सर्वनाम में १४ बार
संज्ञा में केवल १ बार)

स्	स्	संकट - प. ९८.२	अंदेशा - १०.५.१	अंदेस - ६.७.२
	(श) श्री			
	(ष्)		अदिष्ट - १०.१६.२	
			अष्ट - प. १०८.३	
ह्	ह्	हंकारा - १९७.३		
	(अघोष)	हंडिया - १५.३०.१	कह्यो - प. २६.४	
ह्	(घोष)		अंगहिं - प. १६०.७	खेह - प. १७४.४
			कहूं - प. २.२	

२.६ **स्वरग्राम क्रम** (स्वर संयोग या स्वरक्रम या स्वर गुच्छ)

जब दो या दो से अधिक स्वर एक ही अनुक्रम में इस प्रकार घटित हों कि उनके मध्य एक अल्प विवृत्ति के अतिरिक्त अन्य ध्वनि न हो तो ऐसे संयोग को स्वर संयोग की संज्ञा दी जाती है। कबीर ग्रन्थावली में अधिक से अधिक ४ स्वर एक साथ प्रयुक्त हुए हैं। ४ स्वरों का संयोग केवल एक बार अन्तिम स्थिति में, ३ स्वरों के स्वरगुच्छ ८ प्रकार के केवल अन्तिम स्थिति में और २ स्वरों के २८ प्रकार के स्वर संयोग (९ प्रकार के आदिम स्थिति में, ८ माध्यमिक स्थिति में और २४ अन्तिम स्थिति में) मिलते हैं। इस प्रकार कबीर ग्रन्थावली में कुल मिला कर ३७ प्रकार के (१+८+२८) संयोग प्रयुक्त हुए हैं। इनका विवरण निम्नलिखित है—

२.६१ ४ स्वरों का स्वरसंयोग अंतिम स्थिति में — उदाहरण - संदर्भ

अंतिम स्थिति में	उदाहरण	संदर्भ
इ अ इ ए	पतिअइए	प. २९.४

२.२६ ३ स्वरों के स्वर संयोग : अन्तिम स्थिति में — उदाहरण - संदर्भ

अन्तिम स्थिति में	उदाहरण	संदर्भ
१- अ ए उ	भएउ	र. १-४
२- इ ए उ	किएउ	प. ११. ३
३- आ इ ए	खाइए	सा. ३.१.२
	जाइए	प. १०.७
४- आ इ ऐ	खाइऐ	प. ३९.३
५- अ इ ए	जइए	प. २९.४
	पइए	प. ७७.१
६- अ इ आ	रमइया	प. ८२.१
७- आ इ या	समाइआ	सा. ७.३.१
८- अ उ आ	कउआ	प. २८.४

२.६३ २ स्वरों के स्वर संयोग

१-	अ उ	अउर प. २६.१ अउरो प. १६२.२	चउका प. १९२.६ चउय प. ३२.६	कउ प. २८.६ जउ प. ५४.३१ तउ प. १३२.८ कहउ प. ४३.६
२-	अऊ	अऊत सा. ४.३८.२		करऊ प. २२.८
३-	आ इ	आइ प. ६०.६ आइया सा. १०.३.१	जाइंगे ४.१६.२	अवाइ १५.१४.२ १५.४१.१
४-	आ ई	आई प. १८.२		अड़ाई प. ११.४ उरझाई प. ७.४
५-	आ उ	आउ प. १३.१ प. ९८.४	भाउ प. ८२.५	कराउ सा. २.१२.२
६-	आ ऊं	आऊं प. ५३.४	घुराऊंणी प. ४.७	
७-	आ ए	आए प. ५.२	चराएहु प. १८८.२	चड़ाए सा. ३१.२०२
८-	आ ओ	आओ प. १५.९		
९-	ए उ	एउ प. १८७.१		
१०-	इ अं		अभिअंतर प. १३०.९	
११-	अ इ <१>		गइआ प. १४०.२	कहइ प. १४०.१
१२-	अ ई <२>		पईसा सा. २१.११.२	ऊनई र. ५३.१ करई चौं. र. २.३
१३-	इ ए <१२>			करिए प. १७.१
१४-	ई ए			किए प. १७३.४ कीए प. १७४.४
१५-	उ इं <१६>			कुइं सा. ३.१.२
१६-	उ अं			गुरुआसा १.२४.२ चरुआ प. १६७.४
१७-	ओ+आ <२०>			चौआ प. ७९.५
१८-	ए+ऊ <१९>			जनेऊ र. ६.४
१९-	ओ+ई <२१>			दोई २.११०.५
२०-	ओ+ऊ <२३>			दोऊ प. ३२.३
२१-	ओ+ए <२४>			दोए सा० ३०.१०.१
२२-	इ+उ <१३>			दोनिउ प. १०.१२
२३-	इ+आ <१३>			पंडिआ प. १३२.३
२४-	ई+आ <१३>			पीईआ प. ५५.१

२५- ई+उ 〈१४〉	पीउ प. ७०.२
२६- ई+ए	पीएं चौ र. ७.६
२७- ऊ+एं 〈१७〉	मूएं प. ६८.६
२८- ओ+ई 〈२२〉	पोई सा. २८.५.१

२.७ (संयुक्त व्यंजन या व्यंजन संयोग या व्यंजन गुच्छ :–)

जब दो या दो से अधिक व्यंजन ध्वनिग्राम एक ही अनुक्रम में इस प्रकार संयुक्त हों कि उनके मध्य में कोई स्वर न हो तो उसे संयुक्त व्यंजन या व्यंजनगुच्छ की संज्ञा दी जाती है। कबीर ग्रन्थावली में कम से कम दो और अधिक से अधिक ३ व्यंजनों का संयोग मिलता है। ३ व्यंजनों का एक ही उदाहरण कबीर ग्रन्थावली में मिलता है। ध्वनिरूपों का क्रम संघर्षी+ओष्ठ्य+लुंठित स्+प् र+यथा निस्प्रेही है। अधिकांश व्यंजन संयोग आदिम और माध्यमिक स्थिति में ही मिलते हैं। शब्दान्त में व्यंजन संयोग की कल्पना नहीं की जा सकती है क्योंकि प्रत्येक संयुक्त व्यंजन के पश्चात् किसी न किसी स्वर का आगमन अनिवार्य है अतएव संयुक्त व्यंजनांत प्रतीत होने वाले शब्द सदैव स्वरान्त ही होते हैं। आधुनिक मानक हिन्दी में और कबीर ग्रन्थावली में भी यही स्थिति मिलती है। व्यंजन गुच्छों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

१—एक रूप या समवर्गीय व्यंजन संयोग

२—भिन्न रूप या भिन्न वर्गीय व्यंजन संयोग

(१) जब एक ही व्यंजन ध्वनि ग्राम दो बार एक ही अनुक्रम में आ जाता है तब ऐसे गुच्छ को व्यंजनदित्व की भी संज्ञा दी जाती है। दित्वव्यंजनों के संबंध में यह कहा जा सकता है कि इनमें एक ही व्यंजन का दो बार उच्चारण नहीं होता बल्कि एक ही व्यंजन की मध्य की स्थिति या अवरोध की स्थिति प्रलम्बित या दीर्घ हो जाती है। प्रथम अर्थात् स्पर्श और अन्तिम (उन्मोचन) में कोई अन्तर नहीं आता है। महाप्राणों का इस प्रकार का दित्व संभव नहीं है। उनमें से प्रथम का उच्चारण अल्पप्राण सम होगा— अतएव ख्ख्, घ्घ्, छ्छ्—उच्चारण में ग्घ ग्घ्, च्छ, सुनाई पड़ेगा। कबीर ग्रन्थावली में निम्नलिखित व्यंजन दित्व मिलते हैं।

२.७१ स्पर्शव्यंजन-दित्व :–

क् क्	कक्का	चौ. र. ६
ख् ख्	खख्खा	" ७
ग् ग्	गग्गा	" ८
घ् घ्	घघ्घा	" ९
ट् ट्	टट्टा	" १६
ठ् ठ्	ठठ्ठा	" १७
ड् ड्	डड्डा	" १८

ढ् ढ्	ढड्ढा	"	१९
त् त्	तत्ता	"	२१
थ् थ्	थथ्था	"	२२
द् द्	दद्दा	"	२३
ध् ध्	धध्धा	"	२४
प् प्	पप्पा	"	२६
फ् फ्	फफ्फा	"	२७
ब् ब्	बब्बा	"	२८
भ् भ्	भभ्भा	"	२९

२.७२ स्पर्श संघर्षी व्यंजनदित्व :—

च् च्	चच्चा	"	११
छ् छ्	छछ्छा	"	१२
ज् ज्	जज्जा	"	१३
झ झ	झझ्झा	"	१४

२.७३ अनुनासिक व्यंजन दित्व :—

ण् ण्	ण्णा	"	२०
न् न्	नन्ना	"	२५
म् म्	मम्मा	"	३०

२.७४ पार्श्विक व्यंजन दित्व :—

ल्+ल्	लल्ला	"	३४

लुंठित व्यंजन दित्व :—

र् र्	रर्रा	"	३३

२.७५ संघर्षी व्यंजन दित्व :—

स् स्	सस्सा	चौ.र.	३८
ह् ह्	हह्हा	"	३९

२.७६ अर्धस्वर दित्व :—

य य

व् व्

२.७७ भिन्न वर्गीय व्यंजन संयोग :—जब भिन्न-भिन्न व्यंजन ध्वनिग्राम एक ही अनुक्रम में संयुक्त होते हैं।

२.७७१ आदिम स्थिति में व्यंजन संयोग :—कबीर ग्रन्थावली में आरम्भिक स्थिति में प्राप्त व्यंजन संयोगों के विवेचन से ज्ञात होता है। संयोग के द्वितीय सदस्य के रूप में अधिकांशतः य्, व्, र् आते हैं।

(व्यंजन+य, व, र) केवल एक ही उदाहरण ऐसा है जिसमें व्यंजन + त और एक अन्य में व्यंजन+ष (ख) आता है।

२.७७१।१ व्यंजन+य्

क् य्	क्यूं	प. ६८.६
ग य्	ग्यांन	प. ४.२
	ग्याता	प. १३८.७
	ग्यारसि	प. १७७.६
	ग्यारह	प. १७७.७
ज् य्	ज्यूं	प. २२.५
	ज्यौं	प. ६८.४
त् य्	त्यागि	सा. २.५१.२
द् य्	द्यौस	सा. १५.३८.२
ध् य्	ध्यान	प. ५६.३
न् य्	न्यारा	प. १४.४
प् य्	प्यारा	प. ६.४
ब् य्	ब्याई	प. ११६.३
म् य्	म्याने	प. ८७.६
स् य्	स्याम	प. १३०-४
	स्यार	प. १२०-४
ल् य्	ल्यौ	प. ३९.९

२.७७१।२ व्यंजन+व :—

क् व्	क्वांरी	प. १६०.२
ख् व्	ख्वार	सा. २१.२२.१
ग् व	ग्वालन	र. ३.४
ज् व्	ज्वाला	९.२९.२
	ज्वाब	२६.८.१
द् व्	द्वादस	प. १३०.९
	द्वापर	प. १४३.५
स् व्	स्वांग	१.२९.२
ह् व्	व्है	प. १३.४
	व्हैला	प. १६६.३

२.७७१।३ व्यंजन+र :—

क् र्	क्रिया	प. १५.२१

	क्रोध	प. ३.४
	क्रिसन	प. १०३.४
	क्रिमि	प. ६२१.३
ग्	ग्रम	प. १७५.७
	ग्रसत	प. ८६.३
घ् र् (ऋ)	घ्रित	प. ६२.३
त् र् (ऋ)	त्रिकुटी	प. १४४.६
न् र् (ऋ)	न्रिप	सा. ४.११.१
प् र	प्रकास	प. १७६.८
(३३ आवृत्ति)		
ब् र्	ब्रत	प. ७७.२
भ् र्	भ्रमजार	र. १९.२
म् र् (ऋ)	म्रिग	प. ९४.७
स् र्	स्री (श्री)	प. १३०.९
ह् र्	ह्रिदय	प. १४९.९

२.७७१/४ व्यंजन+त्

क् त्	भक्त	प. ९२.५
र् ब् (व)	गर्ब	सा. १५.४४.२

२.७८२ माध्यमिक स्थिति में व्यंजन संयोग :—माध्यमिक स्थिति में प्रायः सभी प्रकार के व्यंजन संयोग मिल जाते हैं। यहाँ भी दूसरे सदस्य के रूप में अर्धस्वर य् का ही आधिक्य है। प्रथम सदस्य के रूप में अर्धस्वर य्, व कहीं नहीं मिलते हैं।

२.७८२/१ व्यंजन+य्

क् य्	अटक्यौ	सा. २१.९.२
ख् य्	देख्या	प. १०१.९
च् य्	रच्यौ	प. १०-३
ज् य्	तज्यौ	प. १२.१
	भज्यौ	प. ६३.८
ट् य्	टूट्यौ	सा. २८.५.२
ड़् य्	छाड़्यौ	प. १५.४
	उड़्यौ	प. ७०.३
य्	गढ़्यौ	चौ. र. ४.८
	चढ़्यौ	प. २५.११

थ् य्	मिथ्या	प. ४४.२
ध् य्	बोध्यौ	प. १.४१.६
न् य्	जान्यौ	प. १०७.७
	तोन्यूं	प. १०७.६
	कन्या	१५.७३.१
प् य्	कोप्यौ	प. २६.८
ब् य्	अनब्यावर	सा. १३.३१
र् य	टार्‌यौ	प. १३०.१५
स् य्	डस्‌यौ	प. १६४.७
ह् य्	कह्‌यौ	प. २६.४
	रह्‌यौ	प. २१.१

२.७७२१२ व्यंजन + व्

त् व्	तत्व	सा. १६.१४.१
स् व्	बेस्वा	सा. ३०.२०.२

२.७७२१३ व्यंजन + र्

क् र्	चक्र	प. १२१.५
द् र्	इन्द्र	प. १४९.६
ध् र्	गंध्रप	र. १३.२
ब् र्	गंध्रब	प. १३३.४
	पारब्रह्म	प. १५५.१३
म् र्	अम्रित	प. २०.८
स् र	बिस्राम	र. १५.८

२.७७२१४] अल्पप्राण + महाप्राण

क् ख्	अक्खर	प. २१.४
	अक्खिरां	सा. १.७.२
च् छ्	अच्छर	चौ. र. १.७.२
	कच्छ	र. ३.६
ज् झ्	तुज्झ	सा. २.१५.१
त् थ्	अत्थि	र. २०.६
	गरत्थ	सा. ३१.५.२
द् ध्	कुबुद्धि	प. ९३.२
	मद्धि	सा. २०.८.१

२.७७२।५ संघर्षी+मूर्धन्य

	ष् ट्	अदिष्ट	सा. १०.१६.२
		अष्ट	प. १०८.३
		इष्ट	सा. ३२.७.२
		कष्ट	र. १७.८
		तष्टा	सा. २१. २५. १
		दिष्टि	प. १३३.२
२.७७२।६	संघर्षी+दन्त्य		
	स् त्	अस्त	प. ९०.२
		दस्तगीरी	प. ८७.२
	स् थ्	अवस्था	प. ६८.८
२.७७२।७	संघर्षी+नासिक्य		
	स् न्	विस्नु	प. ९०.८
अन्य व्यंजन संयोग :—			
	प् त्	गुप्त	प. ६९.६
	क् त्	मुक्ति	र. ११.५

२.८ **अक्षर**

अक्षर एक या अनेक ध्वनियों की वह पूर्ण लघुत्तम इकाई है जिसका उच्चारण श्वास के एक झटके या आघात से हो सके। एक अक्षर में मुखरता (Sonority) गह्वर (Vally) से युक्त या रहित। एक शीर्ष (Peak) होना अनिवार्य है। कुछ अपवादों को छोड़ कर व्यावहारिक दृष्टि से किसी शब्द में जितने स्वर होते हैं उतने शीर्ष होते हैं अतएव उतने ही अक्षर होते हैं। कबीर ग्रंथावली में भाषा का प्रत्यक्ष उच्चरित रूप नहीं अपितु लिखित रूप हमारे समक्ष आता है अतएव अक्षर संचरना का पूर्ण वैज्ञानिक विवेचन कुछ कठिन प्रतीत होता है। फिर भी आधुनिक मानक हिन्दी के सन्दर्भ में—स्वर ध्वनि-ग्रामों को शीर्ष मान कर निम्नलिखित रूप से अक्षर का स्वरूप निर्धारित हो सकता है।

: स—स्वर ब—व्यंजन:

२.८१ (१) केवल एक स्वर ध्वनिग्राम) एक अक्षर का निर्माण कर सकता है।

यथा—

—स—	—अ। के। लौ	प. १६०.५
	—अ। गि। नि	प. ९.१
	—आ। कुल्	प. ६६.४
	—आ। भा	र. १७.९
	—इ। हाँ	प. १६२.३
	—ई। मान	प. १७२.३

—उ। चा। रा	प. ५.५
—ऊँ। चा	प. ५८.८
—ऊ।	सा. १५.१८.२
—ए।	प. १२.२
—औ। सा	प. १३.७
—औं।	र. १-२, चौ. र. १.७
—औ।	प. ९२.४, औ। गुन् सा. ६.५.१

उपर्युक्त शब्दावली में इस चिह्न —से चिह्नित केवल एक स्वर से ही एक अक्षर का निर्माण हुआ है ।

२.८२ अपवाद स्वरूप ह्रस्वतर अथवा जपितस्वर इ, उ आक्षरिक नहीं होते हैं ।

यथा—	भड़ु। या	प. १२५.१
	गड़ु। या	प. १४०.२
	पां। चडु	सा. ५.१.२
	जो। कोड़ु	सा. ४.४०.१
	सोड़ु।	सा. २८.७.१
	कोडु।	प.७३.५

२.८३ (२) स व = स्वर+व्यंजन

अंग। ना	प. १५.६
एक।	प. २.५
और।	प. १.३

२.८४ (३) स व व = स्वर+संयुक्त व्यंजन का प्रथम व्यंजन

लग्। गि	सा. २.२०.२
अत्। थि	र. २०.६

२.८५ (४) व स

अं। खि। याँ	२.२३.१
इं। द्र	प. १४९.६
अ। का। रथ	प. ७३.१०
ऊं। चा	प. ५८.८
औ। सा	प. १३.७
ए। कै	प. १०.११

२.८६ (५) व स व

अंक। माल्	सा. ४.३९.२
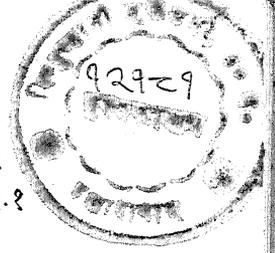
अं। कुर्	प. ११९.५
अं। गार	सा. २.५२.१

२.८७ (६) व व स——संयुक्त व्यंजन स्वर

इं। द्र	प. १४९.६
क्यूं।	प. ६८.६
क्या	प. ८२.४
ग्वा। लन	र. ३.४
क्वाँ। रीं	प. १६०.२
क्रि। पा	प. १९.५
क्रि। मि	प. ६९.३

२.८८ (७) व व स व——संयुक्त व्यंजन स्वर+व्यंजन

कं। द्रप	प. १५५.१६
क्रोध।	प. ३.३
स्वांग।	सा. १.२९.२
स्यार्।	प. १२०.४
घ्रित।	प. ६२.३

इस प्रकार कबीर ग्रन्थावली में कम से कम एक ध्वनि और अधिक से अधिक चार ध्वनियों के अक्षर मिलते हैं।

सन्धि प्रक्रिया (MORPHOPHONEMICS)

२.९ दो भिन्न पदग्रामों के एक ही अनुक्रम में आने पर प्रथम पदग्राम के अंतिम तथा द्वितीय पदग्राम के आरम्भिक ध्वनिग्राम के संयोग को अथवा समस्त यौगिक पदग्राम को जिस परिवर्तित ध्वनिग्रामात्मक रूप (Phonemic form) से अभिव्यक्त किया जाता है उसे आधुनिक भाषा विज्ञानी (Morphophonimics) और प्राचीन भारतीय वैय्याकरण 'संधि' की संज्ञा देते हैं। क. ग्रं. की पदग्रामिक संरचना में ३ स्थितियों में यह संयोग संभव है।

(क) मुक्त पदग्राम+व्युत्पादक प्रत्यय :

(ख) मुक्त पदग्राम+विभक्तिमूलक प्रत्यय :

(ग) मुक्त पदग्राम+मुक्त पदग्राम

४.१ (क) व्युत्पादक पूर्वप्रत्यय (उपसर्ग)+मुक्त पदग्राम

अ+घट+अघट्ट—१.१५.१. (अंतिम व्यंजन का द्वित्व)
छंद पूर्ति से प्रतिबंधित

२.२१

अ+जाँच > अजंच—८.१५.१ (दीर्घ आ का ह्रस्व)
—छंद पूर्ति से प्रतिबंधित

अ+जाप > अजप+आ अजपा (" ")
सा. ९.१०.१
(पदग्राम से प्रतिबंधित)

दु+भाग > दुहाथ+इनि दुहागिनि (भ् ह्)
सा. २.३८.२

दुर्+आचार् > दुराचार+ई > दुराचारी (र्+आ रा)
—ध्वनिग्राम से प्रतिबंधित
सा. १५.७३.२

बि+सुध् > बिसूध+आ > बिसूधा (ह्रस्व स्वर का दीर्घीकरण)
—छंद पूर्ति से प्रतिबंधित
र. १२

सु+बस > सूबस ४.४.१— (ह्रस्व स्वर दीर्घ)
छंद पूर्ति से प्रतिबंधित

ख. व्युत्पादक पर प्रत्यय+मुक्त पदग्राम

		ध्वन्यात्मक रूप से प्रतिबंधित अंतिम स्वर लोप		
२.६२	आप् + आ > आपा—१५.७५-१	"	"	"
	प्रहार्+ई > प्रहारी—र. ७.६	"	"	"
	दाझ्+अन > दाझन—४.७.१	"	"	"
	दाझ+अनि > दाझनि—२१.३२.२	"	"	"
	चतुर+आई > चतुराई—२.२९.२	"	"	"
	अधिक+आई > अधिकाई—र. ७५	"	"	"
	गरीव+ई > गरीबी—१५.७८.१	"	"	"
	गुन+इयाल् > गुनियाल+ए गुनियाले—सा. ११.७.१	"	"	"
	हजार+ई > हजारी—४.३१.१	"	"	"
	प्रकास+ई > प्रकासी—१.१६.१			
	करम+इया > करमिया—२२.२.१			
	संतान+ई > संतानी—२.३४.१			
	हजार+ईक > हजारीक—प. ११०			
	दलाल+ई > दलाली—प. ५१.१			
	दुख+इया > दुखिया—प. १३			
	अरुझ+एरा > अरुझेरा—प. ८९.७			
	घन+एरा > घनेरा—प. ८९.३			
	लोक+आचारु > लोकाचारु—प. ७७.३			
	संगात+ई > संगाती—प. ९९.४			

ध्वन्यात्मक तथा पदग्रामिक रूप से प्रतिबन्धित

आकारान्त, शब्द व्यंजनान्त हो जाते हैं—

२.६३	गंगा+ई >	गंगी—	प. १
	रसना+ऊ >	रसनू—	प. ४१
	गदहा+रा >	गदहरा—	ला. २५.९.१

२.६४ प्रातिपदिकों के साथ इया, आउर, ड़ा, ई, हारा, रा, औना, इयाल, आवन, ड़ी, आरी, वा, न्यांह, आर, आदि व्युत्पादक पर प्रत्यय जुड़ने पर प्रातिपदिकों के प्रथम अक्षर में निम्नलिखित परिवर्तन :—

आ > अ

ई, ए > इ

ऊ, ओ > उ

	राम+इया >	रमइया—	प. ८२
	चीकन+इयाँ >	चिकनया—	प. १६१
	जूझ+आउर >	जुझाउर—	प. ५९
	चूहा+ड़ा >	चुहाड़ा	प. ६५
	मीठा+ई >	मिठाई—	प. २२-५
	मूरा+ड़ा >	मुराड़ा—	सा. ५.१३.१
	पानी+हारी >	पनिहारी—	प. ९५.३
	जीय+रा >	जियरा—	सा. २.३२.२
	खाट+इया >	खटिया—	प. १००-२
	खेल+औना >	खिलौना—	प. १८९.२
	गुनी+इयाल >	गुनियाल+ए	
		गुनियाले—	सा. ११.७.१
	छूटक+आवन >	छुटकावन—	प. १९९.२
	दूसर+ई >	दुसरी—	प. १३१.७
	नास+औना >	नसौना—	र. ९-२
	फिरकी+ड़ी >	फिरकड़ी—	सा. ४.३३.१
	बाघिनी+इया >	बघिनिया—	प. १६५.८
	बावरी+इया >	बावरिया—	प. ९४.६
	भीख+आरी >	भिखारी—	प. ४२.६
	मंदारी+इया >	मदरिया—	प. ५०.२
	माटी+इया >	मटिया—	प. १००-२
	पखेरू+वा >	पखेरुवा—	सा. १६.३७.१
(दुख+ड़ी)	दूखड़ी+याँह >	दूखड़ियाँह—	सा. २.२३.१
(रात+ड़ी)	रातड़ी+याँह >	रातड़ियाँह—	२.२३.२
	रोगी+इया >	रोगिया—	प. १२२.४
	लोहा+आर >	लुहार—	सा. १.३०.१
	लोहार+इया >	लुहारिया—	सा. १६.३५.१

अकर्मक मूल धातु से सकर्मक धातु बनाने में विभक्तिमूलक परप्रत्यय लगने के पूर्व धातु में ही निम्नलिखित परिवर्तन हो जाता है—ऐसी स्थिति में शून्यप्रत्यय की कल्पना की जा सकती है। इ>ए अ>आ

ऊ>ओ,

कट्+	Φ	काट	सा. ४.२५.१
मिट्+	"	मेट—	सा. १९.१६.१
फिर्+	"	फेर—	सा. २५.६.२
बंध्+	"	बाँध—	सा. १५.२५.२
सज्+	"	साज्—	सा. ३१.१४.१
टूट्+	"	तोड़—	सा. ३१.१७.२
लद्+	"	लाद—	सा. २६.४.२
कढ़्+	"	काढ़—	सा. २१.२३.१
मर्+	"	मार—	सा. १५.२७.२
बह्+	"	बाह्—	सा. १.९.१
छुट+	"	छोड़े —	र. २.८
		छांड़—	र. २.८

२.८६ मूल धातु में प्रथम प्रेरणार्थक बोधक परप्रत्यय आ अथवा द्वितीय प्रेरणार्थक बोधक परप्रत्यय वा के जुड़ने से निम्नलिखित ध्वन्यात्मक परिवर्तन हो जाता है। व्यञ्जन क्रम वाले एकाक्षरी क्रिया प्रातिपदिक में प्रेरणार्थक प्रत्यय के पूर्व ए > इ, ओ > उ

ऊ > उ—

आ > अ

ए > इ—	देख+आ > दिखा—	सा. ४.२१.२
—	खेल+आ > खिला—	र. ३.३
		प. ५७
ओ > उ—	छोड़+आ > छुड़ा—	प. १७५.६
ऊ > उ—	छू+वा > छुवा—	प. १६०.७
आ > अ—	जाग+आ > जगा—	सा. २.४३.१
ऊ > उ—	भूल+आ > भुला—	सा. २५.२१.१
	तोर+आ > तुरा—	प. १५.४

व स—वाले एकाक्षरी धातु में—प्रेरणार्थक प्रत्यय के पूर्व—क्रिया प्रातिपदिक का ए>इल

दे+आ > दिला—	प. ४२.५

मुक्त पदग्राम+विभक्ति मूलक प्रत्यय

२.८७ **संज्ञाविभक्ति प्रत्यय** बहु वचन प्रत्यय

आकारान्त संज्ञा प्रातिपदिक—ब. व. बोधक अन प्रत्यय के पूर्व व्यंजनान्त हो जाता है।

कुंजड़ा अन् > कुज्ड़न— १८.१२.२

ग्वाला अन् > ग्वालन— र. ३.४

मुरदा अन् > मुरदन— प. १०५

आँखी अन् > अंखियन

२.६७ ईकारान्त संज्ञा प्रातिपदिक में व. व. बोधक—आं लगने वाले अंतिम दीर्घ ई ह्रस्व और आँ के स्थान में याँ श्रुति का आगमन होता है यथा—

आँखी आँ > अंखियाँ २.३२.१२ (प्रातिपदिक दीर्घ ई इ य श्रुति का आगम)

आँखड़ी आँ > आँखड़ियाँ १६.८.२ (")

कली आँ > कलियाँ १६.३४.१ (")

कसाई आँ > कसाइयाँ २.२३.१

गुनी आँ > गुनियाँ प. ७९.६

इकारान्त प्रातिपदिक इन प्रत्यय के पूर्व—दीर्घ ह्रस्व हो जाता है—

मोती इन > मोतिन सा. २८.४.१

२.६७२

व. व. बोधक एं, ए प्रत्यय के योग में आकारान्त प्रातिपदिक—अकारान्त या व्यंजनांत हो जाते हैं—

पियादा + एं > पियादें १४.१०.२

२.६७३ अनचीन्हां + ए > अनचीन्हे र. ११

कापड़ा + ए > कापरे १५.२६.१

आकारान्त प्रातिपदिक—ओं से शब्द व्यंजनान्त हो जाते हैं।

२.६७४ बड़ा ओं > बड़ों १५.६३.२

मुक्त पदग्राम + लिंग विभक्ति

२.६७५ 'आकारान्त प्रातिपदिक स्त्रीलिंग बोधक ई, प्रत्यय के पूर्व व्यंजनान्त हो जाते हैं

भंवरा ई > भंवरी प. ७५

छपरा ई > छपरी सा. ४.३७.२

भला ई > भली सा. ४.३७.२

अंधियारा ई > अंधियारी सा. १.४.१

२.६७६ तुरक आनां > तुरकानां प. १६३

२.६७७ तुरक इनीं > तुरकिनीं प. १६०

भयावन इ > भयावनि प. १२

भगत इनि > भगतिनि प. १६३

२.६७८ बाम्हन इ > बाम्हनि प. १६०

क्रियापदग्राम + विभक्तिमूलक प्रत्यय——सन्धि प्रक्रिया

क्रिया प्रातिपदिक में भूत निश्चयार्थ——इआ प्रत्यय के संयोग से अंतिम प्रत्यय को य् श्रुति का आगम

२.६८	ला	इआ > लाइया	सा. १५.२२.२
	लाग्	इआ > लागिया	" २.४८.१
	घर्	इआ > घरिया	" १४.१४.१
	चुन्	इआ > चुनिआ	१६.१९.२
	झोंक्	" > झोंकिया	१८.८.२
	जड़्	" > जड़िया	१५.१५.१
	भोग्	" > भोगिया	१६.९.२
	देख्	इआ—देखिया	१६.८.१
	मिल	इआ—मिलिया	६.४.१

२.६८१ एकारान्त धातु में भूतकालिक विभक्ति——प्रत्यय के पूर्व ए > इ हो जाता है और प्रत्यय आ के पूर्व य् श्रुति का आगम हो जाता है।

दे + आ‿या > दिया (३.१३.२)

ले + आ‿या > लीया लिया १५.३८.१

ले + न्हो > लीन्हो १८.९.१

२.६८३ ई——ओ आ-कार+न्त धातु में – विभक्ति- आ, औ के पूर्व य् या व् श्रुति का आगम होता हैं।

	पा	आ >	पाया	३.१५.२
			पावा	र. ३
	खा	आ >	खाया	१७.५.१
	आ	आ >	आया	१५.५९.२
			आवा	र. १०.४
२.६८४	लिखा	आ >	लिखाया	प. ८६
	बो	औ >	बोयौ	प. ६०
	खो	औ >	खोयौ	प. ६०

(अपवाद – रो+आ रोआ – प. ६०)

क्रियापदग्राम+भविष्य निश्चयार्थ-विभक्ति संधिप्रक्रिया

२.६८५ जी ऊँगा > जिऊँगा प. १९३ (धातु ई > इ)

सो	एगा >	सोवेगा	प.३.१६.२	(ए के पूर्व व् श्रुति का आगम)
पी	एगा >	पीवेगा	सा.१५.१३.२	(व् का आगम)

मुक्त पदग्राम+मुक्त पदग्राम

२.६६ **पुनरुक्त पदग्राम**

हाट+	हाट	>	हाटैहाट	सा.३.२.२
मुंहि+	मुंहि	>	मुहें मुहिं	सा.२१.६.२
पढ़ि+	पढ़ि	>	पढ़ेपढ़ि	प.८५
भरि +	भरि	>	भरे भर	सा.४.२०.२
आठ+	सठि	>	अठसठि	प. १७.१-३
बड़ा+	गाँव	>	बड़ गांव	सा. ४.३७.२
दीन+	नाथ	>	दीनानाथ	प. ४३.६ सा.१५.१७.२

२.६।१० एक ही शब्द के अन्तर्गत दो ध्वनियों के पास आने पर सन्धि प्रक्रिया :

अ+उ	/ [व] > औ	भवसागर >	भौसागर	र.२०
अ+इ	[य] > ऐ	अक्षयपद >	अखैपद	र.चौ.७
अ+इ	[य] > ऐ	संशय >	संसै	प. १६
अ+इ	[य] > ऐ	उदय >	उदै	प.५२
अ+इ	[इ] > ऐ	ज्वलति (जलति जरइ)	जरै	प. ६२
अ+इ	[य] > ऐ	हृदय ह्रिदय	ह्रिदै	प. २००

ध्वनि-परिवर्तन (PHONOLOGY OR PHONOTACTICE)

३.० कबीर ग्रन्थावली की भाषा छंदबद्ध है। छंदबद्ध भाषा में लय-प्रवाह के कारण, मात्रा पूर्ति अथवा तुक्पूर्ति के लिए अनेक परिवर्तन हो जाते हैं। यद्यपि कबीर ग्रन्थावली में शास्त्रीय छंद विधान का कड़ाई से पालन नहीं किया गया फिर भी उसमें छंद पूर्ति संबंधी निम्नलिखित ध्वनि-परिवर्तन दृष्टिगत होते हैं—

३.१ छंद पूर्ति सम्बन्धी परिवर्तन

ह्रस्व स्वर का दीर्घीकरण—

अद्भुत्	>	अदभूता	र. ९.७	उ > ऊ, अ > आ
जाहिं	>	जाहीं	र. ११	इ > ई
संसार	>	संसारा	र. १२	अ > आ
सकार	>	सकारा	”	” ”
बेवहार	>	बेवहारा	र. १४	” ”
अनाथ	>	अनाथा	र. १६	” ”
पंथ	>	पंथा	”	” ”
भरतार	>	भरतारा	प. ३	” ”
भार	>	भारा	”	” ”
बिका	>	बीका	”	इ > ई
मूल	>	मूला	र. १	अ > आ
सूल	>	सूला	”	” ”
मास	>	मासा	र. १	” ”
साथ	>	साथा	प. ३	” ”
सनाथ	>	सनाथा	”	” ”
बास	>	बासा	र. ४	” ”
अकास	>	अकासा	”	” ”
फूल	>	फूला	”	” ”
स्वाद	>	स्वादा	”	” ”
बेद	>	बेदा	”	” ”

बिंदु	>	बिंदू	"	उ > ऊ
जाति	>	जाती	र.	इ > ई
करतूत	>	करतूता	र. ६	अ > आ
किया	>	कीया	"	इ > ई
भेद	>	भेदा	र. ७	अ > आ
आसरम	>	आसरमा	"	" "
धरम्	>	धरमा	र. ८	"
करम	>	करमा	"	"
फूल	>	फूला	"	"
तूल	>	तूला	"	"
कुलाल	>	कुलाला	र. १०	"
दूध	>	दूधा	"	"
किनहुँ	>	किनहूँ	र. १२	उ > ऊ
बिसुअ	>	बिसूवा	"	उ > ऊ
कछु	>	कछू	र. १३	"
पवन	>	पवनां	"	अ > आ

(ख) दीर्घ स्वर का ह्रस्वीकरण

सूतधार > सुतधार र. १० ऊ > उ

तेरी > तॆरी र. ११ ए > ए

समुझि न परै बिषम् तॆरी माया। र.१॥

दोइ > दोइ ओ > ओ

फल दोइ पाप पुन्नि अधिकारी। र. ११॥

कै > कै ऐ > ऐ।

सुख कै बिरखि यह जगत उपाया। र. ११॥

तहां > तहं र. १३ । आ > अ।

रे > रे " । ए ए।

हारि परे तहं अति रे सयाना। र. १३॥

३.२ ऋ : वैदिक भाषा में ऋ, ॠ ह्रस्व और दीर्घ स्वर के रूप में विद्यमान थे। संस्कृत काल में दीर्घ 'ॠ' लुप्त हो गया। पाली—प्राकृत-अप० में ह्रस्व ऋ का भी स्वरवत प्रयोग लुप्त हो गया। आ० भा० आ० काल की अनेक भाषाओं में प्राचीन शब्दों में प्रयुक्त ऋ स्वर अ, इ, उ आदि अन्य स्वरों में परिवर्तित हो गया। जैसा कि पहले ही संकेत किया जा चुका है, कि कबीर ग्रन्थावली की प्राचीन

प्रतियों में ऋ लिपिग्राम का प्रयोग नहीं मिलता है केवल कुछ विरल संस्कृत शब्दों में ' ृ ' की मात्रा मिलती है जिसे लिपि की रूढ़िबद्धता कहा जा सकता है। प्राचीन ऋ कबीर ग्रन्थावली में निम्नलिखित ध्वनियों में रूपान्तरित हो गया था :—

ऋ रि : –रि र्+इ : ऋषि > रिखि प. १६५.५
हृदय > रिदा प. १३०.८
(सं०) अमृत > अंम्रित र. १.१२
(सं०) तृण > त्रिन र. १८
(सं०) गृह > ग्रिह प. १३
(सं०) कृपा > क्रिपा प. ४५
(सं०) तृष्णा > त्रिसनां प. ५२
(सं०) सुकृत > सुक्रितु प. ६५
(सं०) चातृक > चात्रिग प. ६६
(सं०) ऋतु > रितु प. १४९.१
– रे गृह > ग्रेह प. १०
– इर हृदय > हिरदा सा. १५.११.१
– इर पृथ्वी > पिरथी प. ५७
गृही > गिरही प. ९०
बृक्ष > बिरखि प. ११
– इ दृढ़ > दिढ़ि प. १०
– रु ऋतु > रुति प. १४१.२
ऋ > ई अमृत > अमी प. १९३.२
नप्तृ > नाती प. ९९.२
इ हृदय > हिय र. १९.३
अ : आ : णृत्यति > नाचे प. ११४.३
– इ कृत > किय + आ प. १.१०
– इर कृतिम > किरतिम प. २.६.३
कृषाण > किरसान + आ किरसानां प.४१.३
–ई मृत्यु > मींच सा० २.४०.१
–उ मृत > मुआ प. ४६.६
पृच्छ > पूँछ प. २१.२८.२
–ए गृह > गेह प. १३.१

३.३ स्वरपरिवर्तन

आदिम स्वर

अ > अ	अक्षर	>	अक्खर	प. २१.४
	अक्षि	>	अँखि+याँ	२.३१.१
आ > अ	आश्चर्य	>	अचरज	प. १३३.३
ए > इ	एक	>	इक	प. ३७.४ ४०.४

३.३१ मध्यम स्वर

अ > आ	मनुष्य	>	मानुख	र. १५
उ > अ	पुरुषोत्तम	>	परसोत्तम	प. १०८
ई > इ	जीव	>	जिउ	र. १३
औ > ओ	यौवन	>	जोबन+आ	र. १४

क्षति पूर्ति दीर्घीकरण

३.३२ अन्त्य स्वर

आ > इ	वेदना	>		बेदनि	र. १२
अ > इ	पाद	>		पाइं	प. १
अ > इ	भाव	>		भाइ	प. ८
इ > ई	अंगुलि	>		अंगुरी	२५.७.१
अ > उ	ग्राम	>	गांव >	गाउं	प. ४१
अय : अइ : ऐ	परिचय	>		परचै	र. १३
अ > उ	नाम	>		नाउं	प. २०

३.४ अर्द्धस्वर

य् > ज्	युग	>	जुग	र. ११
	युक्ति	>	जुक्ति	र. ११
	यौवन	>	जोबनां	र. १४
	यमपुर	>	जमपुर	
	मर्यादा	>	मरजाद	प. १६
	आचार्य	>	आचारज	प. ९०
य > इ	पुण्य	>	पुन्नि	२.११
	प्रियतम	>	प्रीतमं	प. ६
	नायक	>	नाइक	प. १०
	व्यापि	>	बिआपि	प. ३९

	अभ्यन्तर	>	अभिअंतर	प. ४९
	नारायण	>	नराइन	प. १०१
य > ए	व्यवहार	>	बेवहार	र. १४
य > इ	रसायन	>	रसाइन	प. ६
	व्यंजन	>	बिंजना	प. ३४
व् > ब	विर्वजित	>	बिबरजित	र. १४
	वृक्ष	>	बिरखि	र. ११
	विकास	>	बिकास	र. चौ. १६
	वेदना	>	बेदनि	र. १२
	व्याप	>	बिआप+ई	प. ३९
	विष	>	बिख	र. १२
	विषम	>	बिखम	र. ११
	सरोवर	>	सरोबर	प. ५
	वेद	>	बेद	प. ५
व् > उ	जीव	>	जिउ	र. १३
	द्वार	>	दुआर	प. ६९
	महेश्वर	>	महेसुर	,,
व > प	गंधर्व	>	गंध्रप	र. १३

३.५ आदि व्यंजन

द् > ड्	दिगम्बर	>	डिगम्बर	प. १६१
प् > फ्	पुनः	>	पुनि	र. १८
र् > ल्	रज्जु	>	लेज्जु	प. ९५
र् > र्	रश्मि	>	रसरि+इया	प. १७०
व् > ब्	वृक्षः	>	बिरखि	र. ११
य् > ज्	युग	>	जुग	र. ११
श् > स्	शाखा	>	साखा	र. ११
क्ष > खि	क्षण	>	खिन	र. १८
ज्ञ > ग्यं	ज्ञांन	>	ग्यांन	र. ९.८

३.५१ मध्य व्यंजन

क् > ग्	उपकार+री	>	उपगारी	प. १३
	विकास	>	बिगास	र. चौ. ६
	तर्कष	>	तरगस	प. ४

	भक्ति	>	भगति	प. ४०
	चातृक	>	चात्रिग	प. ६६
ष् > ग्	ज्योतिष	>	जोतिग	प. ६६
ड् > र्	: सं० पत् सं० पडिअ अप. पडइ	>	परे	र. १६
			फोरे	प. १८
			झगरा	र. चौं. १४
			बिछुरे	प. ७
			खरे	प. २४
			लरनैं	प. २५
			किवार	प. ४५
			जड़ौ जरौ	प. २
ण् > न्	तृष्णा	>	त्रिस्नां	प. ५२
	गुण	>	गुन	र. १२
	पुण्य	>	पुन्नि	र. ११
	चरण	>	चरन	र. १३
	नारायण	>	नाराइनां	प. १०१
न् > ण्	न्हावन	>	नांवण	प. ८४
	हनुमंत	>	हणवंत	प. १९८
म् > व्	कमल	>	कंवल	र. चौ. १६
	गमन	>	गवन	प. ४०

३.५२ मध्य व्यंजन

र् > ल्	सरिता	>	सलिता	प. १८
			तले	प. ३४
	हरिद्र	>	हलदि	प. १०९
	अनियारे	>	अनियाले	प. ८
ल् > र्		>	डाला	प. १७५-८
	जाल	>	जार	र. १९
	उज्वल	>	उजारा	र. चौ. १३
	स्याला	>	सारा	प. १४०
श् > स्	दर्शन	>	दरसन	र. १४
श्र > स्र	आश्रम	>	आस्रम	र. १४

श् > स्	संशय > संसै	प. १६
ष् > स्	शीर्ष > सीस	प. ४
	तृष्णा > त्रस्नां	प. ५२
''र् > ''्र	गंधर्व > ग्रंध्रप	र. १३
	गर्भ > ग्रभ	प. १७५
ष् > स्	तर्कष > तर्गस	प. ४
क्ष् > ख	अक्षि > अंखियाँ	
ज्ञ > ०	अज्ञात > अयाना	प. १०.६
ष् > स्	पुरुषोत्तम > परसोत्तम	प. १०८
ह् > घ	संहार > संघारे	र. ९.५
ष् > ख	संतोष > संतोखु	
ष् > स्	विष्णु > विस्नु	प. ९

३.५३ अन्त्य व्यंजन

क् > ग्	धिक् > धिग्	र. १७
ण् > न्	प्रमाण् > परवान	प. १७३
ण् > न्	गुण > गुन	र. १३
ण > न	चरण > चरन	र. १३
	क्षण > खिन	र. १८
	क्षीण > खींन	र. चौ. १७
न् > ण्	स्नान > नांवणु	प. ८४
क्ष > ख	अलक्ष > अलख	र. १४
ल् > र्	भ्रमजाल > भ्रमजार	र. १९
ल् > र्	उज्वल > उजार आ उजारा	र. चौ. १३
ल् > र	डाला > डारा	प. १५२.२
र् > ल्	डारा > ड़ाला	प. १७५.८
ट > र	कपाट > किंवार	प. ४५

३.५४ संयुक्त व्यंजन

आदि	क्ष् > खि	क्षण > खिन	र. १८
		क्षमा > खिमाँ	र. ७
मध्य	> क्खि	अक्षर > अक्खिर	र. चौ. १
आदि	> ख्	क्षीण > खींन	र. चौ. ७
मध्य	> ख्	अक्षै > अखै	र. चौ. ७

मध्य	स्त > थ्	निरअस्ति > निरअथि	र. १७
		कायस्त > काइथ	प. ४३
मध्य	द > द्	मत्सर > मंछर	प. ४०
	त्स > छ	वत्सल > बछल	प. ४०
आदि	ज्ञ > ग्यं	ज्ञान > ग्यांन	
मध्य	ष् > प	अज्ञान > अयान	

३.६ समीकरण

अग्र व्यंजन समीकरण	पुण्य > पुन्नि	र. ११
अग्र व्यंजन समीकरण	तत्व > तत्त	प. १
अग्र स्वर समीकरण	गुप्त > गुपुत	प. २
अग्र स्वर समीकरण	अक्रूर > अकूरु	प. १९८.४
पश्च व्यंजन समीकरण	नलिनि > ललनीं	प. ६८

३.७ विपर्यय

व्यंजन र् का एकांगी विपर्यय	वज्जग्रहुं > व्रज्जहुं	र. १८
स्वर अ>उ	अनुमान > उनमान + आ	
	उनमाँना	र. १९
स्वर अ—इ	हरिद्र > हलदि	प. १०९
अक्षर द ग	मुगदर > मुदगर	प. ४

३.८ स्वर भक्ति

संयुक्त व्यंजन में आए हुए दो व्यंजनों के मध्य एक स्वर का आगम कर सरलीकरण की प्रवृत्ति को स्वरभक्ति की प्रक्रिया करते हैं। कबीर ग्रन्थावली में स्वर भक्ति के प्रचुर उदाहरण मिलते हैं।

कर्म > करम	र. १४
विर्वजित > बिबरजित	र. १४
दर्शन > दरसन	र. १४
वृथा > अबिरथा	र. १९
मर्यादा > मरजादा	प. १६
तर्कष > तरगस	प. ४
भक्ति > भगति	प. ४०
सर्व > सरब	प. ३९
तृष्णा > त्रिसनां	प. ५२
आचार्य > अचारज	प. ९७

गृही > ग्रिही > गिरही	प. ९०
खर्च > खरज	प. ८९
पार्वती > पारबती	प. १०३
प्रमाण > परवांन	प. १७३

३.८ लोप

मध्य व्यंजन लोप म भा. आ. की विषेषता है। कबीर ग्रन्थावली में इसके प्रचुर उदाहरण मिलते हैं।

मध्य व्यंजन :	य्	ज्योति > जोति	र. चौ. १३
		मनुष्य > मानुख	र. १५
	च्	लोचन > लोइन	प. १७३
	द्	नजदीक > नजीक	
	द्	पाद > पांइ	प. १
	र्	शीर्ष > सीस	प. ४
	व्	पृथ्वी > पिरथी	

३.८१ आदि स्वर

अहंकार > हंकार + आ	
हंकारा	र. १७

३.८२ अक्षर

अवधूत > अवधू

३.१० अनुनासिकता

आगे आने वाले पंचम अनुनासिक व्यंजन के प्रभाव से पूर्व का व्यंजन अनुनासिक हो जाता है। इसी प्रवृत्ति को संक्रामक अनुनासिक्ता की संज्ञा दी गयी है। कबीर ग्रन्थावली में उसके उदाहरण मिलते हैं।

राम > रांम	प. ६
रसायन > रसाइंन	प. ६
क्षीण > खींन	र. चौ. ७
कमल > कंवल	र. चौ. ७
नाम > नांउं	
नारायण > नाराइंन + आ	प. १०
अनुमान > उनमांनां	२.१९
राम नाम > रांम नांम	२.१९

३.१०१ कहीं-कहीं कबीर ग्रन्थावली में अकारण अनुनासिकता मिलती है। संभवतः

मुख सुख ही इसका एक मात्र कारण है ।

अकारण अनुनासिकता

	मत्सर > मंछर	प. ४०
	सत्य > सच्चा साँच+आ साँचा	
	अक्षि > आँख	
	कपाट > किंवार	प. ४५
	पाद > पांइ	प. १

३.११ आगम

आदि स्वर	वृथा > अबिरथा	
	स्तुति > अस्तुति	प. ३२
मध्य स्वर	कपाट > किंवार	प. ४५
मध्य स्वर	व्याधि > बिआधि	प. २
,,	स्मृति > सुंम्रित	प. १५२

३.१२ आगे आने वाली ध्वनि के कारण उसी के समान ध्वनि का आगमन

अपिनिहित

योनि > जोइनि	र. १७

क्षतिपूर्ति दीर्घीकरण

(अ०) सुन्नत—सूनति

विदेशी ध्वनियों का परिवर्तन

कबीर के आविर्भाव काल में हिन्दी प्रदेश में अफ़गान वंश का राज्य स्थापित हो चुका था । इस्लाम धर्म की धर्म-भाषा होने के कारण मुसलमानों में अरबी का सम्मान था—अरबी का सीधा प्रभाव भारतीय भाषाओं पर कम पड़ा—उच्च सांस्कृतिक भाषा के रूप में फारसी भाषा साहित्य का मुसलमानों में विशेष सम्मान था । अतएव अनेक अरबी शब्द फारसी के माध्यम से भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त होने लगे थे—किन्तु जन-सामान्य ने इन विदेशी शब्दों को अपनी बोली की मिलती-जुलती ध्वनियों में ढाल लिया था। तत्कालीन हिन्दी वर्णग्राम में इन ध्वनियों को व्यक्त करने के लिए कोई नया प्रयास नहीं दिखाई पड़ता है । अनुमान यही है कि मूलाधार सिद्धान्त (Substratum theory) यहाँ पूर्ण रूप से लागू हुआ। फारसी, अरबी, तुर्की आदि विदेशी भाषाओं की ध्वनियों में निम्नलिखित ध्वनि परिवर्तन दृष्टिगत होते हैं ।

व्यंजन परिवर्तन

फारसी, अरबी—क़ ख़ ग़ फ़—कबीर ग्रन्थावली में क्रमशः क् ख् ग् फ् में परिवर्तित हो गए हैं—

(अ०)	क़् > क्	क़ुदरत > कुदरत	प. १५७
		फ़िक्र > फिक्र	प. ८७
	ख़् > ख़्	ख़बर > ख़बर	प. ८९
	ख़ > ख्	ख़ुदा > खुदाई	प. ८७
		ख़र्च > खरच	प. ८९
		ख़ालिक > खालिक	,,
		ख़तनाँ > खतना	
	ग़ > ग्	दरोग़ा > दरोगु	,,

फारसी अरबी, श ज़ ज़ आदि कबीर ग्रन्थावली में स् ज् में परिवर्तित हो गए हैं—

	ज़ > ज्	नज़दीक > नजीक	प. ४९
		रोज़ > रोज	प. ८७
(अरबी)	फ़ > फ्	इफ़्तिरा > इफतरा	प. ८७
	श् > स्	परेशानी > परेसानी	प. ८७
		शाह > साह	प. ४
(फारसी)	श् > स्	बिहिश्त > भिस्ति	प. ४३

(म) फारसी-अरबी ल कहीं-कहीं र् में :—

(फा०)	ल् > र्	सुलतान > सुरतान	प. २२

(फ) कुछ स्थलों में फारसी ज़् द् में:—

(फा०)	ज़ > द	क़ागज़ > कागद	प. ३

(ड) कहीं फारसी—ग़ का लोप हो गया है और लुप्त व्यंजन के स्थान में अ के पूर्व य् श्रुति का आगम हुआ है।

(फा०)	ग़ > ०	पैग़म्बर—पयंबर	प. १६५

(च) कहीं फारसी तद् त् का लोप हो गया है—

(फा०)	द् > ०	नज़दीक—नजीक	प. ४२
(फा०)	त् > ०	दुरुस्त > दुरुस	
(फा०)	ज् > ०	मस्जिद > मसीति	

३.१३ विदेशी स्वर-परिवर्तन

फारसी, अरबी, तुर्की आदि मध्यकालीन भाषाओं की अधिकांश स्वर-ध्वनियाँ कबीर ग्रन्थावली में ज्यों की त्यों प्रयुक्त हुई हैं। यथा—इ, ई, उ ऊ, ए, ऐ [अइ] ओ औ [अउ] ध्वनिग्राम क्रमशः इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ रूप में पाए जाते हैं।

उ > उ	क़ुदरत > कुदरत	प. १५७
इ > इ	फ़िक्र > फिकर	प. ८७

४

	आ > आ	ख़ालिक़ > खालिक	प. ८९
	ओ > ओ	दरोग़ > दरोगु	”
	ई > ई	नज़दीक़ > नजीक	प. ४२
	ए > ए	परेशानी > परेसानी	५.८७
	अउ > औ	अउरत > औरति	८. १७७.१२
	ऊ > ऊ	ख़ून > खून	प. १७७.३
	अउ > औ	जउहरी > जौहरी	सा. १८.११
	ए > ए	पैग़म्बर > पैगम्बर	प. ४२.२

स्वर सम्बन्धी कुछ विशेष परिवर्तन निम्नलिखित हैं :—

(अ०)	ई > ए	क़तीब > कतेब	प. ८१.४

—

पदग्राम विचार MORPHOLOGY

४.० प्रत्यय प्रक्रिया :

प्रत्यय प्रक्रिया किसी भाषा के पदात्मक गठन का महत्वपूर्ण अंग है। 'प्रत्यय' वह पदग्राम[1] है जो ध्वन्यात्मक और व्याकरणिक दृष्टि से उस पदग्राम के ऊपर निर्भर रहता है जिसमें वह जुड़ता है अर्थात् प्रत्यय वह आबद्ध पदग्राम है जो सामान्यतः स्वतंत्र रूप से सार्थक नहीं होता है। प्रत्यय की स्वतंत्र अर्थदान सत्ता नहीं है। वह मुक्त पदग्राम से जुड़ कर उसके अर्थ को परिवर्तित करता है—इस प्रकार दूसरे पदग्राम से आबद्ध होने पर ही वह सार्थक होता है। यही कारण है कि स्वतंत्र अर्थ की दृष्टि से प्रत्यय अमूर्त कहा जाता है।

कार्य व्यापार की दृष्टि से प्रत्यय प्रमुखतः दो प्रकार के होते हैं :—

१—व्युत्पादक प्रत्यय (Derivational Affix)

२—विभक्ति प्रत्यय (Inflectional Affix)

(१) व्युत्पादक प्रत्यय—वह प्रत्यय हैं जो किसी धातु अथवा प्रातिपदिक के पूर्व या पश्चात् संबद्ध होकर दूसरी धातु तथा प्रातिपदिक का निर्माण करते हैं।

(२) विभक्ति प्रत्यय—वह प्रत्यय हैं जो किसी प्रातिपदिक के अन्त में जुड़ कर व्याकरणिक रूप को प्रकट करते हैं। विभक्ति प्रत्यय के बाद फिर कोई प्रत्यय नहीं जुड़ता अतएव इन प्रत्ययों को चरम प्रत्यय कहा जा सकता है। व्युत्पादक प्रत्ययों के आगे विभक्ति प्रत्यय तो आ सकते हैं, किन्तु विभक्ति प्रत्यय के बाद व्युत्पादक प्रत्यय नहीं आ सकते हैं।

४.१ व्युत्पादक प्रत्यय (पूर्व प्रत्यय या उपसर्ग)

कबीर ग्रन्थावली में तत्सम, तद्भव, देसी तथा विदेशी ४ प्रकार के उपसर्ग प्रयुक्त हुए हैं जिनका विवेचन निम्नलिखित है :—

(१) (अ) निषेधसूचक, तत्सम उपसर्ग

अ+गम=अगम सा. ९.५.१

---

(१) **पदग्राम** (Morphem—**भाषा की लघुतम अर्थवान इकाई को पदग्राम कहते हैं। एक पदग्राम के एक या अनेक सह पदग्राम होते हैं। ये सहपदग्राम परिपूरक वितरण में होते हैं।**

अ + गोचर = अगोचर	"
अ + मोल = अमोल	र. ५२.२
अ + लख = अलख	र. ३७.२
अ + घट्ट = अघट्ट	सा. १.५.१
अ + बूझ = अबूझि	सा. ४.१२.२
अ + जंच = अजंच	८.१५.१
अ + बरन = अबरन	८.५.१
अ + लेख = अलेख	९.१०.१-२
अ + जपा = अजपा	"
अ + कलप = अकलप	"
अ + पार = अपार	३.७.१
अ + जाँण = अजांण	४.६.१

(२) अन—निषेधसूचक, तत्सम उपसर्ग

अन् + अंत = अनंत	३.१३.२
अन् + मिलता = अनमिलता	२८.१८.१
अन् + कीया = अनकीया	८.४.१
अन् + व्यावर = अनव्यावर	१३.३.१
अन् + जाने = अनजाने	४.२७.१

(३) निर्— निषेधसूचक, तत्सम, उपसर्ग

निर् + भय = निर्भय	३.१६.१
निर् + धार = निरधार	२५.१७.२
निर + बैरी = निरबैरी	४.२५.१
निर् + बल = निरबल	२५.१७.२
निर् + फल = निरफल	४.१९.१

(४) निस—निषेधसूचक, तत्सम, उपसर्ग

निस् + प्रेही = निसप्रेही	

(५) निह—निषेधसूचक-तत्सम उपसर्ग

निह + कामना = निहकामना	४.२४.१

(६) बि—निषेधसूचक-तद्भव उपसर्ग

बि + सम = बिसम	२७.५.१२
बि + सूधा = बिसूधा	र. १२
बि + गंध = बिगंध	२७.३.२

(७) सहित अर्थ द्योतक, तत्सम प्रत्यय

स+काम=सकाम	१५.४९.१
स+नाथा=सनाथा	र. ३.१

(८) सु-श्रेष्ठता-अर्थद्योतक तत्सम उपसर्ग

सु+रति=सुरति	९.१०.१
सु+घर=सुघर	चौ. र. १
सु+वस=सुबस	सा. ४.४.१

(९) अप—**हीनता अर्थ द्योतक, तत्सम, उपसर्ग**

अप+वादहिं=अपवादहिं	प. ४०
अप+रोगी=अपरोगी	प. १६१

(१०) औ अप **हीनता अर्थ द्योतक तद्भव उपसर्ग**

औ+गुन=औगुन	सा. ६.५.१
औ+घट=औघट	चौ. र. ९

(११) कु–**हीनता, अर्थद्योतक, तत्सम उपसर्ग**

कु+संगी=कुसंगी	२९.१८.१
कु+चिल=(चील) कुचिल	प. ६४.४
कु+बुधि=कुबुधि	प. २५.४
कु+मति=कुमति	प. १७.५

(१२) दु–**हीनता द्योतक, तत्सम उपसर्ग**

दु+चिते=दुचिते	प. ४२
दु+हागिनि=(भागिनि) दुहागिनि	२.३८.२

(१३) दुर्–**हीनता द्योतक तत्सम ,उपसर्ग**

दुर+मति=दुरमति	४.२२-२
दुर+आचारी=दुराचारी	१५.७३.२

(१४) **भर पूर्णता बोधक तद्भव उपसर्ग**

भर+पूर=भरपूरी	र. १३.५
भरपूरि	प. ३०.३
भरपूरा	प. १०२.६

(१५) ऊ

ऊ+भर=ऊभर	प. ९.५०

(१६) प्र (तत्सम) **विशेषता बोधक, तत्सम उपसर्ग**

	प्र + भू = प्रभू	३२.९.२
	प्र + वीन = प्रवीन ।-आ प्रवीना	प. ७८.४
	प्र + हारी = प्रहारी	र. ७.६
	प्र + ताप = प्रताप	प. ७३

(१७) प्रति-**प्रत्येक तथा विलोम बोधक तत्सम उपसर्ग**

	प्रति + पाल = प्रतिपाल	प. १५

(१८) ना-**निषेध सूचक, विदेशी उपसर्ग**

	ना + काम = नाकाम	प. १८३

(१९) सत् सं **सहित बोधक, तत्सम उपसर्ग**

	सं + ताप = संताप	४९.४
	सं + तोष = संतोष	प. १७.४

(२०) बे-**निषेध सूचक, विदेशी उपसर्ग**

	बे + हाल = बेहाल	प. १३
	बे + खबरि = बेखबरि	प. ६७
	बे + हद = बेहद	र. ६.१
	बे + काम = बेकाम	२४.५.२

(२१) दर-**निषेधसूचक, विदेशी उपसर्ग**

	दर + हाल + आ = दरहाला	र. १०.१

(२२) प्रति-**विलोम बोधक, उपसर्ग**

	प्रति + बिंम = प्रतिबिंब	प. १३२.९

(२३) पर—प्र **बोधक उपसर्ग**

	पर + जरै = परजरै	सा. ३०.१०.२
	पर + जला = परजला	२.५२.१
	पर + ताप = परताप	प. १४२.६
(२४) परि	परि + मल = परिमल	प. ११९.६

(२५) पर-अपर **अन्यताबोधक उपसर्ग**

	पर + नारी = परनारी	३०.२.१
	पर + दारा = परदारा	प. ४०.५
	पर + दास = परदास	१९.१४.१
	पर + देस = परदेस	र. १२.९

४.२ व्युत्पादक परप्रत्यय : ये प्रत्यय किसी संज्ञा, विशेषण तथा क्रिया प्रातिपदिक में जुड़ कर अन्य संज्ञा, विशेषण और क्रिया प्रातिपदकि का निर्माण करते हैं। कबीर ग्रन्था-

वली में ऐतिहासिक दृष्टिकोण से ४ प्रकार के प्रत्यय मिलते हैं——तत्सम, तद्भव, देसी तथा विदेशी ।

४.२१ संज्ञा परप्रत्यय

(१) आ (तद० प्र०) सर्वनाम + आ——आप + आ = आपा १५.७५.१
(२) ई (तद्भव) विशेषण + ई भला + ई = भलाई र. ७.५
——संज्ञा + ई संत + ई = संतई सा. ४.२.१
गरीब + ई = गरीबी १५.७८.१
क्रिया + ई करना + ई = करनी ८.३.१
–विशेषण + ई परेशान + ई = परेशानी प. ८७
–संज्ञा + ई दलाल + ई = दलाली प.
+ ई दस्तगीर + ई = दस्तगीरी प. ६०
+ ई बाजीगर + ई – बाजीगरी प. ८७
(३)–आई (तद्भव) विशेषण + आई चतुर + आई = चतुराई र. २९.२
" कठिन + आई = कठिनाई ३.५.१
" अधिक + आई = अधिकाई र. ७.५
संज्ञा + ई दुनिया + आई = दुनियाई
(४) इया (तद्भव) " बड़ा + इया = बड़ाइया २२.८.२
(५) ता (तद्भव) निहकाम + ता = निहकामता ४.२४.१
विशेषण + ता सीतल = सीतलता] ४.२.२
(६)–पन (तद्भव) विशेषण + पन——बड़ा + पना = बड़ापना २२.१.१
(७)–पनौ (तद्भव) सर्वनाम + पनो स्वा + पनो = स्वापनो २१.२४.२
(८)–पौ (तद्भव) सर्वनाम + पौ = आपनपौ २३.७.१
(९) –एरा (तद्भव) क्रिया + एरा = अरुझेरा प. ८९.७
(१०)–अन (तद्भव) क्रिया + अन दाझ + अन = दाझन ४.७.१
(११)–अनि (तद्भव) क्रिया + अनि दाझ + अनि = दाझनि २१.३२.२
(१२) वन (तद्भव) क्रिया + वन देख + वन = दिखावन १.१३.२
(१३)–औरी (तद्भव) संज्ञा + औरी ठग + औरी = ठगौरी प. ४९
(१४)–आर संज्ञा प्रातिपदिक में जुड़ कर अन्य संज्ञा प्रातिपदिक का निर्माण होता है। जिससे कार्य करने वाला, स्थान का रहने वाले आदि का बोध होता है।
संज्ञा + आर लोह + आर = लुहार १.३०.१
१६.२.२
गाँव + आर = गँवार ३०.१५.१

	कुम्भ + आर = कुम्हार	१२.१.२
(१५)–आरी (तद्भव)	भीख + आरी = भिखारी	प. १५७.२
(१६) संज्ञा + ना	चाँद + ना = चाँदिना	प. ९.८.१
+ नी	चाँद + नी = चाँदिनी	

४.२२ विशेषण बोधक प्रत्यय

(१७) ई (तद्भव) संज्ञा + ई	प्रहार + ई = प्रहारी	र. ७६
	संसार + ई — संसारी	२५.१०.१
विषे० + ई	हजार + ई = हजारी	४.३४.१
संज्ञा + ई —	प्रकास + ई = प्रकासी	१.१६.१
+ ई —	विसय + ई = विसयी	३०.२.१
(१८)–वंत (तद्भव) संज्ञा + वंत	तिखा + वंत = तिखावंत	१२.३.२
(१९)–वंती (तद्भव) संज्ञा-वंती	गुन + वंती = गुनवंती	
(२०)–इत (तत्सम्) संज्ञा + इत	लुंच + इत = लुंचित	प. १०१
	मुंड + इत = मुंडित	प. १०१
	वांछा + इत = वांछित	प. ४७
	दुख + इत = दुखित	प. १९७
(२१)–इया (तद्भव) संज्ञा + इया	दुख + इया = दुखिया	प. १३
(२२) इल (देशी) संज्ञा + इल	हठ + इल = हठिल	प. १६
(२३)–आउर (तद्भव) —	जूझ + आउर = जुझाउर	प. ५९
(२४)–एरा विशेष० + एरा	बहुत + एरा = बहुतेरा	र. १४
(२५)–एरी विशेष० + एरी	घन + एरी = घनेरी	१५.६.२
(२६)–वत (तद्भव) संज्ञा + वत	= नटवत	र. ११
(२७)–आ (तद्भव) संज्ञा + सा	= हरिसा	प. ३२
(२८)–सी (तद्भव)	+ सी = दीपकीसी	१६.२२.१
(२९)–सम (तद्भव)	+ सम = रससम	१२.२.१
(३०)–सवा (तद्भव)	+ सवां = सोनासवाँ	१५.२५.२
(३१)–समान (तत्सम)	+ समान = उदिकसमान	१७.१.२
(३२)–सरीखे (तद्भव) सर्व०	+ सरीखे = आपसरीखे	४.१.२
(३३)–सारिख (तद्भव) संज्ञा	+ सारिख = रामसारिख	र.६
(३४)–रूप (तत्सम) संज्ञा	+ रूप = नीर रूप	२७.१.१
(३५)–रूपी (तद्भव)	+ रूपी = पावकरूपी	२९.१३.१

(३६)–वारा (तद्‌भव) =मतिवारा प. ५६

(३७)–हार (तद्‌भव) =डोलनहार १२.६.१

(३८)–हारा (तद्‌भव) +क्रिया=हारा मारनहारा २.२४.२

(३९)–आलवयाल (तद्‌भव) संज्ञा+याल गुनि+याल=गुनियाल ११.७.१

(४०)–अक क (तत्सम) संज्ञा+अक निंदा+अक > निंदक २३.४.१

गाहक १८.४.२

(४१)–ता (तद्‌भव) क्रिया+ता—दा+ता > दाता २३.४.१

> दाता प. ३

(४२)–गर (विदेशी) सिकली+गर=सिकलीगर १८.१

(४३)–हारी (तद्‌भव) क्रिया+हारी > पोतनहारी प. ५१.६

४.२२ लघुतावाचक संज्ञा

(४४)–इया (तद्‌भव) विशेषण+इया बावरी+इया > बावरिया ८४.९

संज्ञा+इया बलव+इया > बलधिया ४.३.३१

बाघिनि+इया > बघिनिया प. १६५.८

लहर+इया > लहरिया प. ११

संज्ञा+इया बहु+र्+इया > बहुरिया प. ११

सेज+र्+इया > सेजरिया प. १५

राम+इया > रमइया प. २२

दहेड़ी+इया > दहेड़िया प. १३१.७

(४५)–ई (") +ई छारा+ई > छारी ४.३७.२

(४६)–ऊ (") +ऊ नैंन+ऊ > नैनूं प. ४१

वि० +ऊ नकटा+ऊ > नकटू प. ४१

संज्ञा+ऊ रसना+ऊ > रसनू प. ४१

(४७)–रा (") संज्ञा+रा जिय+रा > जियरा २.३२.२

गदहा+रा > गदहरा २५.९.२

(४८)–री (") " +री नांद+री > नीदरी ४.१५.२

(४९)–ड़ा (") " +ड़ा चूहा+ड़ा > चुहाड़ा प. ६५

रूख+ड़ा > रूखड़ा २२.१४.१

(५०)–ड़े संज्ञा+ड़े मुह+ड़े=मुहड़े २१.१.१

(५१)–ड़ी (") +ड़ी थिर+कड़ी=थिरकड़ी ४.३२.२

धनुह+ड़ी=धनुहड़ी १३.३.२

(५२)–क (") +क कीट+क > कीटक प. १

४.२४ संज्ञा बोधक प्रत्यय क्रिया में लगा कर किसी अन्य संज्ञा प्रातिपदिक का निर्माण :—

(५३)–औना (तद्भव) क्रिया+औना खेल+औना=खिलौना प. १८९.२

(५४)–ऐना " " +ऐना चबा+ ऐना=चबैना सा. १६.२६.२

(५५)–इया " " +इया जड़+इया =जड़िया १५.५५.१

१—अन्य विशेषण तथा क्रिया प्रातिपदिकों के निर्माण करने वाले प्रत्ययों का विवेचन यथास्थान विशेषण तथा क्रिया प्रकरण में विस्तार से किया जायगा।

२—विभक्तिमूलक प्रत्ययों का विवेचन संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि के साथ व्याकरणिक कोटियों के रूप में यथास्थान किया गया है।

संज्ञा प्रातिपदिक

५.० पदग्रामिक संरचना (Morphological Structure) की दृष्टि से कबीर ग्रंथावली में दो प्रकार के संज्ञा प्रातिपदिक मिलते हैं।

१—मूल संज्ञा प्रातिपदिक :

२—व्युत्पन्न संज्ञा प्रातिपदिक :

५.१ (१) मूल संज्ञा प्रातिपदिक—वे पद जिनमें कोई संज्ञावाचक व्युत्पन्न प्रत्यय नहीं जुड़ता। अर्थात् अपने मूल रूप में ही वे संज्ञा (पदतालिका) के अन्तर्गत आते हैं।

यथा— राम

नाम

काम

धाम

५.२ (२) व्युत्पन्न संज्ञा प्रातिपदिक वे पद हैं जिनमें एक या एक से अधिक संज्ञा-वाचक व्युत्पन्न प्रत्यय जोड़ कर संज्ञा प्रातिपदिक का निर्माण किया जाता है। कबीर ग्रंथावली में संज्ञा, विशेषण और क्रियाप्रापदिकों में—आ,–ई,–आई,–इया, –ता, –पन, पौ, –एरा, –अन, –वन, ओरी, –आर, –आरी, –ऊ, –रा, –ड़ा, –क, –औना, –ऐना,–इया आदि व्युत्पादक प्रत्यय जोड़ कर व्युत्पन्न संज्ञा प्रातिपदिकों का निर्माण किया गया है, जिनका विस्तृत विवेचन प्रस्तुत प्रबन्ध में अध्याय—अनुच्छेद ४.२१ में किया गया है।

अन्त्य ध्वनिग्राम के अनुसार संज्ञाप्रातिपदिकों का वर्गीकरण

५.३ किसी भाषा के पदग्रामिक गठन में प्रत्यय प्रक्रिया का विशेष महत्व है। प्रत्यय प्रक्रिया के अन्तर्गत प्रमुखतः व्युत्पादक प्रत्यय और विभक्ति प्रत्ययों की गणना की जाती है। कबीर ग्रन्थावली में व्युत्पादक प्रत्ययों का विवेचन गत अनुच्छेद ४.१ में किया गया

है। विभक्ति प्रत्यय संज्ञा-सर्वनाम विशेषण और क्रिया पदों के अन्त में लगकर व्याकरणिक संबंधों का बोध कराते हैं। जिन पदों में विभक्ति प्रत्यय जुड़ते हैं उनके अन्त्य ध्वनिग्राम की प्रकृति भी महत्वपूर्ण होती है। अतएव कबीर ग्रन्थावली में अन्त्य ध्वनिग्राम के अनुसार संज्ञा प्रातिपदिकों का वर्गीकरण प्रस्तुत करना लाभदायक होगा।

५.३१ जैसा कि पूर्व ही संकेत किया गया है कि कबीर ग्रन्थावली एक छंद-बद्ध रचना है। मात्रा गणना के अनुसार यहाँ प्रत्येक पद या शब्द स्वरान्त ही प्रतीत होता है फिर भी अनेक स्थलों में ऐसा ज्ञात होता है कि पदों या शब्दों को व्यंजनांत मान लेने से न तो छंद लय की हानि होती है और न पदार्थ की। अतएव ह्रस्व अकारान्त शब्दों या पदों को व्यंजनांत मान लेने में कोई हानि नहीं प्रतीत होती है। संगीत में भले ही कोई पद स्वरान्त पढ़ा जाता रहा होगा किन्तु साधारण बोलचाल में संभवतः वही पद व्यंजनांत रहा होगा। भारतीय आर्य भाषा की प्रकृति रही है कि संयुक्त व्यंजन के पश्चात् कोई न कोई स्वर अवश्य आता है। अतएव कबीर ग्रन्थावली में जिन पदों के अन्त में संयुक्त व्यंजन ध्वनि अथवा जिस पद के उपान्त में अनुस्वार युक्त स्वर आया है उस पद को स्वरान्त ही माना गया है। शेष जिन पदों का अन्त संयुक्त व्यंजन में नहीं हुआ उन्हें अधिकांशतः व्यंजनांत ही माना गया है।

पदान्त में प्रयुक्त स्वर ध्वनिग्रामों की दृष्टि से कबीर ग्रन्थावली में प्रायः प्रत्येक स्वर में अन्त होने वाले संज्ञा प्रातिपदिक मिलते हैं।

५.३२ अकारान्त प्रातिपदिक

अंक	—सा. ४.२०.२, ९.२६.१
अंक	—प. ११९.१०, १६०-७
अंत	—प. ९-४, सा. २.१६.१
अंध	—प. २१७.५, र. १९.७
अखंड	—प. १४८.६ र. १३-६
अदिष्ट	—सा. १०-१६.२
अनंत	—प. ११२.३
अस्त	—प. ९०.२, १३२.८
आनंद	—पं० १४.३
इन्द्र	—र. १४९.६
इष्ट	—सा. ३२.७.२
खंड	—प. १५७.६
गंग	—र. २४.३
छत्र	—प. १०१.५

जंझ	—	सा. १६.१.१	
डंड	—	प. ६२.६	
डिंम	—	प. ८६.७	
ढंग	—	सा. ६.९.१	
तंत	—	प. १०१.४	
तत्त	—	प. १.८,	सा. ३.३१.१
दंत	—	सा. ११.७.२	
दिन्न	—	सा. २२.६.२	
निकुंज	—	र. १६.२	
पंख	—	प. १-३	
पंच	—	प. ३६.४	
पत्र	—	प. १८.३	
पुंज	—	सा. ९.१२.२	
फंद	—	प. ९४.६	
बंब	—	सा. २५.१९.२	
बिंद	—	प. १२३.६	
बिगंध	—	प. २७.३.२	
मस्त	—	प. ४.६	
रंग	—	प. १.३, १-१०	
लहंग	—	प. २७.७	
संक	—	प. १९४.७	
संख	—	प. ११४.५	
संच	—	सा. ८.१५.२	
संत	—	प. १७.१, १५२.२	
सब्द	—	सा. १०.१४.२	
		सा. २८.८.१	
समुंद	—	प. ३४.७,	प. १५५.७
सिद्ध	—	सा. २०.५.२	
सुद्ध	—	प. ९४.३	

आकारान्त

५.२३ मूलप्रातिपदिक

घोड़' सा. १४.३५.१, प. ४.२, ८९.३

चोला प. ४.७
चेला सा. १६.१
अंधरा सा. १.६.४१
जोलहा र. ४.६
विधिना र. १०.२
चंदा सा. १.२.१
महुआ प. ५६
धूवां – सा. १५.४०.२
लंका र. ३.२
महिमा सा. १.३.१
कला – र. १६

व्युत्पन्न प्रातिपदिक आपा – १५.७५.१

बड़ाइया – २२.८.२
निहकामता – ४.२४.१
दुखिया – प. १९७

५.३४ इकारान्त

मूलप्रातिपदिक

हरि – सा. १.३.२ घटि- प. ७ बार
विरखि – र. ११ सा. प ६ बार
सुन्नि – र. ६.७ घट प. १६
गाइ – र. ५.३ सा. १०
जाति – सा. १.३.१ चौ. र. ८
आगि – सा. २.१३.१ व्युत्पन्न-दाझनि २१-३९.२
जोगिनि – प. १६३
भगपतिनि – " "
भुइं – र. ९.१
बाम्हनि – प. १६०

५.३५ ईकारान्त

जती – १.२९.२
छत्रपती – ४.१०.१
भृंगी – प. १.१

	बैरागी	—	१५.३४.२
	कसाई	—	र. ५.३
	पानी	—	सा. ९.९.१
	छपरी	—	सा. ४.३७.२
	हांसी	—	सा. २.३८.२
	चाँदनी	—	सा. १.२.२
	चैली	—	प. १६०
	भंवरी	—	प. ७५
	जननी	—	र. १७
	प्रिथिमी	—	र. ९.५
	ओबरी	—	सा. २६.२.१
	माटी	—	सा. २.१०.२
व्युत्पन्न	तुरकानी		प. १६३
	भलाई		र. ७२
	दलाली		
	अधिकाई		र. ७.५
	प्रहरी]		र. ७.६

५.३६ उकारान्त

गुरु	प. २.१	(३० बार)
अतिगुरु	प. ९.३	
पिउ	सा. २.३९.२	
रामु	सा. ४.५.१, प. २०.१७.,७८.१ ११३.१ (७ बार)	
	प. २९.२, १९६.२, २००-६	
राउ	चौ. र. ८.२	
घाउ	२.२.२	
गांउ	प. १०५	
मनु	प. १०.१, २५.३	(९ बार)
	(मन—९९ बार)	
अनंगु	प. १२१.२	
असनानु	८२.४,१३०-१२ (२ बार)	
	(असनान २ बार)	

असमानु	प. १६.३	(१ बार)
	(असमान प. २०.७)	
आजु	सा. २.१२.२	(४ बार)
	(आज २ बार)	
	(आजि २ बार)	
आपु	प. ६८.१०	(११ बार)
	(आप २३ बार)	
आसु	प. ८२.३	(१ बार)
	(आस—१५ बार)	
	(आसा—१९ बार)	
इहु—	प. २२.१, ३९.८	
	(इह २ बार)	
	(इहिः ५ बार)	
इसु	प. ४३.२	
	(इस—५ आवृत्ति)	
उदरु	प. १९६.५	
	(उदरि—२ बार)	
	(उदर—३ बार)	
उसु	२१.२.२	(१ बार)
	(उस ८ बार)	
एकु	प. १२६.२	(३ बार)
	(एक—९८ बार)	
एहु	चौ. र. ८.२	(१ बार)
	(एह ४ बार)	
	(एहि ७ बार)	
ओहु	चौ. र. १.६	(५ बार)
	(ओह—१ बार)	
काजु	प. ७१.२, १२६.१	
	(काज ४ बार)	
कामु	प. २५.२, ५६.६, ७७.३	
	(काम ३२ बार)	
कालु	प. ७४.३, ८६.८	

(काल ४० बार)

किसु	प. ११३.६	
	(किस ११ बार)	
क्रोधु	प. १७७.३	
	(क्रोध १३ बार)	
गगनु	प. १५६.२	(४ बार)
	(गगन १९ बार)	
गरवु	सा. १५.२२.१	
	१५.२३.१	
	१५.२४.१	
	(गरव—५ बार)	
गुनु	प. १९१.३	
	(गुन—४२ बार)	
गुरु		(३० बार)
	(गुर—३५ बार)	
	(गुरु—२ बार)	
चंचु	(२८.३, ६२.४, १२४.२)	
	(चंच सा. ३१.२५.२)	
चंदनु	प. ७९.५	(–१ बार)
	(चंदन—१४ बार)	
चितु	प. २१.१०, २९.२	
	(चित्त—१० बार)	
जगु	प. ७९.३	(७ बार)
	(जग—६५ बार)	
जिसु	प. १८७.३	
	सा. १४.२.१	
	(जिस २ बार)	
जोगु		प. ८६.४, १९९.३
	(जोग—१४ बार)	
ततु		प. १३८.१
	(तत—१३ बार)	
तपु		प. २१.१ (७ बार)

		२४.१
	(तन–६३ बार)	
तपु		प. ४६.४ (३ बार)
	(तप–९ बार)	
तिसु		प. १२८.३ (३ बार)
	(तिस–३बार)	
तुझु		प. २३.४
	(तुझ–५ बार)	
दयालु		(प. ३९.१०)
	(दयाल–चौ. २.५.६)	
दासु		प. ४३.७, ५६.८
	(दास–३३ बार)	
दिनु		प. ७०.१
	(दिन–३५ बार)	
दुखु		प. ४३.६, ५३.७
	(दुख–२७ बार)	
दौजकु		प. १९६.२
	(दोजक–१ बार)	
धरमु		प. ४०.८
	(धरम–४ बार)	
नामु		प. २०.९ (३ बार)
	(नाम–५५ बार)	
पगु		प. २१.१
	(पग–६ बार)	
पदु		प. ३२.२–४ बार
	(पद–१९ बार)	

— ऊकारान्त

५.३७	लोहू	र. १-२
	ठाऊँ	र. १०-२
	साधू	र. २.२
(व्युत्पन्न)	नैनूं	प. ४१
	नकटू	प. ४१

		रसनूं	प. ४१
५.३८	एकारान्त	+	+
५.३६	ऐकारान्त	—	
		संसै	प. १६
		आहै (लीन)	१.२४.१
	(व्युत्पन्न)	मुहड़ै	२१.१.१
५.३१०	ओकारान्त	+	×
५.३११	औकारान्त—		
		अंदेसौ	२.१९.१
		संदेसौ	"
		कांदौ	२.१३.१
		वैस्नौ	४.५.१
		कैसौ	३.४.१
		गौ	प. १५१.३
		दौ	२.७.१
		धौं	१६.२.१
		ल्यौ	२६.७.२
	व्युत्पन्न	आपनपौ	२३.७.१

५.४ व्यंजनांत प्रातिपदिक

जैसा कि पिछले अनुच्छेद में संकेत किया गया है कबीर युग में अनेक अकारान्त प्रतीत होने वाले प्रातिपदिक व्यंजनांत हो गए थे। संयुक्त व्यंजन के जिन अकारान्त प्रातिपदिक का अंत नहीं होता उस सब को यहाँ व्यंजनांत माना गया है। जिनकी संक्षिप्त सूची निम्न-लिखित है :—

१.	—क्	एक्	प. २.५		
		अचानक्	सा. १५.२.२		
		अटक्	प. ३४.६		
		अधिक्	प. ७३.६		
		अनिक्	प. २६.११		
		आक्	सा. २९.२२.२		
२.	—च्	कौंच्	प. १२६.२	पोच	र. १६.५
		कींच्	प. १४४.४		
		खरच्	प. ८९.५		

		नीच्	प. १९६.५		
		पांच्	प. ९३.५		
३.	–ट्	अरहट्	१६.३३.१		
		औट्	सा. ३.१०.२		
		औघट	सा. ९.१९.१		
		कपट्	प. १०.६		
४.	–त्	अचेत्	सा. २५.२२.१		
		अतीत्	प. १२३.८		
		अनत्	प. ३८.२		
५.	–प्	अनूप	प. ८०.७		
		अरूप्	र. २.३		
		अलप्	सा. ६.७.१		
		अलोप्	र. १३.२		
६.	–ख्	अलख्	प. १४४.४	पोख्	१६.३७.१
		अलेख्	सा. ९.१० २	धनुख्	१२१.४
७.	–छ्	कुछ्	सा. ९.९.२ ९.९.२०		
		पूछ्	सा. २१.२८.२		
८.	–ठ्	जेठ्	प. १३५.३		
		अठ्	प. २.३१.२		
		अठसठ्	प. ३५.८		
		आठ्	सा. २.४०.२		
		काठ्	प. ७९.५		
९.	–थ्	अकथ्	प. ११७.९		
		अकारथ्	प. ७३.१०		
		अनाथ्			
		जसरथ्	प. २५८.५		
	–फ्	+	+		
१०.	–ग्	अभाग्	सा. १५.३४.१		
		कलियुग्	२१.२६.१		
		खडग्	प. ४-५		
११.	–ज्	अनाज्	र. ९७.६		
		अकाज्	सा. ३.१८.१		

		अचरज्	प. १३३.३		
१२.	–ड्	+	+		
१३.	–द्	अदमुद्	सा. ७.८.१		
		अनहद्	प. ४.७		
		कागद्	प. ३.५		
१४.	–ब्	अजब	प. २.२		
		आब	सा. २६.८.२		
		कतेब्	प. ८१.४		
१५.	–घ्	ऊघ्	प. १४५.६		
१६.	–झ	अबूझ	सा. १४.६.१		
		बाँझ	प. ११८.४		
		बडभुज	प. ६४.३		
		भुझ	सा. ६.२.१ (४ बार)		
	–द्	+	+		
१७.	–ध्	अगाध्	सा. १४.१५.१		
		अपराध्	प. २३.६		
		आध्	प. ३२.१		
१८.	–भ्	गरभ्	प. ३६.३, ९०.४		
१९.	–ल्	अंकमाल्	४.३९.२		
		अंकुल्	प. ९७.५		
२०.	–र्	अंकुर्	प. ११९.५		
		अंगार्	सा. २.५३.१		
		अंतर्	प. १६.३		
२१.	–ड़	चौपड़	सा. १.३२.१	छेड़	सा. १५.१३.१
		अबिहंड़	सा. २९.६.१	जड़्	प. ५५.४
		औघज्	सा. २९.६.१	धड़्	सा. १४.३६.२
		गरुड़	प. १५३.३	वड़	प. २५.३
		उड़्	प. ५१.३		
		ताड़	सा. ३.२.२		
२२.	–ढ़	गढ़	प. २५.१		
२३.	–स्	संदेस्	सा. ६.७.२		
		अकास्	प. १०२.५		

		अमावस्	प. १९६.६
		उपदेस्	प. ८५.१०
२४.	ह्	अंदेह्	प. १३. ३
		अठारह	प. १५५.७
		इह्	प. ११३.६
२५	—य्	गाय् (गोय)	र. १०.८
		हृदय्	प. १४९.९
२६.	—व्	अभाव्	प. १३२.७
		केसव्	प. १६३.३
		जीव	प. ३९.७
		दांव्	सा. १.३३.२
		भाव्	प. ४०.२
२७.	—न्	अंखियन्	सा. २.२६.९
		अकन्	प. १६०.३
२८.	—म्	अधरम्	प. १९१.५
		अनुपम्	सा. ३२.१०.१
		आगम्	प. १०१.३
२९.	—ण्	त्रिगुण	प. ५३.७
		अजांण्	सा. ११.१०.२
		कारण्	प. १४७.५
		गण्	प. १३३.४
३०.	—न्ह	इन्ह	प. २०.४
		कान्ह	प. १३१.६
३१.	—म्ह	तुम्ह	प. १०-१३ (११ बार)
	—ल्ह	+	+

५.५ लिंग

लिंग की दृष्टि से संज्ञा प्रातिपदिक पुलिंग या स्त्रीलिंग के रूप में आते हैं। नपुसंक लिंग कबीर के पूर्व से ही प्राचीन हिन्दी में लुप्त हो चुका था। कबीर ग्रन्थावली में लिंग निर्णय केवल रूपात्मक स्तर पर संभव नहीं है। इसके लिए वाक्यांश या वाक्य की सहायता आवश्यक है ।

कबीर ग्रन्थावली में निम्नलिखित स्वरों तथा व्यंजनों में अंत होने वाले पुलिंग तथा स्त्रीलिंग प्रातिपदिक मिलते हैं ।

५.५१ स्वरान्त पुंलिंग प्रातिपदिक

अन्त्यस्वर	प्रातिपदिक	संदर्भ
—अ	अंध	प. ९७.५
	सिद्ध	सा. २०.५.३
—आ	घोड़ा	सा. १४.३५.१
	चोला	प. ४.७
—इ	हरि	सा. १.३.२
	विरखि	र. ११
—ई	जती	१.२९.२
	पानी	सा. ९.९.१
—उ	गुरु	प. २.१
	पिउ	सा. २.३९.२
—ऊ	लोहू	र. १.२
—ए	×	
—ऐ	संसै	प. १६
	मुहड़ै	सा. २१.१.१
—ओ	+	
—औ	बैस्नौ	सा. ४.५.१
	कांदौ	सा. २.१३.१

५.५२ व्यंजनांत पुंलिंग प्रातिपदिक

अन्त्य व्यंजन	प्रातिपदिक	संदर्भ
—क्	आक्	२९.२२.२
—च्	कीच्	प. १४४.४
—ट्	कपट्	प. १०.६
—त्	अतीत्	प. १२३.८
—ख्	अलख्	प. १४४.४
—छ्	कुछ	सा. ९.९.२
—ठ्	काठ्	प. ७९.५
—थ्	जसरथ्	प. १५८.५
—फ	+	+
—ग्	कलियुग	२१.२६.१
—ज्	अनाज्	र.

–ड्	+	+
–द्	कागद्	प. ३५
–ब्	आब	सा. २६.८.२
–घ्	अघाँ	प. १४५.६
–झ्	बुडभुज	प. ६४.३
–ढ	+	+
–ध्	अपराध्	प. २३.६
–म्	गरभ्	प. ३६.३
–ल्	काल्	प. २०.४
–र्	अंगार्	सा. २.५३.१
–ड्	तरुड़	प. १५३.३
–ढ्	गढ़	प. २५.१
–स्	अकास्	प. १०२.५
–ह्	अंदेस्	प. १३.३
–य्	ह्रिदय	र. १०.८
–व्	केसव्	प. १६३.३
–न्	जैन्	र. ९.७
–म्	अधरम्	प. १९१.५
–ण्	गण्	प. १३३.४
–न्ह	कान्ह	प. १३१.६

५.५३ स्वरान्त स्त्रीलिंग प्रातिपदिक

–अ	गंग	२९.१८.१
–आ	लंका	र. ३.२
	वेस्वा	सा. ३.२०.२
	जिभ्या	सा. २.३६.२
–इ	गाइ	र. ५.३
	थापति	सा. १.११,१-२
	आगि	२.१३.१
	जोगिनि	प. १६३
	भुँह	र. ९.१
–इ	बिरहनि	९.१
	औरति	प. १७७.१२

–ई	छपरी	४.३७.२	अधिक प्रयोग
	चाँदनी	१.२.२	
	बाती	१.१५.१	
	चेली	प. १६०	
	जननी	र. १७	
	प्रिथिमी	र. ९.५	
	ओवरी	सा. २६.२.१	
	माटी	प. ६५.३	
–उ	चंचु	प. २८.३	
	आसु	प. ८३.३	
–ऊ	रसनू	प. ४१	
–ओ	+	+	
–ए	+	+	
–ऐ	जसवै	र. ३.३	
–औ	दौ	सा. २.७.१	
—	धौं	सा. १६.२.१	
	लौं	सा. २६.७.२	

५.५४ व्यंजनान्त स्त्रीलिंग प्रातिपदिक

–क्	सटक्	प. ३४.६
	ेक्	प. १७८.१०
–च्	लालच्	प. ७४.३
–ट्	ओट्	सा. ३.१०.२
–त्	बरात्	प. ७३.३
	अंगात्	प. ७३.९
–ध्		
–ख्	धनुख	प. १२१.४
–छ्	पूँछ	सा. २१.२८.२
	मूंछ	सा. २४.१४.१
–ठ्		
–थ्		
–फ्		
–ग्		

–ज्		
–ड्	भेंड़	प. १७४.३
	रांड़	१०९.६
–द्	नींद्	
–ब्		
–घ्		
–झ	बाँझ	प. ११८.४
–ह्		
–व्		
–भ्		
–ण्		
–न्	अंखियन्	सा. २.२६.९
	डाइन्	प. २.५
–म्		
–न्ह्		
–म्ह		
–ल्	सोल्	प. १७
	झाल्	प. १३४.८
–र	झनकार्	प. १३०.५
–ड़ ढ़	जड़	प. ५५.४
–स्	अमावस्	प. १९६.६
	भैंस	प. ११४.३
–ह्	हँस	सा. ३३.६.२
–य्	गाय्	र. १०.८
–व्	नाँव	प. २८.१

५.५५ स्त्रीलिंग प्रत्यय

कबीर ग्रन्थावली में निम्नलिखित स्त्रीलिंग प्रत्यय मिलते हैं :—

प्रत्यय		मूलप्रातिपदिक प्रत्यय	व्युत्पन्न स्त्रीलिंग प्रातिपदिक	संदर्भ
१–	–ई	छपरा+ई	=छपरी	सा. ४.३७.२
		भंवरा+ई	=भंवरी	प. ७५
		अंधियार+ई	=अंधियारी	सा. १.४.१
२–	–इ	भयावन +इ	=भयावनि	प. १२

		बाम्हन	+इ	=बाम्हनि	प. १६०
३–	–आनी	तुरक	+आनी	=तुरकानी	प. १६३
४–	–इनी	तुरक	+इनी	=तुरकिनी	प. १६०
		दुलहा	+इनी	=दुलहिनी	प. ५
५–	–इनि	भगत	+इनि	=भगतिनि	प. १६१
		जोगी	+इनि	=जोगिनि	प. १६१
६–	–नी	चांद	+नी	=चांदनी	सा. १.२.१
७–	–इया	लहुरा	+इया	=लहुरिया	

५.६ संज्ञा विभक्ति––बहुवचन बोधक विभक्ति

संज्ञा के मूलरूप एकवचन के रूप में बहुवचन बोधक विभक्ति प्रत्यय लगा कर मूल बहुवचन तथा विकृत बहुरूप वचन के रूप निर्मित होते हैं। कबीर ग्रन्थावली में व. व. बोधक निम्नलिखित प्रत्यय प्राप्त होते हैं।

५.६१ मूलरूप बहुवचन प्रत्यय

पुलिंग व्यंजनान्त तथा कुछ स्वरान्त एकवचन रूपों में शून्य प्रत्यय लगा कर बहुवचन का बोध कराया जाता है। वाक्य स्तर तथा बहुवचन बोधक क्रिया अथवा विशेषण के आधार पर ही बहुवचन का बोध होता है।

(१) प्रत्यय ०	पंडित + ०	पंडित	=	पंडित (मूल) र. ७.१
"	जतन् + ०	जतन	=	जतन (अनेक) २.१०.३
"	दिन् +०	दिन्	=	दिन (गए) २५.१९.१
	गुन् +०	गुन्	=	(बहुत) गुन २.४४.१
"	साखा +०	साखा	=	साखा (तीनि) र. १०.२
"	दीवा +०	दीवा	=	दीवा (चौसठि) १.२.१

५.६२ स्त्रीलिंग व्यंजनांत संज्ञा प्रातिपदिक में 'ए' जोड़ कर बहुवचन रूप निर्मित होते हैं––

– ऐं बात+ऐं = बातें––कबीर अपने जीवतें ए दोइ बातें धोइ

५.६३ (३) पुलिंग आकारान्त––रूपों में––ए-ऐ प्रत्यय लगाकर बहुवचन बनाते हैं

– ए कापरा + (बड़ा) +ए–कापरे––ऊजल पहिरहिं कापरे

सा. १५.२६.१

– ऐ सदका+ऐ — सदकै सतगुरु कैसदकै किया––सा. १.२०.१

आकारान्त विशेषण तथा क्रिया में बहुवचन का बोध कराने के लिए अधिकांशत: यही प्रत्यय लगता है––

क्रिया—

गया+ए = गए दिन गए, सा. २५.१९.१
भया+ए = भए ते भए पतंगा र. ११
आया+ए = आए प्रीतम आए प. ६.१

विशेषण—

अनचीन्हां+ए=अनचीन्हें अनचीन्हें ते भए पतंगा र. ११
पियारा+ए =पियारे रामपियारे प. ७.१
बड़ा+ए =बड़े बड़े बड़ों की लाज सा. १५.६८.२

५.६४ (४) स्त्रीलिंग ईकारान्त रूपों में (आं) इयां प्रत्यय जुड़ता है—
यथा—

कली+ (आं)=कलियाँ माली आवत देखि कै कलियाँ करैं पुकार
सा. १६.३४.१

आँखी+" इयां आखियां = आंखड़ियां, रतनालियां सा. १६.८.२
आखड़ी+" इयां = आंखड़ियां—रतनालियां सा. १६.८.२
डाबरी+" इयां = डाबरियां डाबरियां छूटै नहीं— सा. १६.१०.२

५.६५ विकृत रूप बहुवचन प्रत्यय

कबीर ग्रन्थावली में मूल रूप एकवचन रूपों में निम्नलिखित प्रत्यय जोड़ कर पुलिंग स्त्रीलिंग विकृत रूप बहुवचन रूप निर्मित किए जाते हैं।

५.६६ प्रत्यय

(५) –अन् ग्वाल+अन् =ग्वालन्– ना वो ग्वालन कै संगि फिरिया र.३.४
– " कुंजड़ा+अन्=कुजड़न्– जहं कुंजड़न की जाति सा. १८.१२.२
मुरदा+अन्=मुरदन् – संतो ई मुरदन कै गांउं प. १०५.१
" बात+अन्=बातन् – बातन ही असमांनु गिरावहिं प.१६७.१
" दिन+ अन् – दिनन् – बहुत दिनन मैं प्रतीम आए प. ६.१
" हंस+ अन् = हंसन् – सा. ४.११८.२
" सिंह+अन् = सिंहन् " "
" आंखी+अन्= अंखियन तौ झांई परी — सा. २३.६.१

५.६७ (६)

दास +अनि=दासनि—दासनि का परदास सा. १९.१४.१
ओस +अनि=ओसनि– ओसनि प्यास न भागई – ३.१९.२
लोग +अनि=लोगनि— लोगनि सौं – प. १६७
मिरग+अनि=मिरगनि— प. ९१

५.६८ (७)–इन– मोती+इन =मोतिन– हरि मोतिन की माल सा. २८.५.१

५.६६ (८)—आं— गुण+आं = गुणं   गुणां का भेद   प. १७६
  " तुरक+आं= तुरकां—   प. १७६
  " भगत+आं = भगतां—   प. १६०
  " करम+ आं = करमां   प. १५२
— आं चोर+आं = चोरां   सा. २१.१५.१ चौरां सेती गुज्झ
— कर+आं = करां   प. १५८
किसनवा+आं =किसनवां प. ४१ पंच किसनवां भागि गए हैं
बात+आं = बातां — सा. २५.६.१ यह बातां की बात
अथवा
यह बातों की बात

५.६।१० (९)

— औं हाथ+औं=हाथौं   १५.१२.२ नांगे हाथौं ले गए
  " चरण+औं=चरणौं   हरि चरणों चित लाइए
— औं बड़ा+औं=बातौं   २५.१७.१ यह बातौं की बात

५.६।११ (१०) केवल अनुस्वार (ं)
करें+ ं =करें   १६.३४.१ कलियां करैं पुकार

५.६।१२ (१०) संज्ञा रूपों में कुछ विशिष्ट शब्द जोड़कर भी बहुवचन का बोध कराया जाता है। यथा:—

संज्ञा—शब्द

गन—गंध्रप=गन — गनगंध्रप मुनि अंत न पावा र. १३
— जन—मुनि+जन— सुरनर थाके मुनिजना — सा. १०.११.११
— लोग बटाऊ+लोग—लोग बटाऊ चल गए   सा. १४.३.२

५.७ कारक रचना

संज्ञा (सर्वनाम् विशेषण) पद वाक्य में अन्य पदग्रामों से संबंध प्रकट करने के लिए जो रूप ग्रहण करता है उस रूप को कारक कहा जाता है। संस्कृत काल में एक संज्ञा पद के २४ भिन्न-भिन्न रूप (कारक ८ वचन ३) बनते थे, प्राकृतकाल में इन रूपों की संख्या १३ और अपभ्रंश में ५ या ६ ही रह गयी। आधुनिक भारतीय आदि भाषाओं के विकास के साथ ही साथ १० वीं शती ई० के पश्चात् अपभ्रंश के ये रूप भी इतने घुलमिल गए कि एक संज्ञा पद के केवल २ ही रूप मिलने लगे।

१—**मूलरूप** या **निर्वैभिक्तिक** रूप अथवा शून्यप्रत्यय युक्त रूप जो प्राचीन कर्ता कारक में प्रयुक्त होता रहा।

२—विकृत रूप (या विकारीरूप अथवा तिर्यकरूप) जिसमें अन्य कारकों

की विभक्तियाँ लगाई जाती थीं। इन दो रूपों से ८ भिन्न-भिन्न कारकों के अर्थ प्रकट करने के लिए उत्तर अपभ्रंश काल से विकृत रूप के साथ अन्य पद या पदांश जोड़े जाने लगे। आधुनिक कारक इन्हीं जोड़े जाने वाले पदों या पदांशों के अर्द्धशैर्षांश हैं जो इतने घिस पिस गए हैं कि अब अपना स्वतंत्र अर्थ भी खो बैठे हैं *

कारक रचना की दृष्टि से कबीर ग्रन्थावली में दो पद्धतियां मिलती हैं। १—अपभ्रंशकालीन स्थिति—जिसमें ८ कारकों की अर्थ सूचक विभक्तियाँ स्वतंत्र पदग्राम से संयुक्त होकर प्रयुक्त होती हैं। जिन्हें हम संयोगीकारक विभक्ति की संज्ञा दे सकते हैं। २—वियोगात्मक कारक विभक्ति पद्धति जिसमें विभक्ति प्रत्यय मूल पदग्राम से संयुक्त होकर नहीं आता बल्कि वियोगात्मक रूप से जुड़ता है * प्रथम पद्धति में विभक्तिमिश्रित पदग्राम (Complex Morphem) मूल पदग्राम + विभक्ति (का एक अक्षरात्मक अंग) (Syllabic Constituent) इन जाती है जबकि द्वितीय पद्धति में विभक्ति+मूल पदग्राम मिल कर एक मिश्रित पदग्राम का निर्माण नहीं करते बल्कि एक ही अनुक्रम में घटित होने पर भी दोनों की अक्षरात्मक स्थिति अलग-अलग रही है।

५.७१ कबीर ग्रन्थावली में मूल रूप एकवचन स्वरांत और व्यंजनांत दोनों रूपों में मिलते हैं। इनका विवेचन विस्तार से अनुच्छेद ५.० में किया गया है। मूल बहुवचन प्रत्यय का स्पष्टीकरण भी गत ५.६ अनुच्छेद में हुआ है।

५.७२ वि० ए० व० रूप की रचना अधिकांशतः मूल रूप मे शून्य (०) प्रत्यय जोड़ कर भी की जाती है अर्थात् निर्विभक्तक रूप में ही ये पद वि० ए० व० का निर्माण करते हैं—

मूलरूप+शून्य-प्रत्यय—	वेद+० =वेद	सा. १.१४.१
	राम+०=राम	” १.१.१
	प्रेम+०=प्रेम	” १४.३५.१
	चंदा+०=चंदा	” १.२.१
	पाला+०=पाला	२५.२४.१
	हरि+०=हरि	१.३.१-२
	छत्रपति+०=छत्रपती	४.१०.१
	प्रीति+०=प्रीति	१.२१.२
	कामी+०=कामी	प. १३
	साईं+०=साईं	२१.१५.१
		(साईं सेती योगिया)

जननी + ० = जननी   र. १७

(जननी उदर जनम का सूत)

सतगुरु + ० = सतगुरु   १.१३.१

धौं + ० = धौं   १६.२.१

५.७२ मूल रूप + ए ऐ

पैंडा + ए = पैंड़े   सा. १.१४.२

अंधा + ए = अंधे   १.६.२

प्यासा + ए = प्यासे   प. १३

सूवा + ए = सूवे   प. २६.६.२

विकृत रूप बहुवचन के विभक्ति प्रत्ययों का विवेचन अनुच्छेद ५.६५ में किया गया है।

कारक-विभक्ति

निर्विभक्तिक या संयोगी विभक्ति

५.७३ कर्ता (संज्ञा : सर्वनाम, विशेषण) प्रातिपदिक में निम्नलिखित संयोगात्मक विभक्तियाँ जोड़ कर कर्ताकारक का अर्थ प्रकट किया जाता है।

५.७३१

विभक्ति प्रत्यय		संदर्भ	उदाहरण
शून्य (०)	गुर + ० =	प. १.१	हमारे गुर बड़े भृंगी
	नाला + ० = नाला	प. १.२	नदी नाला मिले गंगा
	नदी + ० = नदी		
	मनु + ० = मनु	प. ५६	अवधू मेरा मनु मतवारा
	हरि + ० = हरि	प. ११.१	हरि मोरा पिउ मैं हरि की बहुरिया
	डांइनि + ० = डांइनि	प. २.२	डांइनि एक सक्ल जग खाये
	जो + ० = जो		जो पहिले सुख भोगिया
	बटाऊ + ० = बटाऊ		लोग बटाऊ चल गए
	यहु + ० = यहु	९.६	हमिहिं कहा यहु तुमहिं बड़ाई
	हम + ० = हम	सा. ५.५३.१	हम घर जारा आपना
	कलियां + ० = कलियां	सा. १६.३४.१	कलियां करें पुकार
	किनहुं + ० = किनहुं	सा. १.७.१	संसा किनहुं न खद्ध
	जिन + ० = जिन	सा. ४.४५.१	राम नाम जिनि चीन्हिया

— ऐ — जब सकर्मक क्रिया, भूतकालिक कृदन्तीय रूप के साथ कर्मणि प्रयोग में रहती है तब मूल संज्ञा प्रातिपदिक में विकृत रूप बोधक संयोगी — ए — ऐ विभक्ति जोड़ दी जाती है — जहाँ पर आज आधुनिक हिन्दी में — ने परसर्ग

जोड़ दिया जाता है।

प्रत्यय		
+ ऐ	जसवा + ऐ = जसवै	ना जसवै लैगोद खिलावा र. ३.३
+ऐ	कबीर + ऐ = कबीरै	सो दोस्त कबीरै कीन सा. २९.३.२
+ऐ	संसै + ऐ = संसै	संसै खाया सकल जग सा. १.७. १
+ऐ	सूवा + ऐ = सूवै	सुवै सेंबल सेइया सा. २६. २. २

कर्म-सम्प्रदान

५.७३२ संयोगी विभक्ति : कबीर ग्रन्थावली में कर्म-सम्प्रदान का द्योतन करने के लिए निम्नलिखित संयोगी विभक्तियाँ मिलती हैं—

प्रत्यय	सिद्धपद	संदर्भ	उदाहरण
१. शून्य प्रत्यय०	राम + ० = राम	प. २०	राम सुमिर रामसुमिर
	जीव + ० = जीव	र. ८.२	जीवहिं मारि जीव प्रतिपारै
२. " +इ	तीरथ + इ = तीरथि	प. ३०	अपराधी तीरथि करै
३. +उ	सच + उ = सचु	प. ३६	कबहूँ सचु नहिं पायौ
४. +ऐ	सब + ऐ = सबै	र. १०.२	विधिना सबै कीन्हि एक ठाऊ
	चित्र + ऐ = चित्रै	प. २०	तजि चित्रै चेतहु चितकारी
५. +हिं	कमान + हिं कमानहिं =	सा. २२.४.२	चला कमानहिं डारि
	सरप + हिं = सरपहिं	सा. ५.१२.१	सरपहिं दूध पिलाइए
	जनम + हिं = जनमहिं	१५.६.१	मानुख जनमहिं पाइकै
	खसम + हिं = खसमहिं	चौ. र. ७	खसमहिं छांड़ि चहूँदिसि घावा
	जीव + हिं = जीवहिं	र. ८.२	जीवहिं मारि जीव पति पारै
	जिस + हिं = जिसहिं	सा. ८.८.१	जिसहिं न कोई
	तिस + हिं = तिसहिं	"	तिसहिं तू
	हम + हिं = हमहिं	प. ६	हमहिं कहा यहु तुमहिं बड़ाई
	तुम + हिं = तुमहिं	"	

प्रत्यय		
+ऐ	जसवा + ऐ = जसवै	ना जसवै लै गोद खिलावा र. ३.३
+ऐ	कबीर + ऐ = कबीरै	सो दोस्त कबीरै कीन सा. २९.३.२
+ऐ	संसै + ऐ = संसै	संसै खाया सकल जग सा. १.७.१
+ऐ	सूवा + ऐ = सूवै	सूवै सेंबल सेइया सा. २६.२.२

करण-अपादान :

५.७३३ प्रत्यय	सिद्धपद	संदर्भ	उदाहरण
१. +०	विरह+०=विरह		जियरा योंही लेहुगे विरह तपाइ तपाई
२. + हिं	मन+हिं=मनहिं	सा. ३१.१८.२	मनहिं उतारी झूटि करि
३. +ऐ	भूल+ऐ=भूलै	र. १०.५	भूलै भरम परै महि कोई
	गल+ऐ=गलै	प. १९	लाग गलै सुनु बिनती मोरी
	पुन्न+ऐं=पुन्नै		पुन्नै पाइ देहरे ओछी ठौरन खोइ
४. +आं	मुख+आं=मुखां	प. १६	तब प्रिय मुखां न बोला

५.७३४ संबंध कारक

संयोग विभक्ति

प्रत्यय	सिद्धपद	संदर्भ	उदाहरण
+ऐ	देव+ऐ=दैवै	२.३.३	देवै कोखिन अवतरि आवा
+ऐ	सोन+ऐ=सोनै	प. १६	जस सोनै संग सुहागा

५.७३५ अधिकरण

संयोगी विभक्ति

प्रत्यय	सिद्धपद	संदर्भ	उदाहरण
१. +०	भुंइ+०=भुई	र. ९.१	बिरहिन उठि उठि भुंइ परै
	माटी+०=माटी	सा. २.१०.२	माटी मिलि गया
	अंबरि+०=अंबरि	२.३.१	अंबरि कुंजा कुरलिया
२. +इ	घर+इ=घरि	र.	ना जसरथ घरि अवतरि आवा
	भरम+इ=भरमि	२.१०.५	भूलै भरमि परै मति कोई
	मन+इ=मनि	सा. २१.२९.१	कबीर मनि फूला फिरै
	कर+इ=करि	१.२१.१	सतगुर लई कमनि करि
	घट+इ=घटि	२.१६.२	जिहिं घटि विरह न संचरै
	अकास+इ=अकासि	२.२६.२	चंदा बसै अकासि
	नैनन+इ=नैननि	११.१३.२	नैननि प्रीतम रमि रहा
३. +ऐ	द्वार+ऐ=द्वारै	प. ३३	द्वारै रचिहैं कथा कीरतन
४. +ऐं	हाथ+ऐ=हाथै	सा. ३.२३.२	
	हिरदा+ऐ=हिरदै	सा. २.४४.१	
	चौहाट+ऐ=चौहटै	सा. १.३२.१	
	रुख+ऐ=रुखै	सा. २.५४.२	
	सुपिन+ऐ=सुपिनैं	र. १९	
	बैराग+ऐ=बैरागैं	सा. ३२.१३.२	

	ग्रिह+ऐं=ग्रिहै	सा. ३२.१३.२	
+ए	करेजा+ए=करेजे	सा. १.९.२	परा करेजे छेक
		२.२.२	किया करेजे घाउ
	मिनार+ए=मिनारे	सा. २६.३.१	
	सुपिन+ऐं=सुपिनैं	सा. ३१.१.२	
	द्वार+ए=द्वारै	र. १.५	
५. +ओं	चरण+ओं=चरणों	सा. २५.११.२	हरि चरणों चित रखिए

विशेष:—संयोगी विभक्तियों के विवेचन से यह ज्ञात होता है कि कबीर-ग्रन्थावली में इनका पर्याप्त प्रयोग हुआ है। व्यापकता की दृष्टि से इन विभक्तियों में + हिं विभक्ति सर्वव्याप्त सी है क्योंकि लगभग सभी कारकों के अर्थ द्योतन में इसका या इससे विकसित रूप 'ए', ऐ का प्रयोग हुआ। जैसा कि पहले ही अनुच्छेद ५.७ में संकेत किया गया है—संयोगी विभक्ति सिद्धपद का एक अक्षरात्मक अंग (Syllabic Constituent) बन जाती है अतएव–'हि हिं' जब अपने पूर्व अ के बाद आती है तब अहि-अहिं सुनाई पड़ता है—कालान्तर में 'ह' के लोप से इसी अहि-अहिं से ऐ, ऐं विकसित हुए जिसने संभवतः एकवचन विकृत रूप प्रत्यय 'ए' को जन्म दिया। इस प्रका यह स्पष्ट हो जाता है कि कबीर ग्रन्थावली में अधिकांशतः पदों की प्रवृत्ति दो ही कारकों की ओर विकसित होती हुई दृष्टिगत होती है—१—मूल रूप २—विकृत रूप।

वियोगात्मक कारक विभक्ति —–कारक परसर्ग

५.७४ कारक परसर्ग

गत अनुच्छेद में संयोगी विभक्तियों के विवेचन से यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि कर्ताकारक के अतिरिक्त अन्य कारकीय रूपों में अहि अहिं अथवा हि, हिं या उसके विकसित रूप ऐ-ऐं > ए की एकरूपता मिलती है। इस एकरूपता के कारणस भी कारकों के अर्थ अलग-अलग स्पष्ट रूप से समझने में उलझन पैदा होने लगी होगी संभवतः इसी उलझन को दूर करने के लिए अपभ्रंश काल से ही कारक परसर्ग जोड़े जाने लगे होंगे। कबीर ग्रन्थावली में बहुतायत से ऐसे संज्ञा परसर्गों का प्रयोग हुआ है जिससे यह सिद्ध हो जाता है काव्य रचना में कबीर में वियोगात्मक पद्धति की ही प्रधानता मिलती है।

५.७४१ कर्ताकारक परसर्ग,

आधुनिक हिन्दी में सप्रत्यय कर्ता का प्रयोग सकर्मक क्रिया के भूत निश्चयार्थक रूप के साथ संज्ञा के विकृत रूप में 'ने' परसर्ग का प्रयोग करके होता है। कबीर ग्रन्थावली में कारक परसर्ग 'ने' का प्रयोग नहीं मिलता है। जब सकर्मक क्रिया भूत निश्चयार्थक रूप में कर्मणि प्रयोग के साथ आती है तब केवल संज्ञा का विकृत रूप ही प्रयुक्त होता है।

यथा—सो दोस्त कबीरै कौन—आदि प्रयोग
जसरथ कौंनै जाया—प. १५८

कर्म-सम्प्रदान

५.७४२ (१) +कौं (संप्र०) र. ११ कहन सुनन कौं कीन्ह जय
" " सा. १.१.१ दैबे कौं कुछु नाहि
(कर्म) प. १३.३ मोकौं यह अन्देह रे
(संप्र०) र. १.५ मग भोजन कौं प्ररिष कहावा
(कर्म) प. ८.३ समपरिहरि ताकौ मिलै सुहाग
(२) +कउं (कर्म) प. २६ मोकउं कहा पढ़ावसि आल जाल
(३) +कौ प. १३.६ ज्यों कामी कौ कामनि धारी
प. १९.६ काहे कौ मारे
प. ३२.६ चौथे पदकौ जो जन चीन्हे
प. ६२.१ झूटे ताकौ का गरबावै
प. ६३.४ या देही कौ लोचैं देवा
प. ६५.७ सूमहिं धन राखन कौ दीया
प. ७६.२ तिनहीं कौ दौजग
सा. ४.४२.१ स्वारथ कौ सब कोइ सगा
(४) +कों
(५) +को— १५.८९.१ बहते को बहि जान दे

५.७४३ करण-अपादान
(१) +से सा. ८.१८.१ बहु बंधन से बांधिया एक
बिचारा जोउ
प. १५.५ छोड़यौ गेह नेह लगि तुमसे
(२) +सौं सा. १.२०.२ कलियुग हमसौं लड़ि पड़ा
(११० बार)
प. १३ हरि सौं कहै सुनाइ रे
प. ३५.४, ९०.४,
प. १२४.३, १४३.१, १४६.२, १४७.१
१४८.४, १४९.२, १९५.९
(३) +सूं प. १६५.४ हमसूं बाधिनि न्यारी
(४) +सेतीं सा. २१.१५.१ साईं सेतीं चोरिया
(११ बार) चोरां सेतीं गुज्झ

(५)+सनि	र. ६.७	तब कासनि कहिए जाइ
(६) +तैं		जिन मानिश तैं देवता किया
+(७४) बार		
(७) +तैं		तेहि वियोग तैं भए अनाथा
		कबीर हम समेत बुरे

५.७४४ संबंध कारक आवृत्ति

(१) का—	प. १६.१	मेरै मन का संसै भागा
पद—४३	प. १७.३	सहज सिंगार प्रेम का चोला
र. ९	प. २७.४	तीरथ बड़ा कि हर का दपस
सा. ८३	प. २८.४	खीर नीर का करै निबेरा
(१३५ बार)	प. ३०.२	खसम का नाउं
	प. ३०.४	मति का धीर
	प. ३८.१	तब काऊ का कौन निहोरा
	प. ४१.२	घरी घरी का लेखा माँगै
	प. ४६.२	तप का हीनाँ
	प. ४८.५	ता मन का कोई जानै न भेव
	प. ५१.३	गुर का सबद
	प. ५७.३	पिरथी का गुन
	प. ६२.६	जम का डंड
	प. ६५.८	" " डंडु
	प. ७४.४	जोबन का गरब
	प. ७५.३	पुहुप का भोग
	प. ८४.७	हरि का दास . . .
	प. ८७.३	दिल का विकरु . . .
	प. ८७.१०	करम करीम का
	प. ८९.६	मियाँ का डेरा
	प. ९७.९	जैसा रंग कुसुंम का
	प. १०८.२	गोयर पद का करै निबौरा
	प. १०८.६	पंखी का खोज
		मीन का मारग
	प. ११९.३	बाँझ का पूत

प. १२८.३ काल पुरख का मरदैमान
प. १३१.११ तुरसी का विरवा
प. १३४.६ अलौती का चढ़ा बेरंडै
प. १४७.६ नाम साहेब का
प. १५२.१० अमल मिटावौं तासु का
प. १५५.१३ जूरजोधन का मान
प. १५८.७ क्रिसन दोऊ का मीरा
प. १६२.३ रखवारे का होई विनास
प. १६३.८ साहेब का बंदा
प. १७५.३ कागद का घर
प. १७६.१ गुणाँ का भेद
प. १७७.१३ पुंगराम लह राम का
" " १० हरी का बासा
प. १८१.५ माटी का पिंड
प. १८३.२ जीव का मरम
प. १८९.५ कबीर का मरम
प. १९१.३ वेद पुरान पढ़े का क्या गुन
प. १९५.१३ साहेबा का बंदा
र. ३.२ लंका का राव
माँ का उदर
र. ५.२ पिता का विंदु
र. ९.२ सीव का नसौनां
र. १०.६ घर का सुत
र. १२.८ राम का सुमिरन
र. १५.५ मरम का बाँधा
र. १७.३ जनम का सूता
र. १८.७ सुख सागर का मूल
र. २०.४ तरित्रै का बिचारा करहु
सा. १.२०.१ दिल अपनी का सांच
सा. १.२९.२ जती का स्वांग
सा. ३३.१ प्रेम का पांसा
सा. ३४.२ प्रेम का बादल

सा. २.११.१ सरप का भेरा
सा. २.२१.१ रामं का नांउं
सा. २.२२.१ तन का दीवा
सा. २.३१.२ पीव का सबद
सा. ४०.२ आठ पहर का दांझना
सा. ४६.२ सूने घर का पाहुंना
सा. ३.१८.२ ब्रमाँ का आसन
सा. २०.१ आन का जाप
सा. ४.१७.२ संत का पला
सा. ४.२४.२ संतन का अंग
सा. ४.२६.१ हरि का भावता
सा. ४.३५.२ तिनउं का भाग
सा. ५.६-१,२ राम भगति का मीत
सा. ५.१३.२ तास का घर
सा. ६.१.१ रांम का कूता
सा. ७.६.२ कस्तूरी का मिरग
सा. ८.१६.२ करतार का संग
सा. ९.२.१ तेज का उनमांन
सा. ९.१५.१ अनंत का तेज
सा. ९.२०.२ मन का चेता
सा. २२.१ कबीर का करद
सा. १०.२.१ कबीर का घर
सा. १०.६.१ गाँव का नांव
सा. १०.१६.१ सुरति का जाल
सा. ११.८.१ संम्रथ का दास
सा. १२.१.२ कुम्हार का कलस
सा. १३.२.२ तेलि का गुन
सा. १३.३.२ बाँझ का पूत
सा. १४.१५.२ प्रेम का स्वाद
सा. १४.१८.१ कायर का कांम
सा. १४.२४.१ पिउ का सनेह
सा. १४.२७.२ खेत परन का जोग

सा. १४.३१.१ प्रेम का घर
सा. १४.३१.१ खाला का घर
सा. १५.२.१ काल्हि का साज
सा. १५.४.२ चारि दिवस का पेखना
सा. १५.१०.१ गाँउं का नाँव
सा. १५.१७.१ चौर का घाट
सा. १५.५०.१ कपट का हेत
सा. १५.६९.२ मीच का लेखा
सा. १५.७५.१ मन का आपा
सा. १६.६.२ देह धरे का दंड
सा. १६.९.२ करीम का पाँसा
सा. १४.१ पाँच तत्व का पूतरा
सा. १६.१६.१ काल का चबैना
सा. १६.१७.२ जल का बुदबुदा
सा. १६.४०.२ कौड़ी का नाल
१७.८.२ काल का पांन
१८.११.२ जो पुरब का होइ
१९.५.१ मरनै का चाउ
१९.६.१ बाट का रोड़ा
१९.१४.१ संत का चेरा
१९.१४.१ दासनि का परदास
२१.१.२ घर का खेत
२१.४.१ जगत का गुरु
२१.१७.१ सेंत का स्वामी
२१.१८.१ कलि का स्वामी
२१.२०.१ कलि का बाम्हन
२२.३.१ गाँठि का ज्ञान
२२.५.१ दूख का विनास
२२.१४.१ पानी का नेह
२४.८.१ काजर ही का कोट
२४.१५.२ कालर का खेत
२४.१६.१ भगति का रंग

२७.१.२ तत का छरनहार
२५.८.१ जीव का भरम
२५.१७.२ निरवार का गाहक
२५.१८.१ भगति का हुलास
१९.५.१ रूप का सरबस
२९.४.२ बिना मूंड का चौखा
२९.२२.२ तिवास का दूव
३०.१६.१ नरक का कुंड
३०.२०.१ भले बुरे का बीच
३१.१३.२ जबांसा का रूख
सा. ३१.२१.१ त्रिविध का तरवर
३२.२.२ दावा किसही का नहीं
३२.७.२ इष्ट का भरोसा
३३.३.२ प्रेम का आखर

(२) + क
प. १८८ तू ब्रांम्हन मैं काशीक जोलहा
प. ११०.१ मैं का तौं हजारीक सूत

(३) + के ('का' का विकृत रूप)
प. ६९ आवृत्ति राम नांम के पटंतरै देबै कौं कछु नांहि
सा. ६४ (१.१.१)
र. ८ सम संतन के प्रतिपाल (प.१५)
चौ. र. १
१४२ आवृत्ति

(४) + की (='का' का स्त्रीलिंग रूप)
(संबंधी शब्द के स्त्रीलिंग होने पर)
प. १०५ बूडा था मैं ऊबारा गुरु की लहर चंमकि
सा. १५७
र. ५
चौ. र. १
२६८ आवृत्ति

(५) कौ – (२५ आवृत्ति)
प. १०.३ करम कोटि कौ ग्रेह रच्यौ
प. ३३.३ चरनामृत कौ लाभ

	प. ५९.४	ग्यान कौ खड़ग
	प. ६३.२	मनिखा जनम कौ लाहु
	प. ७५.९	मन कौ सु भाव
	प. १३१.४	राडं कौ मरहा चढ़ि गयौ
	प. १३६.२	हरि कौ नाउं लै काटि बहुरिया
	प. १३७.६	आदि कौ उदेरु जाने
	प. १५४.१	नंद कौ नंदन
	प. १६२.४	संत कौ बिरव बिगैरु संसार
	सा. ४.३७.२	साकत कौ बड गांव
	सा. १८.७.२	गुन कौ गाहक
	प. २५.९	ममिता को टोप
	प. ६९.२	काग कौ मक्खिन
	प. ११०.९	सब रांडनि कौ साथ
	प. १५०-१	कोरी कौ मरम
	प. १५४.४	बपुरा कौ भाग
	प. १५८.६	रांम कौ दादा
	प. १५८.८	कांम कौ कीरा
	प. १९५.१२	करनी कौ परम
	सा. ४.१३.२	तन कौ चाम
	सा. ११.४.२	जन जन कौ मन राखता
	सा. १४.२६.२	मरिबे कौ दाउ
(६) + केर	र. १८	भरम करम दुहुं केर विनासा
	र. १६	कला केर गुन ठाकुर मानैं
(७) + केरा	प. १७७	और मुलक किस केरा
	सा. १५.४०.२	धूवां केरा धौलहर
	सा. २६.१.१	पाहन केरा पूतरा
	सा. ३०.२०.२	वेस्वा केरा पूत ज्यों

(८) + केरे, कैरै – केरा का विकृत रूप :

सा. २.४४.१	सांई केरे बहुत गुन
सा. ६.५.१	करता कैरे बहुत गुन
सा. २१.२१.१	जनेऊ केरै जोरि
३०.२४.२	इंद्री केरै बसि पड़ा

(९) + केरी (केरा का स्त्रीलिंग)

सा. २६.२.१	कागद केरी ओवरी
सा. १२.१०.१	अमृत केरी पूरिया
सा. २९.१८.१	कागद केरी नाव री
सा. २९.१८.१	पानी केरी गंग
सा. प. ३४.१	जल केरी ज्यौं कूकुटी

५.७४५ अधिकरण

(१) + में

(आवृत्ति ७८) प. ४१ + सा. ३६ + र. १७)

सा. १२४.२ पैडे में सतगुर मिला

आवृत्ति–प. ४१ सा. १३६.२ जिभ्या में छाला पड़ा

सौ. ३६

र. १ र. १७ धंधा ही में मरि गया

७८ आवृत्ति

(२) मैं–आवृत्ति प. ६

र. १

३३ सा. २६

३३

सा. २.२९.१	मत मैं मत मिलि जाइ
प. १७.२	सब मैं व्यापक
	तत्त मैं नित्तत् दरसा
	संग मैं संगी

प. ११७.२, १४१.३, १७५.३, १७५.७, १९०.४, १९४.४

र. २.१

सा. २.२९.१, २.३६.२, ३.१.२, ३.९.२, ३.१०.२, ३.११.१, ६.९.१, ८.६.२, ८.७.२, ९.१९.१, ९.२०.१, ११.१.२, १२.६.२, १४.६.२, १६.१६.२, १६.२७.१, २१.३४.२ २३.२.२, २५.४.२, २९.१.२, ३०.४.२, ३०.७.२, ३०.२५.२, ३२.४.२, ३२.९.१, ३२.१३.१

(३) मंह– आवृत्ति २ (प. १+।. १=२)

प. १७७.६

र. १७.८ मोर तोर मंह जरजग सारा

(४) महिं – आवृत्ति ४१ (प. ३८+र. २+चौ. र. १=४२)
प. ९.१, ९.२, २३.२, २३.९, ५३ - १, ५४.४, ५४.६ ६२.६,
६५.४, ६५.८, ७३.६, ८०.५, ८८.४, ८९.६, १०७.३,
१२२.४, १२२.५, १२२.७, १२८.७, १३०.८, १३०,१०
१३०.१५, १३३.६, १३३.७, १३३.८, १३७.१, १४२.२,
१५४.३, १५६.७, १५६.७, १६०.५, १६१.६, १६७.५,
१७७.९, १७७.११, १७८.८
र. ९.७, ११.५
चौ. र. १-२

(५) मांहि– आवृत्ति ५१ (प. १६+सा. २९+र. २+चौ. र. १=)
प. १-७, ६.३, ६.४, ३४.३, ५७.६, ७१.४, ८६.८, ८७.१, ८९.४
९६.५, १२३.९, १३०.१७, १६१.४, १७३.६, १७७.७, १८५.२
र.– ६.१, १३.८
चौ. र. १.१

सा. १.१.२, १.३.१, १.२६.१, २.११.१, २.१५.१, २.४४.१, ४.६.२
४.३२.२, ४.११.२, ६.५.२, ७.१.१, ७.२.२, ७.३.१,
७.११.१, ७.१२.२, ८.११.२, ९.१.२, ९.१४.२, ९.१८.२,
९.३२.२, १०.१३.२, १४.१३.१, १४.३१.२, २९.२.२,
२१.४.२, २१.३३.२, २३.६.२, २८.३.२, २९.१४.२

(६) मांही––आवृत्ति–१८ : प. १०+सा. ६ + र. १= (१७)
प. ३४.१, ३३.६, ४०.७, ८९.२, ११३.६, १२५.४, १३५.७
१४६.५, १४६.६, १९५. १३
र. २.४, १६.४

(७) मांहैं––आवृत्ति ८ (सा. ७ + र. १=८)
सा. १.५.१, ९.१०.२, ९.१४.२, ९.१४.२, ९.१९.१, १६.९.१,
२९.१६.१
र. १.२

(८) + मद्धे आवृत्ति ४ (प. ४)
प. ४३.२, १२५.३, १३०.१६, १८६.३
(१९४.६ =)

(९) + मद्धि आवृत्ति १ (सा. १)
सा. २०.८.१ अनल अकासा घर किया मद्धि निरंतर बास

(१०)+मंझि आवृत्ति १ (चौ. र. १.३)

चौ. र. १.३ बोल अबोल मंझि है सोई

(११)+मांझि आवृत्ति १ (प, १)

प. १३१.११ आस पासि घन तुलसी का बिरवा मांझि बनारस गांऊंर

(१२)+मांझ आवृत्ति १ (प, १)

प, ६४.३ बूड भ्ज रूप फिरै कलि मांझ

(१३)+मंझारि आवृत्ति २ (प, १+सा, १)

प. ८२.८

सा. ३०,२,१ तीनउ लोक मंझारि

(१४)+मंझारी आवृत्ति १)

प, १५१,१ जोगिया फिरि गयो गगन मंझारी

(१५) म्यानैं – आवृत्ति २ (प, २)

प. ८७,६ : खालिक खलक म्यानैं स्याम सूरति मांहि

८७.७

(१६) ऊपरि आवृत्ति—१३ (प, ५+५=१०)
+१ १
+१

प, २५,११ गढ़ ऊपरि

प, ५२,४ घर ऊपरि

प, ८६,८ जग ऊपरि

प, १३८,२ हरि ऊपरि

प, १७७,१ बंदै ऊपरि

प, १८७,४ दाती ऊपरि

प, १७५,६ भू ऊपरि

सा, ३.५.२ सूरी ऊपरि

सा, ६.१२.२ बंदे ऊपरि

सा, १५.६३.१ डागल ऊपरि

सा, २२.९.१ पाहन ऊपरि

सा, २४.१३.२ सिर ऊपरि

सा, ८.१२.२ सिर ऊपरि

(१७) ऊपर – १५,२४,२ (अव्यय)

(१८) परि – आवृत्त ३ (प, १ } (=३)
स. २ }

प. ४,८	मेरे सिर परि साहेब
	किसरे मुख़ परि नूर
	कोटि करम सिर परि चढ़ै

सा. १४. १४. २, २१. २९.२

(१९) पर— आवृत्ति ९ (प ५+सी ४=९)

प. २४.६	मृग छाला पर बैठे कबीर
प. ७३.८	जिन पर क्रिपा करत है गोविन्द
सा. ३१.१५.१	तापर साज्यौ रूप
सा. ३.६.२	करी तेरे नाम पर
प. १५७.९	सेस सरग पर राजै
प. १६४.६	एक तौ पड़े धरनि पर लौटैं
प. १६५.७	नख पर धार्‌यौ
सा. १०.२.१	कबीर का घर सिखर पर
१०.६.२	पाव कोस पर गांउं

(२०) पै आवृत्ति ६ : प. २ । सा. ४=६

सा. २.३२.१	आइ न सक्कौं तुज्झ पै
प. ४२.५	वावा आदम पै नजर दिलाई
प. १७५.६	गुर पै राज छुड़ाया
सा. २.४०.२	आठ पहरवा दाफना मो पै सहा न जाए
सा. १७.६.१	कबीर तौ हरि पै चला

५.७५३ अधिकरण

(१) पासि	सा. २९.१९.२	ऊंहा तैं पुनि गिरि पड़ा मन माया के पास
(२) परे	प. ५९	चित्र गुप्त परे डेरा कीया

५.७५६ संबोधन कारक

संबोधन कारक के अर्थ द्योतन के लिए संज्ञा का विकृत रूप ही प्रयुक्त हुआ है। संज्ञा के पूर्व निम्नलिखित विस्मयादिबोधक शव्द प्रयुक्त करके संबोधन की सूचना दी जाती है :—

(१) रे	प. ४२	संतो आई ज्ञान की आंधी रे
(२) री	२९.१८.१	कागद कैरी नाव री
(३) हो	२.४५.१	सुनि हो कंत सुजान

५.७५ कारक परसर्गवत प्रयुक्त अन्य प्रत्यय

कर्म-संप्रदान

४.७५१	(१) ताई— आवृत्ति–२	सा. ६.१२.१	कबीर बिचारा करै बीनती भौ सागर के तांई
		प. ११.३	किएउं सिंगार मिलन के ताईं
(२)	लौं— (५ बार)	प. ६८.७	देहरि लौं बरी नारि संगरै मरघट लौं सम लोग–
		६८.८	
		१००.४	
		सा. ८.१६.१	
		१०.७.१	
(३)	लगि—	प. ३९.४	यह जियरा निरमोलिका कौड़ी लगि [बीका
(४)	लागे	प. ६०	कोई कै लोभ लागे रतन जमन खोयो

५.७५२ करण-अपादान

	(१) संगि–	र. ३.४	ना ग्वालन के संगि फिरिया
		र. १०.६	वाके संगिन जांहि सयाना
(२)	साथि		

प. ४० बार+र. + ९+सा. ४८+चौ. र. १=९८ बार :

		सा. २४.१४.२	चला दुनी के साथि
		प. १९३	गुर कै साथि अमीरस पिऊंगा
		सा. १.१०.१	लोकवेद कै साथि
(३)	साथा	र. ३.१	तेहि साहब के लागै साथा
(४)	कारण–	(प. १+चौ. र. १=२ बार)	
		प. १४७.५	मैं मेरी ममता के कारण बार बार पछताया।
(५)	कारनि	(१ बार) सा. २६.३.२	जेहि कारनि तूं बांग दे
		सा. ९.४.१	जा कारनि मैं जाइथा
(६)	कारनै	(१ बार) सा. १.४.१	निसि अंधियारी कारनै
(७)	नालि	(२ बार) प. २५.६	बिरहिनि थी ०क्ते क्यों रही
		सा. २.४१.१	जरी न पिउ के नालि

५.७६ संयुक्त कारक परसर्ग

मैंकी— सा. १६.३८.१ पानी मैं की माछरी

सकै तौ पाकड़ि तीर

६.०० **सर्वनाम**

सर्वनाम संज्ञा के प्रमुख प्रतिनिधि (Representative) पद हैं। कबीर ग्रन्थावली में संज्ञा की भाँति सर्वनामों में लिंगभेद रूपात्मक स्तर पर नहीं पाया जाता है। लिंग द्योतन वाक्यात्मक स्तर पर क्रिया के द्वारा ही होता है। सर्वनाम में वचन और कारक संबंधी परिवर्तन संभव है। कारक रचना की दृष्टि से सार्वनामिक पदों में भी प्रमुखतः दो ही वचन और कारक (मूलरूप-विकृतरूप) मिलते हैं। रूपात्मक दृष्टि से यद्यपि संज्ञा की भाँति सर्वनामों में संयोगी कारक विभक्ति और वियोगी कारक विभक्ति पद्धति का प्रयोग हुआ है किन्तु संज्ञा की अपेक्षा सर्वनाम में वियोगात्मक पद्धति अधिक अपनाई गई है। केवल पुरुषवाचक के कर्म संप्रदान तथा संबंधकारकीय रूपों में ही संयोगात्मक रूप मिलते हैं अन्य सर्वनामों में तो केवल कर्म संप्रदान द्योतक रूप में यत्र-तत्र ही संयोगात्मक विभक्ति मिलती है। प्रधानता वियोगात्मक रूप की ही है।

रूप अर्थ प्रयोग की दृष्टि से सार्वनामिक रूपों के निम्नलिखित ८ भेद मिलते हैं:—

१—पुरुष वाचक (+ आदरवाचक)
२—निश्चय वाचक या संकेत वाचक
३—संबंधवाचक (+ नित्य संबंधी)
४—प्रश्नवाचक (१. चेतन + २. अचेतन)
५—अनिश्चयवाचक
६—निजवाचक
७—सार्वनामिक विशेषण
८—सार्वनामिक क्रियाविशेषण

६.१ **सर्वनाम** (१) पुरुषवाचक

६.११ **उत्तम पुरुष**

मूल रूप एकवचन बहुवचन

मैं (८२ आवृत्ति) हम

प. ५३ आ०

४.१, ५.३, ५.४, ६.५, ६.६

११.१, १४.६, १५.३, १५.८, १७.५

३०.२, ३५.३, ३५, ५, ३७.१

सा. २४ आवृत्ति

२.२४.१, २.२५.२, २.३५.१

२.३६.२

र. ४ आवृत्ति

१६.२, १७.३, १९.२, १९.५

चौ. र. १ आवृत्ति

१.५

हौं ८ आवृत्ति

प-४

१९.१, २७.४, ४४.२

१.२., ९.५

सा. ४

१९.१, ११.१२.१, ११.१२.२,
१४.३७.१

हउं – ४ आवृत्ति

प. ९.२, ९.३, ९.४, १९२.१

हम––५२ आवृत्ति

प. ३७ आवृत्ति––५.८, ५.१०, १६.२
१८.३, ३०.३, ४०.१, ४२.६

सा. १०.१४.१, २६.९.१

उत्तम पुरुष

वि० रूप : एक-वचन — वहु-वचन

मो– १४ बार — हम

प. १०

४०.७, ४२.१, ६७.१

२६.३,२६.६, २६.७

१३.७,१५.७, ५४.३, १.३९.२

सा- ४ बार

२.४०.२, ८.५.१

३१.१६.१, २१.१४.१

२१.१४.२

मुझ–(आवृत्ति)

सा– ४ बार

३.६.१, ४.१४.२, ६.२.१
६.५.२

मुझ्झ

सा. ३ बार

२.२५.२, ११.१६.१

१४.३६.१

संयोगात्मक रूप

कर्म-रूप - मोहि - २८ बार

प- २८ बार

२.३, ६.६, १०.२, १८.१

१८.२, १८.४, १९.१, २६.१

२६.८, ३५.६

सा ८ बार

२.४३.१, २.४७.२

हम— (२२ बार) :–– (आदरार्थ व. व.)

प.

५.२, १७.६, १९.३, १९.३

५३.७, ६४.४, ७६.१

१०३.४, १४३.५, १६२.८, १६३.१

सा. १.२

सा– १.३४.१, ५.३.१, ५.८.१

५.१३.१, ११.१६.१, १४.१६.२

१५.३२.२, १५.५६.१, १६.३२.१

३२.७.१

उत्तम पुरुष

संयोगी रूप

एक-बचन	**बहु-बचन**
संबंध कारक	
मेरा–२१ बार	हमारा–७ बार (आदरार्थ)
प. १२	प. ६
१०.१, ३८.८, ३७.१	५.६, १६.७, १४०.६
५६.१, ६५.७, ७९.१	१५२.११, २५८.४,

२९.१

प. ९ बार

१.२०.२, १.३०.१

४.१५.१, ६.२.१

६.२.२,६.८.१

मेरी– १८ आवृत्ति

प. १६ बार

१२.२, २४.५, ३५.७,

४५.२, ४९.२, ५३.१

र. १ बार

१७.३

सा. १ बार

८.१३.२

मेरे–३० आवृत्ति

प. २२ बार

४.८, २६.१, २२,१, २२.४

सा ८ बार–

२.५५.१, ४.५.१, ४.३.२

मेरो १० बार

प. ९ बार

१४.१, २६.५, ३१.६, ३५.५

सा. १ बार

६.१.१

मेरौ १ बार

प. १३९.५

मोर–१० बार

प. ६-९.३, ४३.२, १०.४.२

र. २-१३६.१, १४०.५, १८८.३

१७.८

सा. २-२१.३२.१, २.२.२

७

२७७.१३

सा १-१५.३२.२

हमारी–१ आवृत्ति

सा. १ बार

१६.३४.२

हमारे–९ आवृत्ति

प. ६

१.१, २.१, ७.२

१३.१, १३९.३, १८८.८

सा. ३–

२.२५.१, ५.१३.२

३१.२६.२

हमारो— + +

हमारौ + +

हमार–

स

र. १–(१९.८)

उत्तम पुरुष

एक-बचन	बहु-बचन
मोरा– ५ आवृत्ति	हमरा–२ बार
प. ५-११.१, १७.१, ४७.२	प. २ आवृत्ति
१८९.१, १९०.३	२३.९, १९३.७
मोरैं प. २-	हमरौ–४ बार
५.४, १८८.४	प. २ आवृत्ति
	१५.८, ५३.३,
	सा. १.१५.८, २२.५
	१६.३२.३
मोरी–प. १९.२, ४६.१	
	हमरी–४ बार
	प––२
	१४.३.१, १६२.७
	सा––२ बार

६.१।२ **मध्यम पुरुष**

मूल-रूप एक-बचन	बहु-बचन
तू– १० बार	तुम
प– २ बार (३४.९, ४३.६)	
सा–८ बार (२.२५.२, २.२७.१, ११.६.१)	
१५.१.१, १६.३५.८, २१.२२.१,	तुम्हः––
२१.३०.२, ३१.२६.१	
तूं––२९ बार	
प. १५ आवृत्ति	आप.
२१.२, ९.३, ९.४, १०.६, १४.६	सा. १५.१६.१
२६.५, ६९.२, १३९.५, १६१.४	
सा. १४ आवृत्ति	
३.६.१, ३.६.२, ६.१०.१	
७.१०.२, ८.८.१, ९.३३.२	
तैं––१३ बार	
प. १० आवृत्ति (२९.६)	
स. ३. १५.७४.२, १९.१३.१, ३०.१५.२	

तै प. १ (१९५.६)

सा. १ (१४.१२)

तुम—१६ बार (ए व, व.व.)

प. १२

१५.८, १८.३, १९.३

४२.६, ४७.५, ५४.३

१३८.१, १५४.१, १५६.६

१८८.७, १९१.१, २००.१

सा. २.५.२, ८.१२.२, १४.३.२

१६.७.२

तुम्ह (ए व, व. व.) ६ बार

प. २०.१३, ४९.३, ४७.४

१०१.३, १०२.६, १६६.२

मध्यम पुरुष

एक-वचन	बहु-वचन
विकृत रूप	
तो (संयोगात्मक का० वि. हिं के साथ)	
–हि"	तुम–६ बार (आदरार्थ । व. व.)
प. ८ (७.१, १०.१, १८.१, १८.२)	
र. १ (१८.४, २६.८, ७५.२, १९६.७)	प. ४५.३, ४५.४, ४५.६, ६९.७
सा. ७	१५४.४
	र. १.२
तुझ– ६ आवृत्ति	तुम्ह–प. ५ बार
प. १ (२६.५)	१३.२, २७.१, ३९.१०
सा. ५ (२.१८.२) ८.१२.१	१८४.१, १८४.२
(११७.१, ११.१२.२) ६.२.२	
तुज्झ ७ बार	
प.	
सा. ७ (२.२५, १, २३२.१, ६.८१	
११.१६.२, १४.३६.२, ११.१५.२	
२.२५.१)	

तुझु १ बार
प. १ (२३.४)

संयोगात्मक रूप :

तुझहिं १ आवृत्ति
प. ८१.३

तुर्महिं –४ बार
प. ६.५
१९.३
२२.३
४७.३

तुझै (२ बार)
प.
सा. ४.१४.२, १५.१३.२

तुमहीं–१ बार
प. १४२.२

तोहिं–१२ आवृत्ति
प. १०.१, १०.१, १८.१, १८.२
१८.४, २६.८, ७५.२, १६९.७
र. १ (३.१)
सा. २.४७.२, २४.९.२, ३२.१.२

आप. १ बार
सा. १.१९.१

तोहिं–सा, ४
११.६.१, १४.२७.१, १५.५३.२
१६.३५.२

रउरा–प. १७२.१

मध्यम पुरुष – संबंध कारकीय रूप

एक-बचन

तेरा–१५ आवृत्ति
प. ९ (८२८.५, ३२.१, १७.१
५२.५, ६३.११, ७९.२
८९.२, ९४.५, ११९.१)
सा. ६ (२.१४.१, ६.२.१, ६.२.२
६.८.१, १५.६२.३, २९.१.२)

तेरे–३ आवृत्ति
प. १ १७७.१
सा. २ ३.६.२, ३२.१.१

तेरी—१२ आवृत्ति

बहु-बचन

तुम्हारा–१ बार आदरार्थ व. व.
प. १७७.१२

तुम्हारे–२ बार
प. १२१.१
१८४.४

तुम्हारी–८ बार

प. ९ (१०.२, १४.६, ३२.५
४२.७, ६३.११, ७५.१
८५.४, १३४.७, १३९.५)
र. १–१.१
सा. २–८.२.२
१६.१८.२

तेरौ–३ आवृत्ति
प. २०.४, ५५.२
सा. १६.७.१

तोर–प. १ (१०४.२)
र. १७.८
सा. १ १४.३६.१, २१.३२.१

तोरा–प. ४ वार
३८.१, ४७.१, १४६.७
१८९.१

तोरे–प. १९.२, ९६.१

प. ६–१३.३, १५.३, १५.८
२२.२, ३९.२, ४०.१०
१७०.६

तुम्हार–प. ४५.३

तुम्हरा–प. २३.१

तुम्हरे–प. १२४.७

तुम्हरी प. १९.४

थारो–
चौ. र. ७.४

६.२ निश्चयवाचक : निकटवर्ती

६.२१ एक-वचन

मूल रूप यह–१६ आवृत्ति
प. १२–१३.३, ३२.५
सा. ४–२.१०.१, १५.६०.१

यहु–६० आवृत्ति
प. ३८–६.५, १०.१३, २५.५, २९.५
४०.४, ४.६, ५१.८, ५५.३

सा. २०–२.२१.१, ९.६.२, ११.६.१
१४.३१.१, १५.३.२, १५.२०.१
र. २–४.५, ११.१

एह–३ आवृत्ति

बहु-वचन

ए. १७ आवृत्ति
प. १३
१२.२, ४०.७
सा. २
१६.२६.१
३१.२३.२
सा. १५.८०.१
र. ३.९

प. १–१६५.८
सा. २–४.२४.२, १५.४.१
इह–२ आवृत्ति
प. २–११३.६, १३०.१

इहै–६ आवृत्ति
प. ३–५८.५, ६८.४, १८०.४
सा. ३–३१.१.१, ३१.६.२, ३२.९.२

इहिं–५ आवृत्ति
प. ४–१०.६, ५१.७, १३३.१, १६७.६
सा. १–३१.९.१
इहीं–२ आवृत्ति
सा. २–२१.२४.१, २६.१.२
इहि–६ आवृत्ति
प. ६–५३.८, १११.६, १३१.९, १३१.१०
१३८.१८, १३८.७, १८३.२
इहु–२ आवृत्ति
प. २२.१, ३९.८
एहीं–
प. २–६२.२, १२९.२
एहु– × × ×
एउ–प. १८७.१
एहिं–७ आवृत्ति
प. ४–९९.४, ११३.२, १२३.१, १९९.५
सा. २–
र. १–१५.५

एसम–
प. ६६.७
चौ. र. १.२
ए सकल–१७६.१०
१७६.१२

निश्चयवाचक–निकटवर्ती

विकृत रूप	ए० व०	ब० व०
	या–१७ बार	इन–७ आवृत्ति
	प. १२	प. ४.२०.१२

२३.३, ३१.३, ६२.४, ६८.४
१०८.१, ११०.१०, १११.१, १६४.१
१६४.७, १७५.२, १८६.६, १५७.३

सा. ५–
२.८.२, २.१४.२, २.२०.१
१४.९.२, २१.२८.२

इस–५ आवृत्ति
प. — × × ×
सा. ५ बार
२.२२.१, ६.९.१, १३.२.२
१५.४५.१, १६.१.१

इसु–प. १ बार
४३.४

इसहिं–प २३ ४

३६.४
१४२.९, ८५.६
सा. २
३१.६,–२
२.११.३

र. १
७.२

इन्ह–प. १ २०.४
सा. १.४.१६.१

इनहीं–
चौ. र. १.१

६.२।२ निश्चयवाचक—दूरवर्ती

मूलरूप ए० व०

वह–७ आवृत्ति
प. १४७.८
सा. ५
२.४२.२, ९.२६.२, १५.९९.२
२१.१०.२, २१.२०.२

वहै—प. १६२.५
वहि—
प. ३–१००.५, १००.५, १००.५

वो–३ आवृत्ति
प. १–१६८.४
र. २–२.२, ३.४

ब० व०

वे– २ आवृत्ति (आदरार्थ व० ब०)
प. × × ×
सा. २ (२.२०.२, २.४४.२

ते– ४६
प. १७–३२.४, ५०.५, ५८.७
७३.८, ८६.९, ८८.७

सा. २९. बार
१.७.२, ८.११.२, १.१२.२,
७.११.१, २.४.२, ४.७.२
३.९.२, ४.६.२

ऊ–सा २–१५.१९.२
३०.३.२

तेऊ–
प. ९२.७
सा. २०.४.१
३१.१२.२

सौ = १३६ आवृत्ति
प. ८१ आवृत्ति (१.२, २.४)
सा. ५४ आवृत्ति (१.१६.१)
चौ. र. २ आवृत्ति १.२
सोइ–प. १२—६७.७, ८७.१०
सा. २०—१.८.२, २.१४.२
सोई ४२ बार
प. १८
सा. १८
र. ४
चौ. र. २

विकृत रूप : **ए० व०**

उस–
प. १ : १६२.२
सा. ८–६.९.२, ८.१६.२
९.३.२, १०.१४.१
११.८.१, १४.२८.१, २२.१४.१
उसु–
सा. १–२१.२.२

उसही–१–११.८.२

वा–१५ आवृत्ति
प. १–१०८.७, १४७.१, १४६.४
१४६.७, १६२.६, ६४.२, १५८.४
र. ३–३.४, २.२, १०.७
सा. १–४.११.२, ४.११.२, ४.३३.२
२४.२.२, २४२.२, २४.८.२
ता–३७ आवृत्ति

ब० व०

उन–
प. २–१५८.८, ३४.१२
सा. ४.१.२
उनि–प. ८६.७ (आ० व० व०)

उनहुं–१
प. ४८.२
उनहूं–२
४८.३, ४८.४

उनभी (आदरार्थ व० व०)
प. ४२.५
तिन–३१ आवृत्ति
प. १२–८४.२, ९८.६
११४.१, ८०.५, ८८.६, ३०.३

प. १५—४८.१, ४८.५, ४२.६
४८.७, ७४.५, १२२.८, १२४.५, १४२.६
१८५.

सा. २१—४.३२, ४.३२.२, १५.३९.२
२४.७.२, ३१.१५.१

र. १—२.१
ताकउ, ताकहु, ताका, ताकी, ताकू, ताके
ताकौं, तातैं, तापर, तापै, तामैं, तास, तासु
तासौं

तेह—सा. २२.९.२

तेहि—प. ९९.२
सा. १३.१.२

तेंहि—प. ९९.२, ३, १३९.८
र. १६.८

ताहि—प. ३—१२६.३, १३०.१३, १३४.४
सा. ८—५.७.२, ११.२४.२, ११.१५.२
१२.१०.२, १८.११.१, १९.६.२
चौ. र. १—१.७

ताही—सा. ४—२.२६.२, ३.१७.२
२६.७.२, २७.४.२

सा. १७—४.६.२, ४.४३.२
७.१२.१, १५.७७.२
र. २—१२.६, ६.१

विनि—प. ३—१.२.४,
१.३.४ ६१, ७५.२
र. १—९.९.

तिन्ह—सा. ४.१२.१

तिनउं—र. ६.१, स. २३.१.२

तानि—सा. ३२.४.२

तिनहिं—प. ४४.४

तिनहीं—प. ३ ३२.६,
६३.९, ७६.२

६.३ संबंधवाचक सर्वनाम

ज. ६

मूल रूप (ए० व०, व० व०)

प. ३—११४.४, १५४.१, १७.१

सा. ३—१.२१.२, ९.१६.२, २१.२९.१

जु. २६ आवृति

प. ९—४२.३, ८०.७, ८७.२, ८८.७
११३.१, १२८.६, १३३.७, १४१.२
१६६.३

र. १—६.३

सा. १६—१.९.१, २.१३.१, २.३२.२
२.४४.१, ४.३३.२, ११.१.१

जे–४९ आवृत्ति (ए० व० ब० व०)

प. २३–१०.१०, २७.१, ३१.३

५०.५, ५०.७, ६३.८

र. २– १०.७, १२.७

सा. २४–१.७.२, १.१८.१, २.४.२, ३.११.१

जो–९७ आवृत्ति (ए० व० ब० व०)

प. ४३–११.७, ३०.२, ३१.४

३२.६, ३३.५, ३५.२

सा. ४९–१.२५.१, २.८.२, २.२६.२

चौ. र. १–१.६

र. ४–३.१०, ६.३, ११.४, १६.३, १७.१

वि० रूप ए० व० ब० व०

जिस–३ आवृत्ति

प. १ १७२.३

जिन–३५ आवृत्ति (ए. व., ब. व.)

प. १७–२७.२, ४०.२, ५६.७

सा. १७–१.९.२, २.१४.२,

२.३०.१

र. १ थ १२.६

जिन

जिन्ह–४ आवृत्ति

प. २–८६.९,

६३.१०

सा. २–१५.२१.१

जिनि–२६ आवृत्ति

जिन्हि–२ आवृत्ति

प. १०३.३

जिनि––

प. १३–१०.१३,

४३.२, ५५.२

सा. ९–१५.२७,२, १६.३२.१

२१.३१.१

सा. ८.८.१

र. १–४.६

जिसु प. १–१८७.३

सा. १–१४.२.१

जासु–र. १–७.६

६.४ **सहसंबंधवाचक या नित्यसंबंधी**

मूलरूप	ए० व०	व० व०
(जो किछु)	सो. ६.२.१	
(जो)––	सो– प. ३५.४	
(जो)––	प. ९०.१	
(जो)––	सो– प. १०.८.१	
(जो)––	सो. प. १२५.४	
(जो)––	सो– प. १२८.२	
(जो)––	सो. प. १३०.१२	
(जो)––	सो, सोई प. १३८.७	
(जो किछु)	सो–प. १४२.२	
जिसका	सो– प. १७२.४	
(जा)	सो– प. १८२.४	

सहसंबंधवाचक या नित्य संबंधी

वि० रूप	ए० व०	व० व०
	तिस–	तिन–
	प. ४–११७.८. ११८, ४, १८३.९ ४०.२	प. ८–८४.२, ९८.६, ११४.१ ८०.५, ८८.६
जिस––	सा. ८.८.१	सा. ९–४.६.२, ४.४३.९ ७.१२.१, १५.७७.८
	तिसु–	
	प. ३–१२८.३, १२८.५, १३३.६	
जिसहिं–	तिसहिं–	तिनहिं–
	प. १–८४.९	प. ४४.४
	सा. १–८.८.१	
तिसाई		तिनहीं–
	सा. १२.७.२	प. ३–३२.६, ६३.९ ७६.२

तिसै–

प. ८८.४

जो—ता–८२.९

र. १–१२.६

तिनहुं–

सा. १=२३.१.८

र. १=६.१

तिनि–

प. ३=११२.४, १३४.६१, ७५.२

र. १=९.९

तिन्ह=सा. ४.१२.१

६.५.२ प्रश्नवाचक (प्राणिवाचक)

मूलरूप **ए० व०, ब० व०**

कवन–१४ आवृत्ति

प. १३=३८.१, ४०.३, ४०.३
४६.१, ६९.७, १२६.१, १३२.४
१३३.८, १३४.७, १७८.१, १८०.४
१९१.१, १९२.१

र. १–७.४

कवना–

प. २१.२

कौन–३३ आवृत्ति

प. २२–४९.३, ९६.३, ११९.३

सा. ९–१.२४, २-२.३.२, ३.२०.२

र. २–१.४, ५.४

कौने–

प. १=१५८.५

सा. २=२.९.२, २.१०.२

कौने–

प. १९४.१

कौधौं–

प. १७९

को– १५ आवृत्ति

प. १०=१८४.४, ८.३, ४३.३, ४५.२, ४९.४

७८.४, १०३.१, ११०.९, ११३.८, १८०.४

र. २=१४.५, १६.२

सा. ३=१.२.२, १०.१.२, ३१.१४.१

का–३० आवृत्ति

१८८.२, १८९.१, १९७.१

प. २१=६८.१, ७२.८, ७८.३, ९७.३

११३.१०, १६७.१, १६८.२, २.२.३

१७०.३, १७२.२, २, १७३.२,

१७३.४, १७४.१, २.१७८.५,

१८०.२ १८१.६

का–

सा. ४=१.१८.१

१५.१२.१

३२.१.१

३२.१.१

र. २=४.७.७

६.५.२ प्रश्नवाचक (अप्राणिवाचक)

मूल रूप ए० व० व० व०

क्या=७० आवृत्ति

प. २८=८२.४, २३.६, ५५.४

सा. ४१=१.१.२, १.७.१, ३.१.१,

२.१८.१

र. १–४.६

६.५/३ प्रश्नवाचक

वि० रूप

ए० व० व० व०

कौन—(ए० व०, ब० व०)

सा. ३.२०.२

१०.७.२

किस–

प. ३=१७७.८, १८३.८

१९४.७

सा. ४–१०.५.२, १४.१४.२

१७.५.२, २३.८.२

(आदरार्थ व० ब०)

किन=१४ आवृत्ति

प.=२१.१, ६४.३, ७१.१, १२४.३

सा.=३.१.१, १५.५२.२,

१५६.६.१

र. =५.३, ७.३

किसु—

प. ११३.६

किसही–

सा. ३२.२.२

किनि–

प.=८५.१०, १७८.८

(किसका, किसकी, किसकौ)

का–

प. ७८.३

र. १०.८, ४.७, ६.७

७.७ **निजवाचक**

आप—२३ आवृत्ति

प. ११=१०.४, २९.४, १०७.६, १०७.८
११०.२, १२३.८, १३२.६, १३८.८,
१४९.७, १६७.४, १७७.६

र. ३=१०.३, ११.८, ११.३

सा. ९=९.१०.२, ९.२८.२, १२.१०.२, १४.३९.१
१५.३३.२, १५.१६.२, १५.६०.२, १९.११.१
१५.३३.२

आपु – ८ आवृत्ति

प. ७=६८.१०, ११८.९, १६७.५

सा. १=४.१.२

आप आपकौ––

सा. १५.६०.२

आपतैं––

प. १.२

आपनपौ––

सा. २=२३.७.१, २०.११.१

आपना––

सा. २=५.१३.१, २०.११.१

आपनी––

सा. ४=६.५.२, १५.३.१, १६.१८.१, ३०.११.१

आपनै––

सा. २=८.१५.२, १६.२९.२

र. =५.६

आपहिं––

प. ५=१०.४, २१.२, ११९.२

आपहि आप— :. १०

आपस—प. १९१.६

आपुन—

सा. ३१–२४.२

आपुहिं—

सा. १–२९.६.२

र. १–१०.१

आपै–६ आवृत्ति

प. २–११९.२, १३०.१६

र. १=११.८

सा. १=३०.२५.१

अपन—

प. १=६.४

अपनपौ–५ आवृत्ति

र. १=७.१

अपना–५ आवृत्ति

प. २=६५.२, ९.६.८

सा. ३=५.१.१, ५.५.२, १५.७५.२

अपनी–८ आवृत्ति

प. ३–१५.१०, १००.१, १९०.४

सा. ५=५.२.२, १५.१३.२, १८.१२.२

अपने–

प. ४=२७.१, ३५.१०, ९१.३, १०९.७

सा. ३=४.१३.१, १५.८०.१, १९.३.१

अपनै—

प. १=१८.१

अपनौ—

प. १=१३१.८

६.७—अनिश्चयवाचक

मूल रूप **ए० व०**

कोई–९३ आवृत्ति

प. ५९=१.४, १४.२, १३.७, १९.३

सा. २७=२.१७.२, ५.१.१

र. ५=२.२, २.६

चौ. र. २=१.६, १.८

कोइ—९६ आवृत्ति

प. १८–३.१, १०.१०, १३.३, २९.१

सा. ७६–२.१.१, २.३९.२

र. २=१४.९.१९.७

कोऊ–४ आवृत्ति

प. ३=४५.३, ७३.५, १९८.१

र. १=४.७

कोउ—

प. ७३.५ क

मूल रूप—

कछु—३५ आवृत्ति

प. १५–२.२, ३४.४

सा. १८–१.१.१

चौ. र. २–१.३, १.४

कछू–१३ आवृत्ति

प. ९—६.६, ७८.४

सा. ३–४.२३.२

र. १=१३.३

किछु–

प. ६=३९.७, ६३.८

सा. २=६.२.१, ३५.२.२

किछू–

प. १—१२२.६

सा. १—४.१२.१

कुछ— प.

र.

सा. ३=८.१.२

९.९.२

९.२०.२

अनिश्चयवाचक

वि० रूप	ए० व०	ब० व०
किसी–		
	प. १—१९.३	किनहुं— ७ आवृत्ति प. ३—६६.४, ८५.६, १७७.१
	(हमन किसी के न हमरा कोई)	सा. ३ = १.७.१, १९.१०.१ ३१.६.२
किस ही–	सा. ३२.२.२	र. १ = २.२
		किनहूं— प. १ = ८५.४ र. = १२.२, १५.३
काऊ–	सा. ६.४.२	

६.८ अन्य सर्वनाम

उपर्युक्त सार्वनामिक पदग्रामों के अतिरिक्त कबीर ग्रंथावली में निम्नलिखित पद भी सर्वनाम की भाँति प्रयुक्त होते हैं—

सब— १२८ बार
- प. ४१ = १.९, ३.२, ८.३, १३.३
- सा. ७९ = १.२४.२, १.२८.१, २.३.१, २.२७.१
- र. ८—२.४, २.५

सबहिन—
- प. ५४
- र. १६.४

सबहिन्ह–
- प. ५३.१

सबही–
- र. १२.२
- सा. ८.१४.४, ११.१०.२, १५.४.२, ३१.२३.२

सबहिं–
- सा. ५.११.२

सबै—

प. ५ = १६.३, १०१.९, १०२.८, १७६.६, १८३.८

र. १३.७, १३.७

सबन—

प. १९३.३

सभ—

प. १७—८.४, १५.१, ३२.५

सा. ३ = १२.२.१, १५.३०.१

चौ. र. १ = १.२

सभु – ५ आवृत्ति

प. २—१५०.१, १९६.४

सा. २ = १५.३२.१, १५.३५.२

चौ. र. १ = १.१

अवर—

र. २.१

अवरै—

प. १३४.२

अउर –

प. २६.१, १३३.१०

अउरौ –

प. १६२.२

और – ३७ आवृत्ति

प. १.३, ४४.४, ५५.१, ५५.४, १०७.८,

(१३ बार) १७६.६, १७६.८, १७६.१०, १७६.१२

१७७.८, १८४.८, १९५.१०, १९९.३

र. = ७.४, १४.७, १९.४

सा. = २.१७.२, ३.८.१, ३.१४.१

(२१ बार)

४.३६.१, ९.४.२, ११.७.२

११.१२.२, १४.४.१, १५.३६.१

१५.८९.२, १६.३१.१, २३.८.१

२४.१०.१, २६.४.२, २९.१०.२

३०.१३.२, ३१.२५.२, ३१.२६.२

औरै – ३ आवृत्ति

प. १.३

सा. ८.४.२, २५.१९.२

औरन – ४ वार

प. २ – १६७.५, १६७.६

सा. २ = १५.७५.२, २१.३३.२

औरनि – ३ बार

प. ५३.१

सा. २१.१.१, २५.१.१

पर – ४ आवृत्ति

प. २ – १०.५, १३.७

सा. – २ = १५.७६.१, २८.३.२

आन– १३ आवृत्ति

प. ६ = २२.२, ९४.४, ११५.१, १७२.५

सा. ६ = ३.२०.१, ११.१४.१, २३.१.२

र. १ = ११.७

आनि –

प. १

आना–

र. = १४.२

६.९ सार्वनामिक विशेषण

अनेक सार्वनामिक पदग्राम संज्ञा के पूर्व आकर विशेषण का कार्य करते हैं जिन्हें सार्वनामिक विशेषण की संज्ञा दी जाती है। इनकी रचना दो प्रकार से होती है: १– मूल सर्वनाम पदग्राम ही संज्ञा के पूर्व आकर विशेषण का कार्य करते हैं। यथा–– निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, संबंधवाचक, प्रश्नवाचक सार्वनामिक पदग्राम संकेत-वाचक विशेषण का निर्माण करते हैं। इनका विश्लेषण विशेषण प्रकरण में किया गया है। २– वे सार्वनामिक विशेषण जो मूल सार्वनामिक पदग्रामों में अन्य प्रत्यय लगाकर बनाए जाते हैं। इनके दो वर्ग हैं––१– प्रणाली या गुण बोधक सार्वनामिक विशेषण।

गुण या प्रणालीबोधक

सर्वनाम	प्रणाली बोधक विशेषण
इस (इ>अ)	अस–३ बार
	प. ११९.४

सा. १६.२१.१

एसा–इस – (इ>ऐ) ऐस् + आ = ऐसा ३४ बार

प. १२ = १३.७, १७.२, १७.६, ६७.३, ७१.१,
११७. १, १२५.३, १३४.७, १६०.१, १६९.३,
१७५.६, १८१.१,

सा. – २२ = ५.१.१, ५.२.२, ५.३.१, ५.४.१
५.३.१, ५.४.१, ५.५.१, ५.६.१
५.७.१, ५.८.२, ५.१२.२

ऐसी– इस – (ई > ऐ) ऐस्+ई = ऐसी १० बार

प. ४ = ३१.३, ९५.१, ११७.९, १८९.४,

सा. ६ = २.२५.२, १४.१.१, १५.७.१

ऐसे– इस : इ > ऐ : ऐस् + ए = ऐसें ९ बार

प. ८ = ४०.१, १६.५, १८.३, ५७.६

सा. १ = ७.१.२

ऐसो– इस – : इ > ऐ : ऐस् + ओ = ऐसो–१ बार

प. १ = १५४.६

जैसा– जिस – (इ > ऐ) जैस + आ = जैसा – ८ बार

प. ३ = ६७.३, ९७.९, १३४.५

सा. ५ = ३. १९.१, ७.१०.२. १५.४६.१

जैसी– = जैस् + ई = जैसी ६ बार

र. १ = ९.७

सा. ५ = ३१.७.१, ३३.९.१, १५.८.१.
१८.६.१, २४.३.२

जैसे– = जैस् + ए = जैसे = २१ बार

प. १७–१८.१, १८.३, १८.४, १८.५
२.२.५, २४.७, ५७.५, ५७.७

सा. ४ = ३.२१.१, ११.१.२, २१.२७.१

कैसा–किस = (इ > ऐ) कैस् + आ = कैसा – २ बार

प. ५४.२

सा. ९.२.२

कैसो– कैस + ओ = कैसो १ बार

प. १३.४

कैसे-कैस् +ए = कैसे १६ बार

प. १३ = १२.२, १८.१, १८.२, २९.२, ३९.१, ४६.५, ४७.१, ४९.२, १२०.१, १२८.८, १९१.४, १९५.५, १९६.७

सा. - ३ = ६.९.२, ११.६.२, २९.१८.२

तैंसा-तिस (ई > ऐ) तैस + आ = तैसा २ बार

प. + + +

सा. २ = ३.३९.१, ७.१०.२

तैसे- तैस् + ए = तैसे १ बार

प. ८४.५

तैसी- + ई = तैसी २ बार

सा. २ = १५.८.१, ३३.९.१

तैसो- + ओ = तैसो २ बार

प. ५५.३

सा. २४.३.२

परिणामबोधक सार्वनामिक विशेषण

जेता —३ बार

सा. ३ = ४.२१.१, ९.१४.१, ३१.१९.१

जेते —३ बार

प. २ = ३७.२, १७७.१२

सा. १ - १४.३६.१

तेता —२ बार

सा. २ = ३. २१.२, ३२.१५.१

तेते —२ बार

प. १ = ३७.२

सा. १ = १४.३६.१

तेतो = र. ११.७

केते = प. १ = १७८.२

सा. २ - ३०.१२.१, ३०.१२.२

केती - सा. २ = ४.३२.२, ३०.४.२

केतिक - सा. ३ = १५.३९.२, १६.३.२, २२.७.२

६.१० सार्वनामिक क्रियाविशेषण

सार्वनामिक पदग्रामों में प्रत्यय जोड़ कर अनेक कालवाचक, स्थानवाचक, रीति-वाचक, क्रियाविशेषणात्मक पदग्रामों की रचना की जाती है। ये क्रियाविशेषण भी प्रतिनिधि पदग्राम हैं अतएव उन्हें मूलतः सर्वनाम ही कहना चाहिए, किन्तु अर्थ की दृष्टि से ये पद क्रिया की विशेषता बतलाते हैं। अतएव इनका विस्तृत विवेचन क्रियाविशेषण खंड में अगले पृष्ठों में किया जाएगा।

६.११ संयुक्त सर्वनाम

संबंध + अनिश्चय

जो कोइ —

सा. ४.४२.१, — काम मिलावे राम के जो कोइ जाने साखि

११.१५.१ = कबीर जो कोइ सुँदरी

२६.६.१ = जो कोई निंदे साधु को

जो किछु –

सा. ६.२.१ – मेरा मुझमें कुछ नहीं जो किछु है सो तेरा

अनिश्चय+एक

सा. २८.७.१ कोई एक

कोई एक मैंले लवनि अभी रसाइंन हेत

तेरा जन एक आध है कोई

कोई विरला ३०.३.१

विरला वांचै कोइ

कछु और —

हौं चितवत हौं तोहि कौं तू चितवत कछु और

सर्वनामवत विशेषण + अनिश्चय (सब)

सब कोइ – सा. ४.४२.१

स्वारथ को सब कोइ सगा

जिस तू तिस सब कोइ (८.८१)

सब काहू – सा. ६.४.२

कबिरा सब काहू बुरा-कबिरे बुरा न कोइ

सभुकोइ –

सा. १५.३२.२

हम तजि भल सभु कोइ

सर्वनामवत विशेषण + संबंध

एक ज – १.२१.२

एक ज बाहा प्रीति सों

निश्चयवाचक सर्वनाम + सब

यह सभ—

प. ३२ यहसभ तेरी माया

एसभ –

र. चौ. १—ए सभ खिरिखिरि जाहिंगे

और +

और सकल ए — प. १७६

और सकल ए भार लड़ाऊ

और + अनिश्चय —

और (न) कोई – २.२७.२

और न कोई सुनि सकै

औरै कोइ—

सा. ८.४.२

जौ कीए ही होत है

तौ करता औरै कौई

विशेषण

५. ख **विशेषण-गुणबोधक**

कबीर ग्रन्थावली में निम्नलिखित गुणवाचक विशेषणात्मक पदग्राम **मिलते हैं।** अकारादि क्रम से नीचे उनकी सूची प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया जायगा। **कोष्ठक** में उनके विशेषण भी दिए गए हैं। छंदपूर्ति के लिए यत्र-तत्र इनके अंतिम **स्वर दीर्घ** भी कर दिए गए प्रतीत होते हैं—

१.५	अगाध	(मता)	सा. २०.६.२
	अद्‌भूता	(हाल)	र. ९.७
	अकेल	(मैं)	सा. १६.२६.२
	अकेला	(हंसु)	प. ६२
	अखंड	(धारा)	र. १३
	अधिक	(रसाल)	सा. १४.३३.१
	अधिकै	(गरबि)	र. ७.५
	अनूपम	(वास)	सा. ३२.१०.२

अयाना	(सुत)	र. १०.६
आछा	(गांव)	सा. २१.१२.१
अंधी	(गाइ)	सा. १८.६.१
आंधरा	(जग)	सा. १८.६.१
इफतरा	(वेदकतेव)	प. ८७
उजियारा	(घट)	सा. २५.६.२
ऊजल	(नीर)	सा. १३.३.१
ऊले	(व्योहार)	प. ३.९
ओछी	(संगति)	प. २४.१०.२
औघट	(घाटी)	प. २०.४.२
कांचा	(कुम्भ)	सा. १५.५९.१
खारा	(जग)	सा. १६.३९.२
गाफिल	(मन)	सा. २९.१४.१-२
घना	(साझी)	सा. १.३१.२
घनी	(सासना)	सा. २९.१४.१-२
चौखै	(मन)	प. ७
चौड़े	(जालि)	सा. १६.२९.२
जरजरा	(बेड़ा)	सा. १. १०.१-२
जूड़ै	(पानी)	सा. १६.१६.१
झूंटा	( )	प. ८९.१
झूंटे	(मुख)	,, २१.१६.१
झूठैं	(मन)	प. १६
झूंठी	(बात)	र. १४
झूरी	(लाकड़ी)	प. ६२
झीन	(पानी)	सा. २९.३.१-२
ताते	(लोंहि)	सा. १.३०.१
थोथरां	(जपतप)	सा. २६.६.१
थोथी	(मालि)	र. १२.१
दरोगु	( )	प. ८७
दिट	(ग्यांन)	प. १०
दुरलभ	(हरि)	सा. ३.१२.१-२
दूबरी	(हरिनी)	सा. १६.३.१

नांगी	(पतिवरता)	सा. ११.८.२
निर्भय	( )	१.१७.२
निजार	(निरंजना)	र. ११
निसंक	( )	सा. १.२७.२
पाका	(कलस)	र. ९.१
पाखंड	(भेंस)	१२.१.२
पातरा	(पानी)	२९.३.१२
पियारा	( )	र. १२
पियारे	( )	सा. ५.११.२
पीयरी	(हरदी)	सा. २०.३.१
पूरा	(विसाहुना)	१.१५.२
पूरी	( )	१.२५.२
पोच	(औसर)	र. १६
पंगुल	( )	सा. १.१२.१-२
प्यारी	( )	प. २
पाड़े	(भ्रिंगी)	प. १
बउरा	( )	सा. २.१.२
बहरा	( )	" १.१२.१-२
बावरा	( )	" १.१.२
बावरे	(नैन)	" २.२५.१
बिकट	(पंथ)	" २.३.१२.१-२
बिनठां	(कापड़ा)	" १.१८.२
बिकरारा	(बिरव)	" २.४९.१
बिरानी	(रास)	" २१.१.२
बिषमी	(बाट)	" १५.१६.१
बुरहा	( )	र. १६.१
भला	( )	सा. २१.१२.१
भावता	( )	सा. २.२८.१
भली	( )	प. १.२५.१
मित्र	(गोप)	र. १०.८
मंद	( )	१.४.२
मुगध	(गहेलरी)	२.४१.२

मूढ़	(जग)	र. १२	
मैंमता	(मैंगल)	र. १५	
मैंमती	(मैं)	प. ५	
मैला	(धनि)	सा.	९.२९.२
मोट	(चून)	"	२०.१०.२
मोटी	(आस)	"	३१.१६.१
रतनालियां	(आंखड़ियां)	"	१६.२.२
राता	(तन)	"	१५.५०.१
ससवां	( )	र. १७	
लम्बा	(मारग)	सा. ३.१२.१-२	
लांबे	(गोड़)	"	३.२.२
लैलीन	( )	"	२९.१०.१
लोभिया	(स्वामी)	"	२१.१८.१
सगा	( )	"	१.३.१-२
सबल	(माया)	"	३१.९.१
सयाना	(हरि)	र. १३	
सरल	(पौड़ि)	"	२२.१.१
सांकरा	(दुआरा)	सा. २६.१.१	
सांकरी	(सीढ़ी)	सा. २०.२.१	
सांचा	(सूरिवो)	सा. १.९.१	
साबित	(दिल)	"	९.३२.१
साजना	(आंसू)	"	२.४९.१
सीतल	(मन)	"	१७.१.१
सुजान	(कंत)	"	३.४५.१
सुठि	(सेवक)	"	२४.१३.१
सूधा	(जल)	"	३३.६.२
सूधी	(मूंठ)	"	२.२३.१
हरिअर	(रूखड़ा)	"	२२.१४.१
हरिहाई	(गाइ)	"	२१.१८.२
हियाहिं	(हितू)	"	२.४९.४

उपर्युक्त विशेषण पदग्रामों पर विचार करने से सहज ही ज्ञात हो जाता है कि कबीर ग्रन्थावली में विशेषण पदों के रूप निर्माण अर्थ, प्रयोग में वही पद्धति अपनाई

गई जो आगे चल कर हिन्दी में विकसित हुई है। यथा—

(१) केवल एक आध उदाहरण (यथा—रातड़ियां आंखियां) के अतिरिक्त विशेष्य के बहुवचन होने पर भी विशेषण एक वचन में ही रहता है।

(२) आकारान्त विशेषण का रूप परिवर्तन आकारण संज्ञा की भांति होता है। अर्थात् पुलिंग संज्ञा के साथ संज्ञा का मूलरूप, विकारी संज्ञा के साथ आकारान्त विशेषण का भी विकारी रूप और स्त्रीलिंग विशेष्य के साथ विशेषण भी स्त्रीलिंग हो जाता है।

(३) क्षेत्रीय दृष्टिकोण से इन विशेषणों का विश्लेषण करने से प्रतीत होता है कि कबीर ग्रन्थावली में मध्यदेश में प्रचलित विशेषणों का अधिकांशत: प्रयोग हुआ है। बोली विभिन्नता की दृष्टि से इनमें खड़ी, ब्रज, अवधी यत्र-तत्र पंजाबी विशेषण मिलेंगे। विशेषण का चुनाव क्षेत्रीय बोली के मुहावरे के अनुकूल ही कबीर ने चुना है।

५.२ विशेषण परिमाण

विशेषण		परिमाण
अलपै	(सुखदुख)	र. १५
किंचित	(लाभ)	र. १७
हरू	(गरू)	र. २.३
गरुआ	(गुरु)	सा. २४.१
तनक	(लहुरिया)	र. २.३
थोड़ा	(जीवना)	१५.४३.१
(सुखकर),लेस	(नपावे)	र. १७

५.३ संकेतवाचक विशेषण

निश्चयवाचक, संबंधवाचक, प्रश्नवाचक तथा अनिश्चयवाचक सार्वनामिक पद जब किसी संज्ञा पद के पूर्व आते हैं तब विशेषण की भाँति उस संज्ञा पद की विशेषता बतलाते हैं। यही कारण है कि इन्हें संकेतवाचक विशेषण के नाम से अभिहित किया जाता है। वाक्यात्मक स्तर पर ही इनकी पहिचान हो सकती है। यथा:

यह—

प. ४४.३	अमर जांनि संची यह काया
प. ७९.२	नैनन देखत यह जगु जाई

५.४ तुलनात्मक पद्धति

विशेष + ते + विशेषण

साकत ते सूकर भला —	क. २१.१२.१
पानी हूँ तें पातरा —	२९.३.१२
धूवां हूं ते झीन —	"

सांकरु हूंते सबल है माया	३१.९.१	
ता सुख ते मिथ्या भली —	४.३.२	
कबीर सभ ते हम बुरे	१५.३२.१	

५.५ प्रत्येक बोधक विशेषण

खोजु हर रोज —	प. ८७.१
हर पात —	प. ७३.४

५.६ विशेषण संख्यावाचक—पूर्ण

पूर्णवाचक

५.६१

एक–	सा. ४.५.१	(९७ बार प्रयुक्त)
इक–	सा. ३.२.१	(१५ बार प्रयुक्त)
एकहिं —	र. १.१	
एकै —	र. १.२	
	र. १०.८	
	सा. १०.१०१	
एकी —	सा. २६.४.२	
दोइ —	सा. २.२६.२	
	११.३.२	
	४.५.१	
	र. २.११	
चारि —	१५.५५.८	
चार —	र. १४	
पंच —	प. १३६.४	
छौ —	प. १३६.४	
छ —	र. १४	
खट —	र. १४	
सात —	सा. ८.२.१	
	१६.६.२	
आठ —	२.४.२	
नौ —	प. ९५	
	प. ६	
नौं —	सा. २२.१२.२	
	१०.७.१	

नव	—	प. १११.२	
नव (ग्रह)		१४.३	नवनिधि — १४.७
दह	—	सा. २१.११.१	(४ बार प्रयुक्त)
दस	—	प. ५३.६	(११ आवृत्ति)
		६०.४	
		६८.२	
		सा. १५.३.१	
ग्यारसि	—	प. १७०	
बारह	—	प. ११२	
		सा. १७.३.१	
चौदह	—	सा. १.२.१	
		प. १०५.६	
सोरह	—	प. ११२.६	
		प. १५८.८	
उनइस	—	प. १११	
बीस	—	प. ८३.३	
		प. १३७.६	
पचास	—	सा. २१.१७.१	
बावन	—	सा. ३३.१.२	
		र. चौ. १	
छप्पन	—	प. ४२	
चौंसठि	—	सा. १.२.१	
अठसठि	—	प. १७१	
अढसठ	—	प. ३५	
सत्तरि	—	प. ४२	
बहत्तरि	—	प. १११	
चौरासी	—	सा. १.४.१	
अठासी	—	प. ५	
छ्यानवै	—	प. ६६	
सौ	—	३.२१.२	
सौं	—	२१.२०.२	
सहस	—	प. ५-७	

४२.२
१०४.५
१०५.७
१५८.८

सहसैं	—	प. १५८.३		
हजार	—	स. १५.२७.१	(केवल एक बार)	(इस संख्या में यह
हजारी	—	४.३४.१		शब्द नहीं है)
हजारीक	—	प. ११०.१	कोटि	३.१०.१
लाख		प. ४२		

५.६२ **विशेषण-संख्या क्रम**

पहिला	—	सा. २२.६.२
पहिलै (परचै)	—	प. ११०.११
दोसर	—	क० र० चौ० ८
दूसर	—	र. १६
दूजा	—	सा. १.२८.१
दूजी	—	११.१.१
दुतिअ	—	प. ६८
चौथा	—	सा. ५.११.१
चौथे	—	प. २३.९
चउथै	—	" ३२.६
पंचे	—	सा. १५.६७.१
छठा	—	सा. ३.१४.१

विशेषण **क्रम**

नवै (घर)		प. ८०.८
		सा. १५.७६.१
दसवां	—	सा. २६.११.२
दसएं	—	" २९.१.१
दसवें	—	प. ८०.८
		१२३.५
		१४५.४
		चौ. र. ५.६

५.६३ **विशेषण-संख्या-आवृत्ति**

दोनों	सा. १.१७.२
दोनउं	सा. २.३.२
दोन्यूं	१.६.१
दुहुं	२०.९.२
दूहूं	९.२०.१
दोउ	र. ६.२ र. १८
तीनों	सा. २.३०.२
तीनिउं	सा. ३०.२.१
तिहूं	सा. ३.१३.१ २४.११.२
चारिउ	२१.४.२
चहुं	३.२३.१
पांचउ	प. ५ सा. ५.१.२
पाचौं	प. २ र. चौ. २६
आठौ	२४.१०.२

विशेषण-संख्या-आवृत्ति

नउं	प. ६९
दसहुं	सा. ३.३२.२
दहुं	र. चौ. ७
चौबीसौं	प. १७७
पचीसौं	प. २
तैंतीसौं	प. ५
लाखौ	सा. ८.१२.२
कोटिक	सा. ४.२.१

५.६४ **विशेषण-संख्या-अपूर्ण**

पाव	(पाव कोस पर गांव) सा. १०.६.२
आधा	प. ५८ सा. १५.५४.२
आधी	सा. २४.४.१

अधूरी	सा. १.२९.१
(एक) आध	" १.२६.२
आधु	" १४.१६.२
आधा परधा	" १५.५४.२
पौने	" १६.१२.२
तिहाई	प. १११
सवा	प. ४२
अढ़ाई	प. १११
साढ़े तीन—	सा. १६.१२.२
पौने चारि —	सा. १६.१२.२

५.६५ **विशेषण संख्या-गुनाबोधक**

दूनां —	प. ९०
दूनी —	सा. १८.८.२
दुहेरा —	प. ११
दोवर —	प. २५
तेवर —	प. २५
सौ बार	१.१९.१
	२१.२७.१

५.६६ **विशेषण - संख्या - अनिश्चित**

बहु	—	सा. ३.१२.१
बहुत	—	सा. २.१८.१
बहुतै	—	११.२.१
		२१.९.१
बहुतैं	—	र. १७
बहुतक	—	सा. १४.३४.१
अनेक	—	सा. ३.१.२
		र. ११
अनिक	—	प. ३९
सकल	—	सा. ३.१०.१
सगले	—	प. १६२
सारा	—	र. १७
केतिक	—	सा. १५.३९.२

अनंत — र. १४

सा. १.१३.२

अनंता — र. १५

७ क्रिया विचार

७.१ सहायक क्रिया

हिन्दी आदि आ० भा० आ० भाषाओं की काल रचना में सहायक क्रिया और कृदन्त से विशेष सहायता ली जाती है। कबीर ग्रन्थावली में प्राचीन अस् और भू धातु से विकसित –ह– तथा –भू– और रह—रूप प्रधान क्रिया के रूप में तथा—संस्कृत काल रचना में सहायक क्रिया की भाँति प्रयुक्त हुए हैं। सहायक क्रिया का विवेचन यहाँ संक्षेप में किया जाएगा। इन क्रियायों के तिङन्त रूपों में लिंग परिवर्तन नहीं होता और कृदन्तीय रूपों में लिंग परिवर्तन होता है।

होना

७.१२ १—वर्तमान निश्चयार्थ

उत्तमपुरुष ए० व०

–हौं – (चितवत) हौं – सा. ११.६.१

–हूँ (सुमिरत) हूँ – र. १९

(करता) हूँ – २१.२९.१

(होती) हूँ – प. १६०

" ब० व०—

हैं –

अन्य पुरुष – ए०व०

है – (चहत) है २५.१८.२

(होत) है ६.१२.२

(दाझत) है "

ब० व०

हैं (जात) हैं सा. ३.१२.२

(मानत) हैं १६.१६.१

(कहते) हैं २१.५.१

उत्तमपुरुष ए०व०

– हूँ = १८ आवृत्ति

(प्रधान क्रिया के समान प्रयुक्त) –है = १४३ आवृत्ति

प. ६३, र. १०, सा० ६६, चौ० ४

अन्य पुरुष ए० व०

हैं – सा. १.६.१

अहै – २९.२.२

आहि – (१० आवृत्ति)

प. ६

र. २

सा. २ २२.२.१

अत्थि – चौ. र. ५.३

ब० व० – हैं – १४ आवृत्ति

प. ५.८, १३.२

सा. १.२८.१, २१.५.१

७.१२ **सहायक क्रिया**

२– भूतनिश्चयार्थ

अन्य पुरुष ए० व० ब० व०

था – सा. ८.५.१

(जांचन जाइ था)

" सा. १.१४.१

(लागा जाइ था)

" सा. ४.१४.१

(चाला जाइ था)

" प. ४० (दीया था)

स्त्री० थी– प. १०७ होती थी

उत्तमपुरुष था– ९.२५.१ आया था थे – २१.९.२

१५.५९.१ लिया फिरे था (चाले थे)

स्वतंत्र क्रिया के समान प्रयुक्त :

था– १.१०.१०=११ आवृत्ति (प. ३, सा. ८)

थी– २.४.१ = १ आवृत्ति : सा. १

हुवा– २१.१७.१=४ आवृत्ति (प. १+सा. ३)

हुआ– १.१२.२ = ५ आवृत्ति (प १+सा. ४)

हूआ– १. १२.१ = २ आवृत्ति (प. १+सा. १)

भयौ– प. ६-४, १९.३=१७ आवृत्ति (प.१३, र.१, समा.३)

भया– १.१.१-२=७० आवृत्ति : प. १३, सा. ५५,

र. १, चौ. र. १

भई– प. ५५.४, १५.७ = ३२ आवृत्ति (प.१७सा.१५वार)
थे– प. ५०.७ = ३ आवृत्ति
सा. १५.५९.१
हते– – = १ आवृत्ति २१.९.२
हुए– १ आवृत्ति प. १६२.८
भए– सा. १.४.२ = ३० आवृत्ति (प.११,२.८,सा.११
रहा– प. ९४.४, १६४.४ २५ आवृत्ति (प. २, २–३,
सा. २० वार)
सा. ६.७.१
७.३.२
रहे – प. १७.७.३-३४ १३ आवृत्ति (प. ५, २ र-२, सा. ५ चौ. १)
रही – प. १७.४,१२६.७ १६ आवृत्ति (प. ४, सा. १२)

सहायक क्रिया

७.१३ **वर्तमान संभावनार्थ**

अन्य पु० होइ : २.२७.२

भूत संभावनार्थ

अन्य पु० होता (१९.२७.१) होते (४.१.२) होता –सा. १
हुता – सा. २
हुता होते प. ३
र. १०
हुते (३१.९.१) सा. २
हुते –सा. १ —
होत– (६.१२.२) होत – प. १५७
चौ. १
सौं. ५
होती– (१.२५.१) होती– प. १
र. १
सा. १

सहायक क्रिया भविष्य निश्चयार्थ

७.१४

अन्यपुरुष	**ए० व०**	**ब० व०**	**विशेष**
	होइगा (१५.१५.२)		**होइगा–**

होइगो (३.२.२) प. २
होइगी (२१.२२.२) सा. १६
होसि (४.१९.२) ८

सहायक क्रिया

७.१५ **वर्तमान आज्ञार्थ**

ए० व० | ब० व०
होहु – (प. ७.२)

रहना

भूत निश्चयार्थ

रही– (प. १.२) रही— प. ४
रहि– (१.४.२) सा. १२

———

१६

सकै

को कस गरजहिं सकै सहारी– र. ७.६

क्रिया

७.२ **कृदन्त**

अन्य आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं की भाँति कबीर ग्रन्थावली में भी कृदन्तों का प्रयोग महत्वपूर्ण है। कबीर ग्रन्थावली में निम्नलिखित कृदन्तीय रूप मिलते हैं।

७.२१ (१) **वर्तमानकालिक कृदन्त**

धातु	**प्रत्यय**	**सिद्धरूप**	**संदर्भ**
कर +	ता (त+आ)	करता	सा.१९.२.२
सो (सू)	ता (त+आ)	सूता	३.१.१
परमोध्	ता (त+आ)	परमधोता	२१.३३.२
जर	ता (त+आ)	जरता	५.२.२
डरप्	ता	डरपता	२.४३.२
जर	ता	जरता	१५.७.२
समा	ता	समता	३२.६.२
सुमिर	ता	सुमिरता	३.५.१
बह्	ता	बहता	"
		बहते	१५.८९.१
चल्	ता + ई	चलती	१६.५.१

वह्	ता+ई		वहती	२.५१.२
हस्	अन्त		हसन्त	२३.२.१
चढ्	अन्त+ई		चढ़न्ती	३१.११.१
वर+वल्	अन्त+इ		वलन्ती	प. १६१
दीप्	अन्त+ई		दिपन्ती	प. ९२
वज्	अन्त+आ		वजंता	सा. ५.१.२
वस्	अन्त+आ		वसंता	सा. १५.६६.२
विक्	अंत+आ	=	विकंता	सा. १६.८.१
झर्	अंत+आ	=	झरंता	१६.३६.१
जान्	अंत+आ	=	जानंता	३.२४.१
कर्	अंत+आ	=	करंता	प. १६१
पढ़	अंत+आ	=	पढंता	"
सुन्	अंत+आ	=	सुनंता	प. ९२
लुन्	+अत्	=	लुनत्	सा. २६.११.९
आव्	+अत	=	आवत	१६.३४.१
वढ़	+अंतो	=	वढ़तो	१६.१५.१

७.२२ (२) **भूतकालिक कृदन्त**

विनंठ	+आ	=	विनंठा	सा. २४.१.२
भर	+आ	=	भरा	४.३६.२
विलंब	+आ	=	विलंबा	२.३७.१
छाप	+आ	=	छापा	प. १४
कह	+आ	=	कहा	र. १३
वेध	+आ	=	वेधा	
		=	वेधे (विकृत)	१.७.२
फूल	+आ	=	फूला	१८.१०.२
पकड़	+इआ	=	पकड़िया	२४.१२.१
मार्	+ई	=	मारी	२४.२.१
ऊभ	+ई	=	ऊभी	१२.६.२
बैठ	+ई	=	बैठी	२१.१०.२
लपेट	+"	=	लपेटी	३१.१.२
सींच	+"	=	सीची	३१.१३.१
पाड़	+"	=	पाड़ी	१.१८.१

बिछुरे	+ई	=	बिछुरी	२.४.१-२
चढ़	+"	=	चढ़ी	१४.३.१
दाघ	+"	=	दाघी	१६.२.१
ठाढ़	+"	=	ठाढ़ी	"
बन	+ई	=	बनी	प. ३
लाग	+"	=	लागी	प. १८
बिछुर	+ए	=	बिछुरे	प. १७
गम्	+आ गया	=	गए	प. १०

७.२३ (३) **क्रियार्थक संज्ञा**

खेल	+ ना	=	खेलना	सा. ३.५.२
बिसाहु	+ ना	=	बिसाहुना	१.१५.२
बोल	+ ना	=	बोलना	४.२१.२
डरप	+ ना	=	डरपना	१४.१.२
पेख	+ ना	=	पेखना	१५.४.२
दे	+ ना	=	देना	२१.२.१
रूस	+ ना	=	रूसना	२४.१५.१
लोट	+ ना	=	लोटना	१५.२३.२
मर	+ ना	=	मरना	१५.६२.१
दौर	+ ना	=	दौरना	१६.५३.१
रह	+ ना	=	रहना	प. १७५
बोल	+ ना	=	बोलना	प. ६१
तन	+ ना	=	तनना	प. १२
बुन	+ ना	=	बुनना	"
पछा	+ ना	=	पछाना	र. चौ. ११८
सोव	+ अन्	=	सोवन्	सा. ३.२.१
जर्	+ अन्	=	जारन	सा. १७.१
मिल	+ अन्	=	मिलन्	" २१.९.२
बिसाह	+ अन्	=	बिसाहन्	" २१.१०.२
आव्	+ अन्	=	आवन	१६.४०.२
जाव	+ अन्	=	जावन	" "
सूख्	+ अन्	=	सूखन	" १६.३२.१
जांच	+ अन्	=	जांचन	" ८.१५.१

मर्	+ अन्	=	मरन	१९.५.१
पर	+ अन्	=	परन	१४.२७.२
जल	+ अन्	=	जलन	१४.२३.१
मिल	+ अन्	=	मिलन	२.१८.२
गाव्	+ अन्	=	गावन	सा. ३२.१३.१
रोव्	+ अन्	=	रोवन	"
मांग्	+ अन्	=	मांगन्	३२.१६.१
पी	+ अन्	=	पियन	३३.६.२
भोग	+ अन्	=	भोगन	र. १.५
हो	+ अन्	=	होअन	" २५.१८.२
छूट्	+ अनि	=	छूटनि	
राच	+ नौं	=	राचनौं	सा. ३०.१.१
पढ़ि	+ बा	=	पढ़िबा	२१.३४.१
मरि	+ बा	=	मरिबा – मरिबे	१४.२६.२
कहि	+ बा	=	कहिबा – ए–कहिबे	९.२.२
दे	+ बा	=	ए= देबे	१.१.१
खा	+ ब	=	खाब – ए–खाबे	३२.४.१
तिरि	+ बा	=	तिरिबा — ए =तिरिबे	र. २०
नाचि + बौ		=	नाचिबौ	प. ५०
भरि+बौ		=	भरिबौ	१९.१३.१

७.२४ (४) **कर्तृवाचक कृदन्त**

रचन	+हार	=	रचनहार	३२.४.१
छानन	+हार	=	छाननहार	२७.१.२
निकासन	+हार	=	निकासनहार	२४.७.२
सिरजन	+हार	=	सिरजनहार	८.१७.१
मारन	+हार	=	मारनहार	८.१७.१
परखन	+हारे	=	परखनहारे	१८.२.२
रोवन	+हारे	=	रोवनहारे	१६.२३.१
पानी	+हारि	=	पनिहारि	४.१०.२
कर	+ता	=	करता	६.५.१
दा	+ता	=	दाता	४.५.२

७.२५ पूर्वकालिक कृदन्त

प्रत्यय		उदाहरण	संदर्भ	विशेष
धातु शून्य	∅	जानि बूझि	सा. ४.७.१	
		तजि	"	
		उठि	३.२.१	
		पसारि	३.२.२	
		समुझि	३.२४.१	
		पढ़ि गुनि	र. ७.१	
		जलि	सा. २.५४.१	
		हंसि, हंसि	सा. २.३८.१	
		लागि	२.४२.१	
		दे	१.३०.२	
		मिलाइ	१.३१.१	
		बिचारि बिचारि	२.१३.२	
		लिखि लिखि	२.२०.२	
		वरसि	"	
		रोइ रोइ	सा. २.३०.२	
		तपाइ तपाई	" २.३२.२	
		निहारि निहारि	" २.६.१	
		लै	" १.१.२	
		भ्रमि भ्रमि	१.२६.१	
		करि	१.१५.१	
		चुनि चुनि	१.७.२	
		उलटि	१५.१४.२	
		बांधि	१५.१५.२	
		बांधि	१५.४१.१	
		अघाइ	१५.४१.१	
		निवारि	१५.८१.२	
		पकड़ि	१८.१४.१२	
		पकड़ि	१८.१४.२	
		फाटि	२२.५.२	
		उरझि	२२.६.१	

गलि ९.३.२
करि करि ७.१२.२

पूर्बकालिक कृदन्त

धातु +	प्रत्यय	उदाहरण	संदर्भ	विशेष
	– य, इ	होय	र. ३.५	
	– हु + ऐ	हवै	र. ५	
	– इ	होइ	सा. १.१७.२	
	–	लगाइ	प. १४	
	–(कर, करि)			
	– कै			
	– इ + करि	कमाइकरि	३.१०.१	
	"	छांड़िकरि	३.२०.१	
	– कै	वेधिकै		
	–करि	संजोइकरि	र. ६.६	
	– कै	पेरिकै	सा. २४.९.२	
	"	मुंडाइकै	२५.१४.२	
	"	उड़िकै	२९.१९.१	
	– करि	छांड़िकरि	३१.१४.२	
	"	जानिकरि	३१.२२.१	
	– के	पैठिके	२.४.२	
	कै	सोधिकै	३३.१.१	
	– करि	देखिकरि	२३.२.१	
	– करि	पेलिकरि	१८.९.१	
	– कै	देखिकै	२५.७.२	
	–करि	दिखाइकरि	४.२४.२	
	"	पहिरिकरि	१.२९.२	
	"	रीझिकरि	१.३४.१	
	"	खैंचिकरि	२.३५.१	
	"	धरिकरि	१.२३.१	
	–कै	लरिकै, पहनिकै	५.१.२	
	करि	पैसिकरि	१४.८.१	
	–कै	सकेलि कै	१५.४.१	

कै	जोरिकै	१५.८.१
”	लैकै	प. २
”	बैठिकै	२.२.१
”	पैठिकै	२.२.१
”	मिलिकै	२.३०.२
”	बैठिकै	१.२८.१
”	छोलिकै	१.८.२
–करि	चलिकरि	प. ५८

७.२६ **भूतक्रिया द्योतक**

प्रत्यय	**उदाहरण**	**संदर्भ**	**विशेष**
भूतकालिक कृदन्त+ए–एं	कीए	सा. ८.४.२	(क्रियार्थक संज्ञा) जो कीए ही होत है तौ करता औरै कोइ
	कहें	७.८.२	कहे न कोइ पति-याइ (कहे=कहने से)
	लिए	५.१३.१	
	मूएं	२.९.२	
	बैठे	प. ६	घर बैठे पाए
	छुए	र. ७.४	(क्रियार्थक संज्ञा)
	जाने	१०.६.१	”
	मिले	प. १	”
	काटे	१३.१.२	”
	परे	१४.६.१-२	
	भए	”	
	जूझे	१४.२५.१-२	
	किए	१४.२९.२	
	दीन्हें	१४.४०.१	
	जागे	१५.९.२	
	साधे	”	
	लीन्हें	प. २०	
	खोए	१५.३७.१	
	राखें	१६.६.२	

	बिछुड़े	१६.३५.२
	मेटे	१९.१६.१
	लिए	२१.२०.२
	पड़े	२४.१६.२
	फिराए	२५.७.२
	पहिरे	२५.१०.२
	फेरे	२५.११.१
	बिनसे	२५.१५.२
	गाए	३३.५.१
	लिए	४.१६.२
	पड़े	४.१६.४
	मांगे	४.१५.९
	सीखें, सुने पढ़ें	प. ११३
	पठएं	प. ४.५३
	चीन्हें	प. २.१२

७.२७ **वर्तमान क्रिया द्योतक**

वर्तमान कालिक कृदन्त+ए (विकृतरूप)

बूडत+ए	बूंडते	सा. ५.३.२
	मरते मरते	१८.१.१
	सौंपते	६.२.२
	ठठोंरते	९.३२.२
	चलते चलते	१०.६.२
	राखते	११.४.२
	पड़ते	१४.५.१
	खेलते	१४.२१.१
	परमोघते	२१.१.१
	राखते	२१.१.२
	पुकारते	३३.६.१
	कहते	२२.३.१
	फेरते	२५.६.२
	खेलते	१.३२.२
+शून्य	देखत	र. २.८.२

थाहत	सा. ९.३३.२
चलत चलत	र. १३
सूंघत	प. २
बोलत बोलत	प. ६१
करत	सा. १.१९.२
निरखत	२.३.१.२
सोवत	२.४३.१
अछत	१.१२.२
पीवत	१२.३.२
सुमिरत	४.३.२
जीवत	१४.३७.१
पियावत	१५.१२.१
बोलत	१५.१८.१

७.२८ तात्कालिक कृदन्त

प्रत्यय	संदर्भ	विशेषण
अपूर्ण क्रिया द्योतक – +ही		
लागत ही	सा. १.९.२	
छूवत ही	सा. २.१६.२	
देखत ही	सा. १६.२१.२	

७.३ काल रचना : साधारणकाल वा मूलकाल

कबीर ग्रन्थावली में मूलकालों की रचना दो प्रकार से होती है :—

१—प्राचीन तिङन्त रूप से विकसित तिङन्त तद्भव क्रिया रूप ,

२—प्राचीन कृदन्तों से विकसित कृदन्त तद्भव रूप। इन क्रिया रूपों में काल, अर्थ, अवस्था, पुरुष, लिंग, वचन, वाच्य प्रयोग संबंधी विकार होते हैं। प्रथम वर्ग में निम्नलिखित कालों के रूप आते हैं।

७.३१ (१) वर्तमान निश्चयार्थ—इस काल में लिंग संबंधी विकार नहीं होता है।

उत्तमपुरुष :+औं उत्तमपुरुष, एक वचन +औं में अन्त होने वाले पर्याप्त रूप मिलते हैं—

सुमिरौं (र. २.१), जालों (सा. २२.१.१), मरौं (२४.२.१)
सकौं (२.३२.१), फिरौं (६.६.२), जानौं (१०.६.१), जोड़ौं (१०.१६.२)
पूछौं (१४.३७.१) खोजौं (प. ८) पावौं (प. ८)
+ औं (मीचौं) २.४२.२)

+ ऊ उत्तमपुरुष, एकवचन 'ऊं' में अंत होने वाले रूप ऐतिहासिक दृष्टि से 'औं' वाले रूपों के विकसित रूप हो सकते हैं। इनकी संख्या भी कबीर ग्रन्थावली में पर्याप्त है–

पिऊ (सा. २.४२.२), पाऊं (२.४२.२) सकूं (२.३२.१)
फिरूं (५.१०.१) कहूं (७.९.१-२) डरूं (७.९.१) सेऊं (२१.१४.१)

+ उं **उत्तम पुरुष एकवचन**

जाउं (६.१.१) लहाउं (८.१२.१) कराउं (८.१२.१)

वर्तमान निश्चयार्थ

मध्यमपुरुष ए० व०

+ असि प्राचीनतम मध्यमपुरुष, ए० व० विभक्ति है। कबीर ग्रन्थावली में कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं–

विलावसि (प. १७१), गरबसि (प. ७३)
पढ़ावसि (प. २६)

+ अहि 'असि' का संभावित विकसित रूप हो सकता है —

ढूंढहि (र. चौ. १।१९)

+ ऐ अहि का विकसित रूप हो सकता है। कबीर ग्रन्थावली में सर्वाधिक यही विभक्ति प्रयुक्त हुई है।

सोवै (१५.१.२), हतै (१५.१५.२)
बूड़ै (४.३) डौलै (प. ३) पखारै (प. ३)

वर्तमान निश्चयार्थ

अन्यपुरुष ए० व०

विभक्ति

+ अति––प्राचीनतम विभक्ति है। वहुत ही कम उदाहरण मिलते हैं।

निरति (प. १०८) छोति (९.५.२)

+ यति् प्राचीन विभक्ति।
'अति' का ही विकसित रूप ज्ञात होती है।

सुनियति (प. ४५)

+ आत प्राचीन विभक्ति और अति का ही विकसित रूप प्रतीत होती है।

मिलात (प. ७३, जपात (प. ७३)

+ अइ (आइ) अति का ही विकसित रूप है। (अति > अइ > अई)

कबीर ग्रन्थावली में पर्याप्त उदाहरण मिलते हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से इसकी स्थिति मध्य की है। अर्थात् + अति के वाद अहि + ऐ के पूर्व काल में विकसित हुआ।

चढ़ई (१२.१.२), विकाइ (१४.३२.२) बाजई (१६.१.१)
छांडई (११.११.२), कुम्हिलाइ (१९.३९.२) पतियाइ (१९.१६.२)
तिराइ (२४.११.१) चढ़ई (२४.१६.१) भावई (२७.३.१)
पछिताइ(२९.११.२) खाइ (३०.२१.१)कुम्हिलाइ,कुम्हिलाय (१३.१३.१)
लखई (१४) जानही (२२.१४.२) निंदई (२३.१.१) आवई (२३.२.२)
घुघुवाइ (२.८.१)

+ अहि, अही

चढ़हि (२६.३.१), भाजही (१२.३.२), पमावही (१४.१४.१)

+ ऐ सर्वाधिक प्रयुक्त विभक्ति है । ९५ आवृत्ति

खेलै,	१.३३.१	सुमिरै,	४.११.२	ढूढ़ै	७.१.७
नसै	२.१.२	पकड़ै	४.१७.२	देखै	"
मानै	"	समझै	४.२७.२	तौले	८.९.१
बरै	२.७.१	जानै	४.३६.१	तजै	८.१६.२
लखै	२.७.१	लागै	६.२.२१	विहजै	८.२७.२
जगमगै	९.५.१	गिनै	११.९.१	पुकारै	१४.३.१
निरखै	९.१६.२	परिहरै	११.९.१	सहारै	१४.५.२
नीपजै	९.१८.२	छाड़ै	११.१४.२	भागै	१४.१४.१
टिकै	१०.१.१	मानै	१२.४.१	ऊपजै	१४.३१.२
संचरै	१०.२.१	गिनै	"	बहै	२५.२४.२
रहै	१४.३.१	चरै	१२.९.१	ऊजरै	२७.४.२
सहारे	१४.५.२	साले	"	लागै	२९.१२.२
सहै	१५.६.२	उगै	१६.१९.२	छेड़ै	३१.७.१
जरै	१५.७.१	फूलै	१९.३९.२	घालै	३१.१६.२
निकसै	१५.१८.२	टिकै	१९.४.१	बोरै	३१.२५.२
जामै	१५.२३.२	सेवै	२१.१४.१२	मांगे	३२.६.२
बडरै	१५.३६.२	पकड़ै	२१.२२.२	घटै	३२.१५.२
फूलै	१५.४५.२	देखै	"	जानै	३३.८.२
खेलै	१५.६५.२	तजै	२१.३०.१	बूझै	"
धरै	"	भूडै	२५.३.१	रमै	३.२१.१
दीसै	१५.८३.१	फेरै	२५.६.१	खसै	र. ९.६
खोजै	१५.८७.१	धावै	२५.७.१	भावै	प. १३
बियापै	र. १.२	गहै	२५.१५.२	तरपै	र. १३

रहै र. १.३	प्रगटै २५.२०.२	वरसै र. १३
कहै र. १.७	भेदै २२.१२.२	भरै २.१२.२
तुलै र. २.१	बकै २३.५.२	परै २.९.१
पूजै र. २.२	निंदै २३.६.१	मिलै २.४.१
बखानै ६.५	बूझै २.३१.१	मांगैं १.२९.२
हंसै १.२२.१	रीझै २.२९.२	वांटै १.३१.२
बोलै "	तरसै २.१८.२	
कहै "	संचरै २.११.२	
चेतै २२.६.२	कराहै २.१२.२	

+ वै

आवै ४.१५.२	लेवै २०.११.२	चितवै ३१.१.१
मिलावै ४.४०.१	सेवै २१,१४.२	सुनावै ३२.२.१
पीवै ९.३८.२	खोवै २६.२.२	बजावै २.१७.२
आथवै १६.१४.२	नसावै ३०.७.१	आवै प. ५०

वर्तमान निश्चयार्थ

अन्य पुरुष वo वo

+ अंत संभवतः प्राचीनतम विभक्ति है। संस्कृत विभक्ति 'अन्ति' का ही विकसित रूप हो सकती है। बहुत ही कम उदाहरण मिलते हैं।

दीसंत ४.२६.१	परंत २१.२५.२
फिरंत ४.२६.१	उबरंत "
तजंत ४.२.२	

+ अहि > अहीं

मिलहि ४.२०.१ लहरहिं प. ३६
जाहि ११.२.२
पावहि ११.२.२
पहिरहिं १५.२६.१
मारहि २१.५.१

+ अहीं

जानहीं ७.२.२
पावहीं ९.२१.२
भोरहीं २.२.२
दीसहीं २१.२७.२

+ **अइं** लहरइं प. ३६

\+ ऐं अत्यधिक प्रयुक्त विभक्ति

चलैं ४.१८.२	गनैं ४.७.२

\+ वैं

आवैं ४.३२.१	रहैं "
खैंचैं ६.१.१	आनैं "
चुगैं ९.३४.१	उचारै र. ९.५

\+ ऐं

भावैं २०.११.१	बखानैं र. १४
चीन्हैं ३४.१.१	उनवैं र. १३
बसैं ४.६.२	लोकैं २.२५.२

७.३२ **वर्तमान आज्ञार्थ**

वर्तमान आज्ञार्थ के रूप भी प्राचीन तिङन्त रूपों से विकसित हुए हैं अतएव लिंग परिवर्तन संबंधी विकास यहाँ भी संभव नहीं है। आज्ञा अधिकांशतः मध्यम पुरुष में ही होती है। अतएव उसी पुरुष में ही इसके रूप दिए जाते हैं।

मध्यमपुरुष **ए० व०**

\+ इ

जा + इ	जाइ	१.१६.१
जान् + इ	जानि	२७.४.१
मार् + इ	मारि	२९.१७.१
पीस् + इ	पीसि	"
छांडे् + इ	छांड़ि	३२.५.१
सुन् + "	सुनि	२.४५.१
जाग् + "	जागि	१४.४०.२
कर् + "	करि	१५.२१.१
गा + "	गाइ	"
खीझ + "	खीझि	२२.७.१
निबेर + "	निबेरि	२७.२.२
खेल + "	खेलि	२४.९.१
चल + "	चलि	२५.१.१
ला + "	लाइ	२६.३.२
पिछान+"	पिछानि	" ७.२
कह + इ	कहि	२.३१.२

रह + इ	रहि	२.४१.२
मर + "	मरि	१४.६.२
कर + उ	करु	१५.३४.१
मिल + उ	मिलु	प. ९
	आउ	प. १३

+ अउ

छांड़उ	३३.२.२
निंदउ	"
खाउ	२४.६.१
जाउ	२४.६.२

+अहु

रहहु	२४.६.२
रोवहु	१६.३.२
देहु	४.२८.२
जाहु	२.१४.१
सुनहु	प. १२
परहु	"
लेहु	प. १५

+औ

बसौ	प. ७
उतारौ	६.७.१-२
भानौ	"
कसौ	२९.२०.१-२
मारौ	"
मिलौ	१५.३८.१
परौ	१६.२.२
डारौ	२२.७.२
लागौ	र. ३.१
दिखाऔ	प. ४७
बुलावौ	प. ४७
आवौ	"
दुखवौ	२.१६.१

अन्यपुरुष +				
	संचरै	१२.२.२		
	उतरै	१२.५.१		
	उतारै	१४.३१.२		
+ इ	होइ	१२.२.२		
	देइ	१.८.१		
	खाइ	२९.५.२		
+ अउं	दौरावउं	प. ८१		
,,	पहिरावउं	,,		
	खाउं	प. २२		
+ औं				
	छोड़ौं	२.११.२		
	जारौं	२.२०.१		
	लिखौं	२.२१.२		
	मेलौं	२.२२.२		
	सीचौं	२.२२.१२		
	देखौं	,,		
	जालौं	५.१३.२		
	करौं	प. ३५		
	चाखौं	प. ३६		
	धरौं	प. ४		
	रौदौं	,,		
+ ऊं	जाऊं	प. ४	मारूं	२९.११.१
	लाऊं	,,	तिरूं	२९.१८.२
	लगाऊं	,,	जागूं	प. ३५
	चढ़ाऊं	,,		
	मगाउं:	,,		
	नवाऊं	,,		
+ हूं	करहूं	र. १२		

७.३३ **(३) वर्तमान संभावनार्थ**

वर्तमान संभावनार्थ के रूप भी प्राचीन तिङन्त रूपों के तद्भव रूप हैं अतएव इनमें लिंग संबंधी परिवर्तन नहीं होता है। अर्थ और प्रयोग में भिन्नता होने पर भी रूप

रचना की दृष्टि से वर्तमान निश्चयार्थ और संभावनार्थ में कोई विशेष अन्तर नहीं है। फिर भी क० ग्रं० में प्रयोगावृत्ति की दृष्टि से वर्तमान संभावनार्थ की अपेक्षा वर्तमान निश्चयार्थ के रूपों का कहीं अधिक प्रयोग हुआ है।

७.३४ भूतनिचायार्थ

भूत निश्चयार्थ प्राचीन संस्कृत कृदन्तीय रूपों से विकसित तद्भव रूप हैं अतएव प्राचीन संस्कृत कृदन्तों की भाँति इसमें भी कारक के लिंग परिवर्तन से क्रिया का लिंग परिवर्तन हो जाता है। अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओं के मध्यकालीन अवस्था की भाँति क० ग्रं० में कृदन्तों के बने काल पर्याप्त मात्रा में प्रयुक्त हुए हैं। एकवचन भूत निश्चयार्थ की रूप रचना को मानक (स्टैण्डर्ड) हिन्दी, खड़ी बोली (dialect) व्रज, अवधी और भोजपुरी के बीच एक सबसे बड़ी कसौटी के रूप में स्वीकार किया जा सकता है। सामान्यतया स्टैण्डर्ड हिन्दी खड़ी बोली का एकवचन भूतनिश्चयार्थ आकारान्त, व्रज, राजस्थानी, बुन्देली, कन्नौजी, मालवी आदि का औ—ओकारान्त, अवधी का 'वा'कारान्त 'इस्' या वा या 'एवं' तथा भोजपुरी का इल् या लकारान्त होता है। क्रियापद वाक्य का कलश या शीर्ष होता है। वाक्य की क्रिया से यह अधिकांशतः जाना जा सकता है कि वाक्य किस भाषा या बोली का है। कबीर ग्रन्थावली की भाषा में बोली संबंधी विभिन्नता को (dialectical variation) पहचानने के लिए भूतनिश्चयार्थ एकवचन के रूपों से सर्वाधिक सहायता मिल सकती है। अतएव प्रस्तुत अध्ययन में भूत निश्चयार्थ की समस्त आवृत्तियों को यहाँ संकलित करने का प्रयत्न किया गया है। कबीर ग्रन्थावली की मूलाधार बोली (basic dialect) की प्रकृति को समझने में इससे सहायता मिलेगी।

अन्यपुरुष एo वo

ला+इया	लाइया सा. २.४८.१			
लाग+इया	लागिया सा. १.२३.१-२			
दे+इया	दिया	३.१३.२		
बनज्+इया	बनजिया	१.११.१		
धर्+इया	धरिया	१६.१४.१		
चुन+इया	चुनिया	१६.१९.२		
मिल+ इया	मिलिया	६.४.१	संचे	३१.१२.१
जनम्+ ,,	जनमिया	६.६.१	मुए	,,
बिगाड़+ ,,	बिगाड़िया	६.१०.१	उबरे	,,
समा+ ,,	समाइया	७.३.१	बड़े	१.९.१

भज् + आ	भजा	१६.१५.२
बंध् + "	बंधा	१६.३०.१
खड़ा + "	खड़ा	"
बस + "	बसा	१७.५.१
जान + "	जाना	१९.११
पहिर् + "	पहिरा	१६.९.२
फिर् + "	फिरा	४.४३.१
जार + "	जारा	६.४.१
बीत + "	बीता	६.७.१
रह + "	रहा	"
चाल + "	चाला	४.१४.१
मिल + "	मिला	"
कह + आ "	कहा	४.१४.२
बूझ + "	बूझा	३.२४.१
डिग् + "	डिगा	३.१८.१
घाल + "	घाला	३१.१७.१
चढ़ + "	चढ़ा	३१.२५.१
मुअ + "	मुआ	३१.२६.२
मिल + "	मिला	२५.२४.२
लाद + "	लादा	२६.९.२
डार + "	डारा	२२.६.१
सुरझ् + "	सुरझा	२१.२१.१
बूड़ + "	बूड़ा	१५.९.२
पर + "	परा	१५.९.२
पड़ + "	पड़ा	२९.१९.२
राख् + "	राखा	२८.४.१
थक् + "	थका	१५.३८.२
जल् + "	जला	२.४२.१
बाह + "	बाहा	१.९.१
ऊबर + "	ऊबरा	१.१०.१
खेल् + "	खेला	१.१७.१
निद + "	निदा	१.२१.१

मार् +	आ	मारा	१.२३.१
दाझ +	"	दाझा	२.३०.१
परजल +	"	परजला	२.५१.१
बीछुर् +	"	बीछुरा	२.३.१
पकड़ +	"	पकड़ा	१.३३.१
बरस +	"	बरसा	१.३४.२
थक् +	"	थका	८.५.१
मर् +	"	मरा	८.९.१
उतर +	आ	उतरा	८.९.२
खूट +	"	खूटा	९.७.२
मिट् +	"	मिटा	९.२८.१
बीसर् +	"	बीसरा	९.३१.१
रच +	"	रचा	१०.२.२
फूल् +	"	फूला	९.१६.२
लह् +	"	लहा	९.२८.२
प्रगट् +	"	प्रगटा	"
भाग +	"	भागा	२५.८.१
बैठ +	"	बैठा	प. ८६
राख् +	"	राखा	प. ६०
हू +	"	हूआ	"
रो +	"	रोआ	"
भाज् +	"	भागा	प. ५९
चु +	"	चुआ	प. ५६
चाख् +	"	चाखा	"
उपज् +	"	उपजा	प. ५५
टूट् +	"	टूटा	प. ५२
फूट् +	"	फूटा	प. ५२
उचार +	"	उचारा	प. ५
सूत् +	"	सूतारा	"
बोल् +	"	बोला	प. १६
खोल् +	"	खोला	प. १६
जाग् +	"	जागा	८.१

	छांड़+आ	छांडा	र. ८	गए	१५.५२.१
	गाड़+	गाड़ा	"	भए	४.४१.२
	अराध+	अराधा	र. १५	लिखे	२.४४.१
	डोल+	डोला	र. ३.६		
	त्याग+यौ	त्याग्यौ	(प.३ आवृत्ति)	मिले	१.२५.१
	थाक्	थाकौ	प. १५४.३	चले	१६.१.१
	बांध्	बांध्यौ	१५.२९.२		
	जान्	जान्यौ	४.१२.१	पड़े	२१.२६.२
	भाज्	भाज्यौ	३१.१४.१	चाले	२६.४.१
	फूल्	फूल्यो	२७.५.१		
	फल्	फल्यौ	"		
	जांच	जांच्यौ	२१.२५.१		
	चढ़	चढ़्यौ	"		
	गवां	गंवायौ	"		
	बो	बोयौ	२२.७.२		
अनियमित	कर	कियौ	२१.९.१		
	अटक्	अटक्यौ	"		
	मेल्	मेल्यौ	१६.१०.१		
	बुहार्	बुहार्यौ	१४.२६.२		
	मिल्	मिल्यौ	१५.३८.२		
	गत	गयौ	प. ८३		
	कह्	कहौ	"		
	कर्	कियौ	"		
	भू	भयौ	"		
	चल्	चल्यौ	"		
	सर्	सर्यौ	प. ८६		
	दे	दियौ	प. २९		
	पढ़	पढ्यौ	प. ८९		
	कीन्ह	कीन्ह्यौ	प. "		
	खो	खोयौ	प. ६०		
	बो+यौ	बोयौ	प. ६०		
	पसर्	पसर्यौ	प. ३१		

डस्	डस्यौ	प. ३६			
मिल्	मिल्यौ	प. ३६			
ले + न्हां	लीन्हां	१८.९.१			
कर > की > —न्हां	कीन्हां	प. १७५			
	चीन्हां	"			
भू + वा	भुवा	प. १०५			
पा + वा	पावा	र. १३			
ला + वा	लावा	"			
धरा + वा	धरावा	र. १०४			
आ + वा	आवा	"			
लख > वा	लखावा	र. ८.४			
सता + वा	सतावा	र. ३२			
खिला + वा	खिलावा	र. ३.३			
भू + एव	भएव	र. १.४			
कर > कि > एहु	किएहु	प. ८९			
हु + ऐला	ह्वैला	प. १६६	तज + इले	तजिले	प. ४६
			रहा + "	रहाइले	प. १५
			जा + "	जाइले	प. १५.६
मै + ला	मैला	"	पैसी + "	चेपैसीले	प. ११५
छिवै + ला	छिवैला	"	बेधी + "	बेधीले	"
मिलै + ला	मिलैला	"	मेट + "	मेटीले	"
कहै + ला	कहैला	"	गड़ + "	गडिले	प. १००
खद् + ह	खद्ध	१.७.१			

इस प्रकार कबीर ग्रन्थावली में भूतनिश्चयार्थ, ए० व० पु० अन्यपुरुष में विभक्ति-इया की ६० आवृत्तियाँ :—

— या २२

— आ ६८

— यौ २८

— वा ८ (+५)

— ला ५

— द्ध १

अन्यपुरुष स्त्रीलिंग	ए० व०	ब व०
गई	२.३५.२	कसाइयां (अंखियां)
लई	१.२१.१	२.२३.२
लागी	१.१९.२	दुखड़ियां
लाई	२.७.२	
दई	१.१५.१	
पाई	१.११.१	
बुझी	१९.१५.१	
ऊठी	१९.१७.२	
आती	,,	
आई	३.१५.२	
बीती	१५.२२.२	
देखी	१५.३.०२	
चाली	१५.२९.१	
बीती	१५.३६.१	
परी	४.१२.२	
बांधी	३.१०.१	
चमंकि	१.१०.१	
तोड़ी	३१.१७.२	
उतारी	३१.२२.१	
मई	३१.२.६८	
परी	२.३६.१	
बिगाड़ी	३०.१४.१	
उरझी	३१.११.१	
धरी	२८.५.१	
पोई	२९.४.२	
ऊभी	२,३१,१	
माडी	१.३२.२	
ऊठी	३.५.२	
जली	,,	
जली	,,	
रही	,,	
जरी	,,	

करी	१.१६.२
समानी	८.७.२
उड़ानी	९.६.१
जागी	९.७.१
ऊगी	९.१५.१
दिखाई	९.१९.२
फूटी	९.२३.२
बुझी	१०.१.१
मेली	२५.२.१
कमाई	
उपजी	प. ५५
रची	”
उड़ानी	प. ५२
गिरानी	”
फूटी	प. ५०
छूटी	”
निकसी	प. ४१
धरी	प. २
मरी	”
टरी	”
डरी	”
सूती	प. ६
लंबी	प. १
पढ़ी	प. १७
लुभाती	”
बुझानी	”

उत्तमपुरुष पु० ए० व०	पु० ब० व०	स्त्रीलिंग ए० व०	ब० व०
		आंगियां ११.१०.१	
	आंगियां ११.१०.१		रहतीं : प. १६
	कीन १४.१.२		
		आ० ब० व०	
किएउं	लीन १४.१.१		

जैसा कि पूर्व अनुच्छेद में संकेत किया गया है कि क्रिया किसी बोली या भाषा की सर्वाधिक महत्वपूर्ण लाक्षणिक विशेषता है। क्रियाओं में भी भूतनिश्चयार्थ एक वचन, पुलिंग, अन्यपुरुष के रूप स्टैण्डर्ड हिन्दी (मध्यकालीन साहित्यिक खड़ी बोली या हिन्दवी) ब्रज, अवधी और भोजपुरी में भिन्न होते हैं। अतएव किसी भी ग्रन्थ में जिसमें बोलियों का मिश्रण प्रतीत होता हो भूत निश्चयार्थ एक वचन, पुलिंग, अन्य पुरुष के रूपों की सापेक्षिक आवृत्तियों के आधार पर मूलाधार बोली की ओर संकेत किया जा सकता है। इस दृष्टि से कबीर ग्रन्थावली में खड़ी बोली के रूपों की १५० आवृत्तियाँ (६० + २२ + ६८) ब्रजभाषा के रूपों की ३० आवृत्तियां, अवधी के रूपों की १३ और भोजपुरी के रूपों की ५ आवृत्तियाँ हुई हैं। अतएव निष्कर्ष यही निकलता है कि जहाँ तक भूत निश्चयार्थ एकवचन पुलिंग के रूपों का प्रश्न है कबीर ग्रन्थावली में खड़ी बोली के रूपों की प्रधानता है।

७.३५ भूतसंभावनार्थ

भूत संभावनार्थ के रूप—रूपात्मकात्मक दृष्टि से वर्तमानकालिक कृदन्त के ही रूप हैं। वाक्यात्मक स्तर पर यही रूप भूतसंभावना का अर्थ प्रकट करते हैं।

अन्य पु०	**ए० व०**	**ब० व०**
स्त्रीलिंग	होती (१.२५.२)	होते (२६.९.१)
पुलिंग	पड़ता (१.२५.२)	
	करता (प. १७.८)	

७.३६ भविष्य निश्चयार्थ

कबीर ग्रन्थावली में भविष्य निश्चयार्थ बोधक रूपों की रचना दो प्रकार से होती है, १—भविष्य काल सूचक प्राचीन संस्कृत तिङन्त रूपों के तद्भव रूप—'ह' —'स्' विभक्त्यंत रूप (२) (क)–मूलधातु या प्रातिपदिक में 'ग्' (गतः ग्—का अवशेषांश) को भविष्य सूचक विभक्ति के समान जोड़ कर–कृदन्तीय रूपों से (ख) अथवा धातु या प्रातिपदिक में + ब् (< तव्यम्) का अवशेषांश ब् : जोड़ कर अन्य रूपों से

अन्यपुरुष	ए० व०	ब० व० पुलिंग	स्त्री० ए० व०	स्त्री० व० व०
जनि + है	जनिहैं र. ३.४२	लेइहैं २१.१२.२		
विनस + है	विनसहै सा. १६.२०१	डसिहैं २.११.२		
परि + है	परिहै १५.३८.२			
मिलि + है	२.२८.२			
भागि + है	भागिहै २१.५.१-२			
जै + हहि	जैहहि १५.२५.२			

हो + सी	होसी	१४.१२.१-२
कर् + सी	करसी	१४.१२.२
दे + सी	देसी	४.२२.१-२
बहाव + सी	बहावसी	४.२२.१-२
भाज् + सी	भाजसी	२.१९.२
जा + सी	जासी	१६.२४.१-२
लाज + सी	लाजसी	१५.२२.२

+ गा

समाइ + गा	समाइगा	२.६.७
नसाइ + गा	नसाइगा	२.७.८
होय + गा	होयगा सा.	३.२५.२
गहे + गा	गहेगा	३.२२.२
होइ + गा	होइगा	२१.५.१-२
जाइ + गा	जाइगा	१५.५५.२
पीवै + गा	पीवैगा	१५.१३.२
जाने + गा	जानेगा	९.१७.२
करे + गा	करेगा	२.१४.२
बूड़ै + गा	बूड़ैगा	प. ९२
लेइ + गा	लेइगा	प. २१
बिनसैं + गो	बिनसैंगो	प. ७९

+ गे

जाहिंगे + ३.३.२

प. १०२

बैठेंगे १०.५.२

टूटैंगी –	२८.५.२
परैंगी –	२१.१५.२
सुनेंगी –	१५.८५.१
उबरेंगी	"
जानेंगी	२.४२.२
आवैंगी	प. ९२

भविष्य निश्चयार्थ

मध्यमपुरुष ए० व० प० **ब० व० पॉलिंग** **स्त्री० ए० व०** **ब० व०**

+ गा

सोवे + गा = सोवेगा ३.१६.२

जानै + गा जानैगा = २१.१५.२

+ ह

बांचि + हौ १६.७.१

+ गे

घरौ + गै १.२४.ङ

लेहु + गे २.३२.२

देहु + गे २.९.

पहुंचो + गे १०.१३.२

पछिताहु + गे   ३.३.२
उबारहु + गे   प. १८३
जाहु + गे   प. ९२
+ ब   कहि + बौ   प. ७८
दे + ब + आ   १५.२४.२

उत्तमपुरुष पु० ए० व०   पु० ब० व०   स्त्री० ए० व०   स्त्री० ब० व०

+ हौ   बूड़ि + हौं   + हैं
=बूड़िहौं २.११.२   मरिहैं + १५.४०.२
+ हौं   मरि + हौं = मरिहौं १४.२.२
मेटि + हौं = मेटिहौं   ''   जारौंगी —
— गे   १६.३५.२
+ हौं करि + हौं करिहौं प. १९   मरैंगे   मरैंगे   १५.६६.१
+ हौं लेइ + हौं लेइहौं   प. ५   प. ५   मरजाहिंगे   ''
करैंगे   १५.५६.१
करहिंगे   ८.१.१
+ गा   भजौं—गा = भजौंगा   १६.२४.१-२मिलहिंगे २.३१.२
+ गा   आऊंगा   प. १९३ आवहिंगे प. ५७
जाऊंगा   प. ''   जावहिंगे प.   ''
मरूं + गा = मरूंगा ''   लावहिंगे   ''
पीऊं + गा = पीऊंगा '' समझहिंगे   ''
बदउं + गा = बदउंगा   दिखलावहिंगे ''
प. १७८

विशेष—उपर्युक्त विवेचन से निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि ब० व० पुलिंग और स्त्रीलिंग रूपों में बहुरूपता नहीं मिलती है। केवल एकवचन में ही अनेकरूपता दिखाई पड़ती है। जो कुछ तो प्राचीन प्रयोगों के अवशेष की ओर कुछ बोली विभिन्नता की ओर संकेत करती है +स भविष्यत् के प्रयोग अतिसीमित हैं। आधुनिक हिन्दी में अब ये प्रयोग लुप्तप्राय हैं किन्तु आधुनिक पंजाबी में ये प्रयोग चल रहे हैं अतएव इसे पंजाबी का प्रभाव कहा जा सकता है। अथवा उस समय की काव्य भाषा का यह एक अभिन्न अंग हो सकता था। –ब भविष्य के प्रयोग भी बहुत ही सीमित हैं यद्यपि पूर्वी हिन्दी में अब भी ह+के साथ साथ +ब भविष्य भी चल रहा है । + गा भविष्य

की ही प्रधानता है। इसमें भी व्रजभाषा के + गौ रूप अतिसीमित—इस दृष्टि से इस क्षेत्र में खड़ी बोली की ही प्रधानता है।

७.४ संयुक्त काल

संयुक्त काल में एक प्रधान कृदन्ती क्रिया और 'होना' सहायक क्रिया के संयोग से काल-रचना होती है। संयुक्त काल आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं की आधुनिक अवस्था की प्रमुख विशेषता है आ०भा०आ० के आदिमकाल (पृथ्वीराजरासो आदि) में ये प्रयोग नाम मात्र को ही मिलते हैं। क० ग्रं० में संयुक्तकाल के पर्याप्त प्रयोग प्राप्त होते हैं। संयुक्तकाल दो वर्गों में विभाजित किए जा सकते हैं— १—वर्तमानकालिक कृदन्त + सहायक क्रिया, और २—भूतकालिक कृदन्त + सहायक क्रिया। कृदन्तीकाल होने के कारण कारक के लिंग परिवर्तन से क्रिया रूपों में भी लिंग परिवर्तन हो जाता है।

वर्ग प्रथम

७.४१ (१) अपूर्ण वर्तमान निश्चयार्थ (वर्तमानकालिक कृदन्त + सहायक क्रिया)

अन्य पुरुष	ए० व० पु०	स्त्री०	व० व० पु० :	स्त्रीलिंग
(पु०)	चहत है	२५.१८.२	(प०) जात हैं –	३०.१२.२
	करता जाता है	३.२५.१	मानत हैं	१६.१६.१
	दाझत है	२.५३.२	कहते हैं	२१.५.२
	होत है	६.१२.२	तजत हैं	प. १५
		११.११.२		
	बैठता रहै	१२.७.१		
	जानता है	१६.३३.२		
	जीवता रहै	२०.९.२		
(स्त्री०)	बाजती रहै	१५.४२.१		
	झलकती रहै	१६.२२.१		
	करती रहै	१६.२९.१		
	डरपती रहै	"		
उत्तमपुरुष				
(पु०)	चितवत हौं	११.६.१		
	सुमिरत हौं	र. १९		
	करता हूं	२१.२९.१		
	डरपता हूं	२.४३.२		
	कहता हूं	प. १७०		

(स्त्री) होती हूं प. १६०

७.४२ (२) अपूर्णभूत विश्चयार्थ

अन्यपुरुष ए० व० पुलिंग

जांचन जाइ था ८.१५.१
लागा जाइ था १.१४.१
कहता (था) ९.४.२
फिरता (था) ९.३९.२
चाला जाइ था ४.१४.१
(स्त्री लिंग) होती (थी) प. १०७

७.४३ संभुवत काल

	पूर्णवर्तमान निश्चयार्थ	भूत क्रियाद्योतक + सहायक क्रिया
	ए० व०	व० व०
अन्यपुरुष	भया है : ४.८.१:	भए हैं ४.८.२
		भए हैं प. १०७
		पड़े (हैं) १६.३१.२
	खड़ा है १५.१.१	भए हैं प. १३ (आदरार्थ)
	मारा है २.१२.१	दिए हैं प. ३६
	कीया है र. ६६	
(स्त्री)	भूली है प. १८७	
(स्त्री)	पाई है र. १९	
उत्तमपुरुष	ए० व०	व० व०
	डीठा है ७.१०.१	चले हैं प. ५ (आदरार्थ व० व०)
मध्य पुरुष	परा है १९.५.२	+ +

७.४४ पूर्णभूत निश्चयार्थ

ए० व०

अन्यपुरुष आया था ९.२५.१
लिया फिरे था १५.५९.१
दीया था प. ४०

मध्यम पुरुष

उत्तम पुरुष चाले थे २१.९.२

अपूर्ण वर्तमान संभावनार्थ तथा अपूर्ण भूत संभावनार्थ और पूर्ण वर्तमान संभावनार्थ तथा पूर्णभूत संभावनार्थ के प्रयोग प्राप्त नहीं हैं। संभवतः ये प्रयोग अत्यधिक

साहित्यिक हैं—अतएव इन प्रयोगों का न मिलना असाधारण नहीं। वर्तमान खड़ी बोली क्षेत्र में भी ये प्रयोग नहीं मिलते हैं।

७.५ प्रेरणार्थक क्रिया

प्रेरणार्थक क्रिया वह क्रिया है जिससे यह ज्ञात होता है कि इसके कर्ता को क्रिया करने के लिए प्रेरित किया गया है। क० ग्रं० में दो श्रेणियों के प्रेरणार्थक रूप मिलते हैं: १—धातु + आ—प्रथम प्रेरणार्थक—इस प्रत्यय के लगने से अकर्मक क्रिया सकर्मक हो जाती है— २—धातु + अव —द्वितीय प्रेरणार्थक।

प्रथम प्रेरणार्थक + आ	विभक्ति	काल सूचक विभक्ति	
ढह् + आ	ढहा + या	ढहाया	प. २
चल + आ	चला + या	चलाया	प. २
कर + आ	करा + या	कराया	प. १८२
उधर + आ	उधार + इया	उधारइया	प. १.१३.२
देख + आ	दिख + ला—इए	दिखलाइए	२५.२३.१
चढ़ + आ	चढ़ा + इ	चढ़ाइ	१५.३०.१

द्वितीय प्रेरणार्थक : + अव

समुझ + अव + न समुझावन कारने

देख + अव + हिं + गे दिखलावहिंगे प. ५७

सिख + ला + अव + ते सिखलावते २२.३.१

सुन + आ + अव + अत सुनावत २२.६.१

७.६ कर्मवाच्य (भाववाच्य)

वाच्यक्रिया का वह रूप है जिससे यह जाना जाता है कि वाक्य में कर्ता प्रधान है अथवा कर्म या भाव। कबीर ग्रन्थावली में दो पद्धतियों से कर्मवाच्य निर्मित किया गया है।

१—प्राचीन पद्धति या संयोगात्मक पद्धति + इए विभक्ति प्रत्यय जोड़ कर

२—नवीन पद्धति या वियोगात्मक अथवा संयुक्त पद्धति

क्रिया के भूतकालिक कृदन्ती रूप में + जाना क्रिया के रूप जोड़कर

(१) कह + इए कहिए र. १०.८

(काको कहिए बाभन सूदा)

पा + इए पाइए प. ३

(बिन सतगुर नहिं पाइए)

भेट् + इए भेटिए प. १०

इहिं पद नरहरि भेटिए

पतिअ + इऐ पतिअ इए प. २९

कहे सुने कैसे पतिअइए

(२) तौ दरसन किया न जाई प. ७२
महिमा कही न जाए ९.१२.२
स्वाद अनेक कथेनहिं जाहीं र. ११
दूजे सहा न जाए ४.२५.२
अब कहु कहा न जाइ ९.९.२

७.७ **कर्मणि प्रयोग**

कर्मणि प्रयोग क्रिया का वह रूपान्तर है जिससे यह जाना जाता है कि क्रिया का अन्वय (लिंग-वचन-सहयोग) कर्म के अनुसार है। संस्कृत में सकर्मक धातु से निर्मित क्रिया को ही भूतकालिक कृदन्तीय रूप में कर्मणि प्रयोग होता था। यथा 'मया पुस्तकम् पठितम्' में पठितम् का अन्वय कर्म 'पुस्तकम्' के अनुसार है। तथा पुस्तक ही यहाँ वाच्य है अतएव यहाँ कर्मवाच्य। कर्मणि प्रयोग है; किन्तु हम संस्कृत वाक्य के आधुनिक रूप मैंने पुस्तक पढ़ी है 'मैं वाच्य तो कर्ता ही है हाँ प्रयोग अवश्य कर्मणि है क्योंकि क्रिया स्त्रीलिंग कर्म (पुस्तक) के कारण स्त्रीलिंग हो गई। कर्मणि प्रयोग पश्चिमी हिन्दी की विशेषता है। पूर्वी हिन्दी (अर्थात् अवधी या कोशली) तथा भोजपुरी में कर्मणि प्रयोग आज नहीं मिलता है। क० ग्रं० में कर्तरि प्रयोग की अपेक्षा कर्मणि प्रयोग के उदाहरण अधिक मिलते हैं। प्रयोग और वाच्य का निर्णय वाक्यात्मक स्तर पर ही हो सकता है केवल पदात्मक (Morphological level) स्तर पर इतना ठीक-ठीक बोध नहीं होता है।

यथा—

(१) हमारे गुरु दीन्हीं अजब जरी (स्त्रीलिंग कर्म)
(२) पढ़ी प्रेम रस बानी (जरी) के कारण क्रिया
(३) मैं निरास जौ नौ निधि पाई दीन्हीं, स्त्रीलिंग में)
(४) काजी तै कवन कतेब बखानी ,,
(५) सतगुरु लई कमान कर सा. १.२१.१
(६) दीपक दीया तेल भरि बाती दई अघट्ट सा. १.१५.१
(७) थापनि पाई थिति भई सतगुरु दीन्हीं धीर ,,
(८) जारन आनी लाकरी—

(९) बांधी बिख की पोट ३.१०.१

(१०) कोई एक जन ऊबरे जिनि तोड़ी उलझी कानि सा. ३१.१७.२

(११) बगुली नीर बिटारिया ३१.२७ (कर्ता स्त्रीलिंग किन्तु कर्म नीर पुलिंग होने के कारण क्रिया भी पुलिंग)

(१५) कथनी कथी तो क्या भया सा. ३३.४.१

(१६) पंडित पाड़ी बाट सा. २६.२.२

(१७) भगति बिगाड़ी कामियां सा. ३०.१४.१

(१८) हरि मोतिन की माल है पोई कांचै धाग सा. २९.४.२

(१९) चौपड़ माड़ी चौहटै अरध उरध बाजारि सा. १.३२.२

(२०) जब गोविंद किरपा करी सा. १.१६.२

(२१) लालच खेला डाव सा. १.१७.२

(२२) गुरू दिखाई बाट सा. ९.१९.२

(२३) माला मोती चारि सा. २५.२.१

७.८ संयुक्त क्रिया

संयुक्त क्रिया आधुनिक भा० आ० आ० की प्रमुख विशेषता है। आ० भा० आ० की आरम्भिक अवस्था से जैसे-जैसे हम मध्यकालीन तथा आधुनिक युग की ओर बढ़ते हैं वैसे-वैसे संयुक्त क्रियाओं की संख्या बढ़ती जाती है। कुछ विद्वान् इन्हें क्रियावाक्यांश मानते हैं क्योंकि इनमें दो या दो से अधिक क्रियाएँ रहती हैं; किन्तु दोनों के मेल से ही एक भाव व्यक्त होता है। अतएव उन्हें संयुक्त क्रिया की संज्ञा देना ही उचित है।

७.८.१ (१) पूर्वकालिककृदन्त +

+ जाना

उड़िजाइ	प. १०९.२
जारि गयौ	प. १९०.२
फिरि गयौ	प. १५१.१
फूटि गयौ	
(–गयौ फूटी)	प. १५१.२
खाइ गई	१.६५.१
चढ़ि गयौ	१३१.१
परि गई	१३१.३
छूटि गई	५६.२
लै गएँ	६२.१

	उठि जाइगा	७४.१
	गरि जाइगा	७४.३
	छूटि गयौ	७५.६
	फटि गया	९५.२
	उठि गया	९५.३
	लुटि गया	"
	उठि जाइगी	९६.१
	चलि जाइगा	९६.४
	मरि जाइयौ	११०.४
	चलि जाइए	प. १०.३
	कूद जाउ	प. १४.३
	भागि गए	प. ४०.२
	विसरि गए	प. ५५.१
	मिलि गया	१.९.२
	भीजि गया	१.३४.२
	जरि जाइ	२.८.२
	मरि जाइगा मिलि जाइ	२.१२.१
	बहि जाइगा	६.३.१
	भूलि गया	९.६.२
	पहंचा जाइ	९.८.१
	बिलाइ गया	९.९.१
	खुलि गया	९.२४.२
	मिटि गई	९.३६.१
	चलि गया	१०.९.२
	रहि गई	११.४.२
पूर्वकालिक+जाना	रहि गया	सा. २२.४.१
	बहि गया	२५.२२.२
	टूटि गए	१६.१.१
	छिप जाइंगे	१७.२१.२
	चुनि गई	१६.३४.२
	लै गयौ	१६.३७.२

लै जाइ	१४.३२.२
हारि गए	१५.५७.२
भूलि गए	१५.५८.१
चलि गया	६४.२
परि गई	२९.२१.१
भुलाइ गया	३१.२४.१
पी गई	३१.२५.१

पूर्वकालिक कृदन्त + पड़ना व परना

+	आइपरे	१४६.२
	उतरि परा	१.१०.२
	छूटि पड़े	२.८.२
	अड़ि पड़े	२३.३.१

पूर्वकालिक + चलना

छांड़ि चला –	११.४९.१
छांड़ि चले—	प. १२१.३
लै चली	प. ७५.७
चांडि चल्यौ	प. ८३.४
तजि चला	१०.११.१
चढ़ि चला	१४.२७.२

पूर्वकालिक + देना

बताइ दिया	प. १४४.४
तोरि दियौ	प. १६.३
लिखि देहु	प. २६.२
लाइ दिए	३६.१
जराइ देइ (देइ जराइ)	५.१.१
बताइ देइ (देइ बताइ)	५.७.१
रोइ दिया	१६.५.१
बताइ दिया	१६.२०.१
बहाइ देहु	३३.१.१

पूर्वकालिक + डालना

काटि डारउं	प. २३.३

पूर्वकालिक + खाना

घरि खाया १६५.३

+ रही

लपटि रही १११.३
रहे लपटाई (लपटाइ रहे) र. ९
रमि रहा चौ. र. १।१४
जरि बरि रहे चौ. र. १।१३
समाई रहा (रहा समाई) चौ. र. १.२१
समाइ रह्यौ (रह्यो समाई) " ७२.२
होइ रही " १७.२
चढ़ि रही " २०.४.२
लपटाइ रहे " १६.४.१
समाइ रहा " १५.३७.२
छिपाए रहै " प. १७७.१

+ लेना

मरि मरि लीजे ६५.१
ताइ लिया १.३०.२
पिछांनि लेइ ५.५.१
जगाइ लिया २.४३.१
बहोरि लेहु १५.२१.१

+ सकना

सहारि सके (सकै सहारी) र. ७
पछांनिसका चौ. १।४१
सुनि सकै सा. २.१७.२
जाइ सकई सा. १०.१.१
मारि सका " २२.४.२
समाइ सकै " २९.१.२
बहोरि सकहु १५.२१.१
लागि सकई (सकई लागि) सा. ७९.२

पूर्वकालिक + आना

लै आयौ प. ७३.२
उठि आया प. ४६.२
ऊघरि आए १५.९.१

७.८.२ (२) संयुक्त क्रिया वर्तमान कालिक कृदन्त + सहायक क्रिया

व्याज बढ़ता जाइ – १६,१५,१

लेखा करता जाइ – २०.१९.२

चला हंसत हंसत – २३.२.१

(केते) अजंहूं जात हैं नरकि हंसत हंसत– ३०.१२.२

कबीर कहता जात हूं ३०.१५.१

दिन दिन बढ़ती जाइ ३१.१३.१

ढूंढ़त डोले प. ३५

बिलत गए प. ७३.२

पढ़त पढ़त केते दिन बीते प. ७८.१

७.८.३ (३) संयुक्त क्रिया क्रियार्थक संज्ञा + सहायक क्रिया

संत संतोखु लै लरनै लागा

मिलि जूझन लागे प. १३८.१

आतम ब्रह्म जो खेलन लागे प. १४४.१

७.८.४ (४) भूतक्रिया द्योतक + सहायक क्रिया

कोनैं बैठे खाइए ३.१.२

हरिजन तरुदसा लिए डोले प. २८.१

७.८.५ (५) पुनुरुक्ति वाचक संयुक्त क्रिया

रहि रहि – २.४१.२

पुकारि पुकारि– २.३६.२

निहारि निहारि २.३६.१

धरि धरि १५.१२.१

भरि भरि ४.२०.१

अव्यय

८. अव्यय (क्रिया विशेषण)

सर्वनाममूलक क्रियाविशेषण—अर्थ की दृष्टि से क्रियाविशेषण ४ प्रकार के होते हैं।

१—कालवाचक

२—स्थानवाचक

३—रीतिवाचक

४—संज्ञावाचक

रूप रचना की दृष्टि से इनके दो मुख्य वर्ग बनते हैं। १—सर्वनाम मूलक—जो सर्वनाम के मूल +

प्रत्यय लगाकर बनते हैं । २—क्रियामूलक + संज्ञा-मूलक + क्रिया विशेषण मूलक। क० ग्र० में ये सभी प्रकार के क्रियाविशेषण पाए जाते हैं ।

(१) कालवाचक—

जब	सा. ६.६.१	
जब लग	९.२६.२	
जब लगि	३.१६.१	
जवहिं	३१.२३.२	
जबहीं	२९.१६.२, २.३५.१	
कब	२.४७.२	
कबर	२.३१.२	
कबहुं	१.३२.२, र.चौं. ९	
कबहुंक	३.४.२	
कदे	३.८.१	
अब	५.१३.२	
अब (तौ)	९.३९.१, प. १३	
अब (के)	१६.३६.२	
तब	प. १०.५ १२.२	तब प. ४६
	सा. १.१०.२	र. १४
	१.१६.२	चौ. र. ६
	र. ४.१	सा. ३६
		९२
तबहीं	सा. १५.११.२	
तबहिं	प. ६०.६	
तबै	प. ५४.५	
	चौ. र. ८.७	

अव्यय : **क्रियाविशेषण : कालवाचक**

(संज्ञा, क्रिया, क्रियाविशेषणमूलक)

आज	प. ७.५, ७४.२
आजि	सा. १५.६७.१
	१६.२७.१

आजु	सा. २.१२.२
	१५.२२.२
	१६.२४.१
	१६.३९.२
आजुहिं	१६.२४.२
	प. ३९.४
अजहुं	२५.१९.१
अजहूं	प. २३.७, १५९.१
	२३.८, १५०.३
	४१.१, १५९.१
	२१३.३, १६०.१
	१५०.३
	चौ.र. ९.१
	सा. २.५५.१,२२.६.२,२३.७.२
	३०.१२.२
काल्हि	१५.१०.२
	२.१२.२
परौं	१५.२३.२
अंत	१.१३.२
अंतकालि	१५.४१.२
नित	२.१७.१
नितप्रति	४.३२.१
नीत	१२.२.२
	१६.१२.२
सदा	२.१६.२
	८.१६.१
सदासरबदा	प. ३४
निरंतर	२०.८.१
बारम्बार	१२.६.२
निदान	१४.३.२
बहुरि	१.१५.२, १५.५.२

बगि		२.४५.१
बगै		३.२३.२
तुरत		प. २
पहिले		३.१०.१
पूरबला		७.५.२
फिरि पाछै		३.३.२
अव्वलि		प. १८५

८.२

अव्यय	क्रिया विशेषण	स्थानवाचक
स्थानवाचक		(सर्वनाम मूलक)
इहां	प. १६२.३	
इहंही	प. १७७.११	
यहां	प. ९६.८	
यहीं	९४.८	
उहवां	१२५.४	
ऊहां	२९.१९.२	
जहां	प. २७.२	जहां
जहां		प. १४
	३५.२	र. १
	८७.८	चौ.र. १
	१२३.३	सा. १२
		२८
जहं	प. ३१.५, ४२.६	जहं – प. १२
	सा. ५.८.२	चौ. र. १
		सा. ७
		२०
तहां	प. २९.४	तहां–
	३५.५	प. १३
	सा. ४.३४.२, ९.५.२	चौ. र. ३
		सा. १७
		३३

तहं	प. ४९.५५.६	तहं—
		प. ७
	सा. ४.८.२, १५.३२.२	चौ. र. ३
तहंई	प. १९९.६	सा. ९
		१९
तहिंया	प. ११३.५	
तहीं	प. ३१.५	
कहां	प. ८.२, २९.१	कहां– प. २१
		र. १
	सा. १०.३१.१, १०.१५.२	चौ. र. १
कहं	प. ३.७, ६५.१	सा. ५.२८
	सा. १०.६.१, १५.४.२	कहं– प. ३
		र. १
		सा. २
		६
कहुं	सा. १६.३६.२	
	२८.५.२	
कहीं	सा. १५.८७.१	
	,, ,,	
कतहुं	र. चौ. ८	
जत तत	प. १८६	
	क्रियाविशेषण	स्थानवाचक
		(संज्ञा, क्रिया, विशेषणमूल)
भीतर	१.२१.२	
	र. १०.४	
बाहर	प. ८९.६	
बाहरि	७.२.२	बाहरि –
		प. ८
		र. १
		चौ. र. १
		सा. ५
		१५
इत	१५.५६.२	
उत	१०.३.१	

जित	३.६.२	
तित	"	
आगैं	१३.१.१	
	४.१४.१	
पीछैं	१४.८.१	पीछैं – प. १ सा. ५ / ६
पाछैं	१.१४.१	पाछैं– प. १ सा. ७ / ८
अनत	प. ३८	
बीच	प. ५९	
नियरे	१६.१८.२	
बीचहिं	२१.९.२	
नेरा	र. १४	
नेरे	र. चौ. १५	
अरध	र. चौ. २४	
ऊरध	१५.८.२	
ढिक	र. चौ. १९	
तले	प. ३४	
ऊपरे	"	
ऊपरि	१५.२३.२	
आदै, अंतै, मध्यै	प. १९४	

८.३ **अव्यय** **क्रियाविशेषण** **रीति वाचक (सर्वनाम मूलक)**

अैसे	७.१.२
वैसे	२९.१८.२
कस	१५.१०.२
	७.१०.१
	र. ७.६.

जैसे	११.१.२		
जस	१४.१९.१		
तैसे	प. ८४.५		
तस	प. ३४.८		
	चौ. र. १.६, १.५		
यौं	३१.२६.१	यौं–	प. २
यौंहीं	२.३२.२		र. १
	२१.८.२		सा. १८
	३३.८.२		
यूं	१४३.३		
	२०.३.२		
ज्यौं	७.२., १३.६	ज्यौं–	प. ४९
			सा. ४२
			९१
ज्यूं	प. २२.५, ५१.२	ज्यूँ	प. २
			सा. ४
			र. १
			७
त्यौं	प. ७.२	त्यौं–	प. ६
	१.५.२		सा. ७
	२.२.२		१३
क्यौं	प. ३१.१	क्यौं–	प. ३
	४७.२		सा. १४
	सा. २.४१.१		१७
क्यूं	प. ६८.६	क्यूं–	प. ८
	९८.२		सा. ४
	सा. ३.१.१		१२
क्यूंकरि	२९.०.१.२		

(संज्ञा, क्रिया, क्रियाविशेषणमूलक)

काहै कै	र. १५
जदि तदि	सा. २.२८.१

	मानौं	४.३९.२	मानौं—	प. २ सा. २
	सहजहिं	प. ४		
	सहजैं	२५.५.२		
	बहुविधि	२५.८.१		
	एहि विधि	र. १५		
	धीरे धीरे	१५.२.२		
	अचानक	१५.२.२		
	यहिं तैं	प. २		
	अव्यय	**क्रियाविलेषण**	**रीति**	**कारण (सर्वनाममूलक)**
	क्यौं	२५.१,३१.१ २.४१.१		क्यौं — १७ बार
	क्यूं	६८.६ ३.१.२		क्यूं— १२ बार
	काहे कौ	प. १९		
	कत	र. चौ.		
	काइ	३२.१२.१		
	किन	३.१.१ १५.५२.२		
	तातैं	९.३७.२		
८.४	"	"	गुण	: परिमाण
	बादि (गंवाया)	२९.१५.२		
	बहुतक (फिरै)	२५.२२.१		
	अधिक (डेराई)	र. १३		
	अति (पिरानां)	र. १३		
८.५	अव्यय	क्रियाविशेषण	रीति	निबेध
	नहीं	प. ३.१, १०.१६		नहीं— प. ३१ र. ६ सा. ७२ चौ. र. १ ११० बार

नाहीं	प्र. ३४.२, २.११.३	नाहीं–	प. २८
			र. २
			सा. १२
	सा. २.१८.२, २.५२.२		चौ. र. ३ = ४५
नहिं	३.२	नहिं–	प. ११३
	सा. २.२७.२		र. २९
			सा. २९
			चौं. र. ८
			१७९ बार
नांहि	सा. १.१.१	नांहि–	प. १०
	४.३०.१		चौ. र. १
			सा. २८
			३९
नाहिंन	प. ७६.२	नाहिंन –	१ बार
नहिंतर	सा. १.२५.१	नहिंतर –	१ बार
नाइं	१.४१.१		१ बार
नां	१.७.१	णां—	प. २१
			र. ७
			चौ. र. १
			सा. ५३
			८२
न	१.३.१	न—	प. २६३
			र. ५०
			चौ. र. २१
			सा. २८४
			६१८
जनि	१.१६.१	जनि—	प. १
			र. १
मति	२.१०.१		सा. ४ = ६

८.५१ **अव्यय** **क्रियाविशेषण** **रीति** **अवधारणा**

ही–	सा. १.५.१	ही—	प. २७
			सा. ३२
			चौ. र. १
			६०

भी—	२.३९.१	भी—	प. ६
	९.१८.१		सा. ८/१४
भि—	सा. २.३०.१		
हू—	सा. ४.११३.१	हू—	प. २
	४.२८.२		सा. ४/६
	४.२८.२		
हूं	प. ७३.६, १३७.७		
	प. १३.४, १६७.५		
	सा. ८.१२.१, २९.३.२		
	र. १२		
उ—	सा. ४.२०.२		
हिन—	र. १६		
केवल—	सा. २१.३१.१		
भरि	सा. ११.९.२		

८६

संबंध बोधक	संबंधसूचक
अंतर	प. ४
अंतरि	र. ४७.१
अंतरे	१०.८.१
आगें	३१.२२.१
अरघ	१.३२.१
उरध	"
ऊपरि	६.१२.२
	३.५.२
ओल्है	७.१२.१
ढिग	३१.८.२
तीर	२.२७.१
तट	३०.८.२
निकटि	२.१२.२

तलि	१९.१४.२
नेरा	१५.६९.१
नियरैं	१६.५.२
पासा	प. ३३
पासि	२.१९.२
पीछैं	२.१०.१
बिना	र. १२
बिन्दु	र. १२
बिचि	३१.१६.२
बाहिरा	४.४.२
	१८.२.२
बिहूना	९.८.२
बिहूंना	५.४.२
बिन	२.१,२.१
बिनु	१.४.२
बिहून	र. ४.७
बरोबरि	१५.१७.१
भीतर	प. १५, सा. १५.११.१
भीतरि	२.७.१
मांहि	२.११.१
रहित	र. ४
लौं	८.१६.१
सबां	१.३.१-२
सई	"
संगि	प. ५
सनमुख	१५.६५.२

८.७ **समुच्चय बोधक अव्यय संयोजक**

औ—	१६.६.१		
	प. ४		
पुनि	३.९.१		
औरे	सा. २३.८.१,	प. ९२.४,	र. ६.२
	सा. २५.१०.१		

अस	८.१६.१
अउर	प. २६
आदि	र. १.१
अर	प. १६५.६

अवर, अउर और औरे आदि का प्रयोग सर्वनाम के रूप में अव्यय की अपेक्षा अत्यधिक मिलता है। ऐसा प्रतीत होता है कि कबीर के समय तक सर्वनाम के रूप में ही इसका प्रयोग अधिक प्रचलित था। कालान्तर में यही अव्यय के रूप में प्रयुक्त होने लगा।

८.७१ **विभाजक**

कि (या)	१.५.६७.१	
	प. १०	
कै	२.७.२	
किबा	प. १०	
भावै	२५.१.२	प. २
		र. २
		सा. १३
		२३

८.७८ **विरोधक**

पै -	सा. १.१०.१	बूड़ा था पै ऊबरा
	प. ११.६	सेज एकपै मिलन दुहेरा
	सा. १४.३०.२	बहुत सयाने पचि गए, फल निरफल पै दूरि
	प. १४६.१	फल मीठा पै तरवा ऊंच
परि -	प. ८३.१	जनम गयो परि हरि न कहेगे
	र. १२.८	विरव के ख
पर -	प. ८८.५	भगति जाउ पर सावन जइयौं
	सा. ३१.१०.२	टूटे पर छूटै नहीं
	प. १२४.७	तुम्हरे मिलन को बेली है पर पात नहीं रे

८.७.३ **समुच्चयबोधक** **दशावाचक या संकेतवाचक**

जैसे	अैसे	प. ५७
जस	यौं	र. १२
ज्यौं	त्यौं	र. चौ. ९
		प. १७४

जे	तौं	प. १०	
जबलगि	तबलगि	प. १२	
ज्यौं	त्यों	प. ७	
	तऊ	१.४.२	तऊ प. ७ सां. १० १७
	तउ	प. १३२.२	
	तऊ	प. २०	
	त	प. २१	
मति (शायद है कि)		प. ७०	
जउ		प. ३.२	११ वृत्ति प. ६ रं. १ सा. ४
		९.१५.१.२	
नाहित		३१.७.२	
नहितर		२.११.२	तौं– प. ३६ र.१
जो		२.३६.१	चौं. र. १० सा. ६२
तौं		२.३६.१	
नहितर		२९.२०.२	१०९
जोपै तौ		२२.२.२	
जउ -	त-		
जब तब		१०.१०.२	
नहित		१५.३४.१-२	
नातर		१४.३४.२	
जौ -		१४.२१.२	
जो- त -		१.१८.१	
नहितर		१.२५.१	

८.८ विस्मयादि

हा हा	१६.२३.२
	१९.३.२

धनि धनि	५.५
धन्नि	५.११
क्या	प. २.३
रे -	प. १४५ आवृत्ति
	सा. १४
	र. ३
	प. १२८

१०. पुनरुक्ति

कबीर ग्रन्थावली में (संज्ञा, संज्ञा, सर्वनाम, सर्वनाम, संज्ञा-सर्वनाम पूर्वकालिक पूर्वकालिक वर्तमान कालिक कृदन्त + वर्तमानकालिक कृदन्त, भूतकालिक + कृदन्त अव्यय + अव्यय, क्रियार्थक संज्ञा + क्रियार्थक संज्ञा आदि के संयोग से पुनरुक्ति शब्द निर्मित हुए हैं। यह पुनरुक्ति भी १– पूर्ण २– अपूर्ण ३– अनुकरण तीन प्रकार की है।

भांति भांति	(संज्ञा-संज्ञा)	३२.२.१
ठांइ ठांइ		४.४.१
भूखा भूखा		३२.८.१
सहज सहज		३४.१.१
घट घट		२७.२.२
वार पार		३१.५.१
हाटै हाट		१९.३.२
मुह मुहिं		२१.६.२
पाती पती		प. १७
पंडित पंडित		२१.११.२
जिनि जिनि	(सर्वनाम + सर्वनाम)	३१.३१.१
रोम रोम	(संज्ञा + संज्ञा)	२२.१६.२
आन अी आन	(सर्व० + सर्व०)	२३.५.२
खेह की खेह	(संज्ञा + संज्ञा)	१५.४.२
कौड़ी कौड़ी		१५.८.२
अरस परस		प. १७९
पुरिजा पुरिजा		१४.१२.२
जन जन		११.४.२
मैं मैं		९.१.१

जिहिं जिहिं		८.३.२
डारी डारी		६.६.१-२
पातैं पातैं		"
खोद खाद	(संज्ञा + संज्ञा)	४.२५.१
काट कूट		"
घरी घरी		१.१९.१
छिन छिन		२.२५.१
परवटि परवटि		२.२४.१
धरि धरि		१.२९.२
पियास पियास		प. १५
जाति पांति		प. १
तै तै		प. ३७
दिन ही दिन		प. ९८
तपाइ तपाई	(पूर्वकालिक + पूर्वकालिक)	२.३२.२
रोइ रोइ		२.३२.२
लिखि लिखि		२.२१.२
विचारि विचार		२.१३.२
हंसि हंसि		२.३८.१
चलत चलत	(वर्तमानकालि० कृदन्त +)	र. १३
जानि बूझ	वर्तमान०	र. १६
जरत जरत		र. १८
खिरि खिरि		र. चौ. १
जरि बरि	(पूर्व + पूर्व)	र. चौ. १३
उरझि पुरझि		र. चौ. १४
झखि झखि		"
निरखत निरखत		२५
मुसि मुसि	(पूर्व + पूर्व०)	प. १२
हिल मिल		प. ३३
रचि रचि		प. ६२
मुचि मुचि	(पूर्व + पूर्व०)	प. ६४
पुजि पुजि		प. ८५
धरि धरि		

पढ़े पढ़ि		
लूंचि लूंचि		
देखि देखि		
रहा सहा	(भूतका० + भूत०)	प. १६४
बिगरि बिगरि	(पूर्व० + पूर्व०)	प. १६६
लीर लीर	(विशेषण + वि०)	२४.१७.२
(खपरा) फूटम फूट		२.५.१
झूटै झूंट (वियापिया)		र. १४
नीठि नीठि	(मन)	र. चौ. १७
बिलगि बिलगि		प. ५३
कहि कहि		३.४.१
पढ़ि पढ़ि		३३.३.१
करि करि		३३.८.१
जरि जरि		२४.१८.२
दे दे		२९.१७.१
बहि बहि		३०.४.२
मरि मरि		३१.२७.१
चुनि चुनि		१८.५.२
मरते मरते	(वर्त० क्रियाद्यो० + वर्त०)	१९.१.१४
उड़ि उड़ि	(पूर्व क्रिया० + पूर्व०)	१९.८.१
उरझि सुरझि		२४.४.२
झिरि झिरि		२२.९.१
धरि धरि		१५.१२.१
धोइम धोइ		१५.६.९.१
टुकहुंक		१६.११.१
ज्यों ज्यौं	(अव्यय + अव्यय)	१६.२५.१
त्यों त्यों		१३.१.१
आगैं आगै	(पूर्व० + पूर्व०)	१२.७.१
मलि मलि		
लदाइ लदाइ		१०.३.२
चलन चलन	(क्रियार्थ संज्ञा + क्रिया०	१५.५.१
हेरत हेरत	(वर्तमानक्रियाद्योतक + वर्त०)	२.६.१

हरषि हरषि	(पूर्व० + पूर्व०)	७.१०.२
भर भरि		४.२०.२
निहारि निहारि		२.३६.१
पुकारि पुकारि		”
रहि रहि		२.४१.२

११. **समास**

कबीर की काव्य भाषा अधिकांशतः अति सरल, जन भाषा है। अतएव सामासिकता का प्रयोग कम हुआ है। फिर भी दो या दो से अधिक शब्दों को मिलाकर समास की तरह उनका प्रयोग कबीर में पर्याप्त मिलता है जिनके उदाहरण निम्नलिखित है।

द्वन्द्व

११.१

बिबेक विचार	क. प. ४
साह संत स दागर	प. ४
काम क्रोध मल	प. ३
नदी नाला	प. १
मोंहि तोंहि	प. १८
सील संतोख	प. १७
मोर तोर	र. १७
उपजि विनसि	र. १७
जुरा मरन क्रोध	र. १७
मैं मेरी	र. १७
सुख निस्राम	र. १५
माया मोह धन जोबनां	र. १४
खट आस्रम-खट दरसन	र. १४
तप तीरथ	”
व्रत पूजा	”
धरम नेम दान	”
धंध बंध	”
तरपै बरसै	”
माया मोह	१३
दादुर दामिनि	”
सिव सकती बिरंचि	र. ११
पाप पुन्न	र. ११

मुँह माथा	७.१
रूप कुरूप	,,
पुहुप बास	७.७.२
वेद कुरानौं	७.८.२
गुन औगुन	८.१७.२
अगम अगोचर	९.५.१
आदरमान	२३.५.१
खीर खांड	२४.६.२
कदली सीप भुजंग	२४.११.२
तीरथ व्रत	२६.५.१
जप तप	२६.६.१
आप पर	२८.३.१-२
आदि अंत	३.१४.२
ब्रह्म महेस	३.२६.१
ढाक पलास	४.१.१
है-गै-बाहन-सघन -वन छत्र-धुजा	४.३.१
रात दिवस	३.४.२
मनसा वाचा कर्मना	३.७.२
औरति मरद	प. १७.७
राधा कामिनि	प. १५८
विद्या व्याकरण	प. १०१
राज पाट	,,
छत्र सिंघासन	,,
पानकपूर सुबासित चंदन	
जोगी जती तपी संन्यासी	
लुंचि मुंडित	
कुसल खेम	प. १०२
सही सलामति	,,
हाथी घोड़ बैल वाहनों	प. ८९
खीर खांड घृत पिंड	प. ६२
लोम सोर भ्रम	प. ५८
वादविवादा	प. ५०

खेल रवासी	प. ४२
खेल खांनां	"
सद सरबद	प. ३४
विधि निखेद	प. २०
बनिता सुत देह गेह संपति	प. २०
तनना वुननां	प. १२
घनि पिउ	प. ११
बाम्हन सूदा	र. १०.८
राजा परजा	र. १.१
सूतका पातग	र. १.३
हिन्दू तुरुक	र. १०.५
सिव सकती	र. १०.४
दुख सुख	र. २.४
पुर पट्टन	सा. ४.४.१
हांसी खेलें	२.३८.२
जल थल	२.५२.१
निस दिन	२.४७.१
ऊरघ अरघ	१.३२.१
उत्तरदखिन	२.१३.१
तन मन	२.२८.२
स्वामी सेवक	२.२४.१
दीपक पावक	२.३०.१
लोक वेद	१.१४.१
आंटै लौंन	१.२४.१
जाति पांति	१.२४.२
गुरु गोविन्द	१.२८.१
सर अपसर	४.२७.२
सुरति निरति	९.२४.२
निसि बासर	९.२८.२
बाहरि भीतरि	९.३७.२
सुर नर	१०.११.१
चूना माटी	१५.८४.१

सुर नर मुनि	१६.६.१
सुर नर मुनियर असुर	१६.३१.२
पाखंड अभिमान	१९.६.१
सुरग नरक	२०.१.१
निसि जाम	२१.२४.१
कामी क्रोधी मसखरा	२१.२६.२
मोर तोर	२१.३२.१
ताकत तकावत	२२.४.१
गिरि डूंगर सिखरांहं	२२.११.१
आदर मान	२३.५.१

११.२ तत्पुरुष

राम दोहाई	प. ५९
भाव भगति	प. ४०
कांम कोध मोह विवरजित	प. ३२ अपादान
पढ़न साल	प. २६
नट विधि	प. २१
काल अवधि	प. २०
ब्रह्म विचार	प. १०
सबद भेद	प. ३
प्रेम मगन	प. १४
लोक लाज	प. १६
जननी उदर	र. १७
सुख सिंधु	र. १६
मानुख जनम	र. १५
अंति काल-दिन	र. १५
नीम कीट	र. १२
मना मनोरथ	२९.५.१
संसै सूल	क. र. १.७
रामसनेही	४.४.१
पंजर पीर	२.३३.१
साधु संगति	४.२३.२
तन ताप	९.२८.२

सुख निधि	"
राम अमल	१२.४.२
रस रीति	१५.८६.२
अरहट माल	१६.३३.१
ब्रह्म गियान	१७.१.१
रामदुआर	१९.५.१
गंगा नीर	१९.१०.१
राम नाम	२१.१७.२
नख सिख	२२.२.१ (अपादान)
चंदन बासु	२२.१३.२
भौमि बिकार	२४.१.१
कदली सीप भुजंग मुख	२४.११.२
विषै विकार	२५.४.२
विष बेलडी	२६.५.१
आदि अंत	प. १८ (अपादान)
पाप पुन्न अधकारी	र. ११
राम वियोगी	२१.११.२
भव सागर जल	८.९.१
राम निवास	४.८.२
न्रिप नारी	४.११.२
राम नाम	१.५.१
हरि नाउ	प. १.७६
राजकुल मंडल	प. १५६
करम बद्ध	(करण)
काल फांस	प. ६७
मनिखा जनम	प. ६३

११.३ **कर्मधारय**

काया मंडल	सा. १२.३.१
हरि रस	१२.५.१
सुरति ढांकुली	१२.६.१
कंवल कुवां	१२.६.२
प्रेम रस	१२.६.२

राम कसौटी	१९.४.२
चरन कंवल	२०.१.२
काल अहेरी	र. १२
राम नाम धन	२१.१७.२
मन माला	२५.१५.२
राम जहाज़	"
मन मौंगर	र. १५.९
भवसागर	८.९.१
दिल दरिया	९.११.१
तन तरगस	प. ४
तत्ततिलक	३.१३.१
सुरति कमान	प. ४
हरि से सुमिरन घडा	३.२३.२
विरह भुवंगम	२.१.१
चेतन चौकी	१.२७.१
सुमिरन सेल	१४.७.१
राम रसायन	१४.३२.१
ज्ञान खड्ग	१४.३५.२
भव चक्र	१५.८.२
सरीर सरोवर	प. ५
काया हांडी	१५.१९.२
मन मंदिर	प. ७
चित चकमक	२९.१३.२
मन मिरिग	२९.२०.२
आसा फंद	३१.११.२
भौजलि	३१.१५.२
कनक कामिनी कूप	३.१५.२
राम रतन	
काया कोट	प. १७५
ग्यान रतन्हु	प. ६७
ब्रह्म अगिनि	प. ५१
कउवा कुबुधि	प. २२

११.४ **बहुव्रीहि**

आसामुखी	१६.८.२
तेगपुंज पारस घनी	९.१२.२
सारंग पानि	प. २१
दुख भूंजना	प. ७१

११.५ **द्विगु**

खट आस्रम	र. १४
खट दरसन	र. १४

१२. **शब्द-कोश**

तत्सम शब्द

'संसकिरत है कूप जल भाखा बहता नीर' के सिद्धान्त को मानने वाले महात्मा कबीर ने अपने काव्य में ऐसे ही प्रचलित शब्दों का प्रयोग किया है जो जन प्रचलित थे। कबीर की भाषा मुख्यतः तद्भव प्रधान है। प्राचीन भाषा संस्कृत के उन्हीं तत्सम शब्दों का प्रयोग कबीर ने किया जो अति सरल तथा बोध-गम्य थे। जन प्रचलित विदेशी शब्दों का प्रयोग कबीर ने इसी सिद्धान्त के अनुसार किया है। फारसी-अरबी के तद्भव शब्द ही कबीर ग्रन्थावली में प्रयुक्त हुए हैं।

व्याकरणिक रूपान्तरों को सम्मिलित करते हुए कबीर ग्रन्थावली में समस्त शब्दों या पदों (सहपदों सहित की संख्या ७३३० (सात हजार तीन सौ तीस है) है। इनमें से संस्कृत तत्सम शब्दों (पदग्रामों) की संख्या केवल १३० है। प्रयोगावृति सहित इनकी सूची आगे दी गई है। प्रमुख तद्भव संज्ञा, विशेषण, क्रिया पदग्रामों की संख्या लगभग ११४० है। जिनमें संज्ञा– ७२५, विशेषण १२७, क्रिया पदों की संख्या– २८८ है। कबीर ग्रन्थावली में कुल मिलाकर २८८ विदेशी शब्द प्रयुक्त हुए हैं किन्तु ये समस्त शब्द अपने तद्भव रूप में ही ढाल लिए गए हैं।

१२.१ तत्सम शब्दकोश संज्ञा, विशेषण, क्रियाविशेषण

तत्सम		आवृत्ति			
			अकल	२०.८.१	१
अंक	सा. ४.२०.२	२	अनाथ	प. ४३.३	१
अंकुर	प. ११९.५	२	अनेक	प. ५४.४	६
अंग	प. ११९.१०	९	अभाव	प. १३२.७.१	१
अंत	प. ९.४	१३	अमर	प. ४४.३	११
अंतर	प. १६.३	६	अष्ट	प. १०८३	१
अंध	प. ८५.१	३	अस्त	प. ९.२	२
अंबर	प. १२५.१	३	अहं	प. १९५.३	२
अम्रित	प. २०.२	११	अहंकार	३६.२	१
अकथ	प. ११७.९	४	आनंद	प. १४.३	४
अखंड	प. १६.६	३	आस्रम	र. १४.४	१
अचल	प. १.७	२	इंद्र	प. १४९.६	४
अधिक	प. ७६.६	३	इष्ट	३२.७.२	१
अनंत	प. ११.२.३	१	उत्तम	३०.२०.१	१

शब्द	सन्दर्भ	आवृत्ति	शब्द	सन्दर्भ	आवृत्ति
उदक	प. १३२.९	१	चंडाल	४.३९.१	१
उदर	र. ५.२	३	चंद्रमा	१५५.४	१
उदार	प. ४५.३	२	चक्र	८०.३	४
एक	प. २.५	१००	चतुर	१२५.३	३
ओंकार	र. १.१	३	चिंता	प. ३२.८	६
औषधि	प. १०१-४	१	चित	१०.१५	१९
कंचन	प. ३२.४	७	चित्त	४.३	१०
कंठ	सा. ३.२२.२	१	चित्र	९७.४	४
कदली	प. १३०.८	३	छत्र	१०.१.५	४
कन्या	१५.७३.१	१	जंगम	६६.७.२	३
कमल	२४.२	३	जगत	प. ४९.१	१५
कलियुग	२१.२६.१	२	जगन्नाथ	४.२३.१	२
कष्ट	र. १७.६	१	जहर	२०.३	१
काल	प. २०.४	४१	जननी	३७.१	३
किंचित्	र. १७.२	२	जल	१८४.५	४२
कुंजर	प. २३.६	४	जीव	३९.७	२३
कुंभ	प. ४५.९	६	जीवन	११.४	१४
कुल	प. १६.६	२७	त्रिगुण	५३.७	१
क्रिया	प. २५.९	६	दान	प. १५५.१७	३
क्रोध	प. ३.४	१३	दास	प. १५.११	३३
गंगा	प. १.५	६	दिन	१०.२	३४
गंधर्व	प. १४९.७	१	दिवस	१५.६	१४
गगन	प. ८१.२	१९	दीन	प. १८१.२	९
गज	र. २०.५	६	दीपक	७२.४	१५
गुरु	प. २.१	३०	दुख	२५.२	२७
–गुर-३५ बार, गुरू २ बार			दुरमति	१९.६	३
गोपाल	१५५.११	३	दुर्लभ	३३.५	१
गोविन्द	प. १२१.१	१	दृष्टि	१६२.७	१
ग्यान	प. ४.२	३८	धन	२२.१	१६
ग्यानी	प. ४८.३	११	ध्यान	५६.३	१०
घट	प. २.६	३७	नट	प. १४	२
घ्रित	प. ६२.३	२	नर	प. ३१.४	३५
चंचल	प. १५९.६	५	नाम	प. २०.६	५४

निकट	प. २८.४	४
निज	प. १०.१३	१४
निरंजन	प. ४८.७	८
निरमल	प. २.६	१३
नीर	प. १३.६	१३
नील	११.७.२	१
न्रिप	४.११.१	१
पंकज	प. ३०.३	२
पंडित	प. ८५.८	२४
पंथ	२.४.५	६
पट	१६.५.२	१
पत्र	प. १८.२	५
पद	प. १०.६	१९
परम	प. २६.१०	१५
परिमल	प. ११९.६	१
पवन	प. ५७.४	२०
पाप	प. २५.२	१४
पावक	प. २१.२	५
पुंज	सा. ९.१२.२	१
प्रभु	प. २६.६	७
प्रसाद	प. ३३.५	१
प्रीति	प. ७.४	१५
प्रेम	प. ७.४	३४
फल	प. १०.१२	२६
बहु	प. २३.६	३२
बिंद	प. ३६.३१	५
बिग्यान	प. १५७.२	१
बिधि	प. २०.९	१५
भक्त	प. १२.५	१
भक्ति	२५.१८.१	२
भुवन	प. १०५.६	१
मंगल	प. १०९.४	३
मन	प. १०७.	१७४
माया	प. ४.५	५७
मूल	प. ३५.४	२३
मृत्यु	र. १२.२	१
राम	प. १.१०	२२५
संसार	प. ३४.२	२०
सकल	प. १५.५	२९
सतगुरु	प. १४४.२	३०
सतगुर	प. १४४.१	१२
समाधि	५७.४	३
सिंधु	प. १८.४	१
सुख	प. २५.२	५०
सुर	प. ५७	१०
हरि	प. ७१.१	१५७
हरिजन	प. १६.५	१०
ह्रिदय	१४९.९	१

१२.२ तद्भव शब्द कोश (संज्ञा) आवृत्ति

अंकमाल	४.३९.२	१
अंकुस	प. ९७.५	२
अंखियां	सा. २.३१.१	१
अंगना	प. १५.६	१
अंगुरी	सा. २५.७.१	१
अंगार	२.५२.१	१
अंदेस	प. १३.३	१
अंदेसा	सा. १०.५.१	१
अंधियारा	९.१.२	१
अकन	प. १६०.३	१
अक्खर	प. २१.४	१
अचंभौ	प. ११०.३	५
अचरज	प. १३३.३	२
अड़बंद	प. १४३.५	१
अरहट	सा. १६.३३.१	२
अरुझेरा	प. ८९.७	१
अवधू	प. ५६.१	८
अहटि	१०-१०	१
अहरखि	६५.१	१

अहरनि	६.८.२	१
आंटा	सा. १५.२[illegible].२	१
आक	२९.२२.२	१
आड़	प. ३४.६	१
आरनि	सा. १४.८.२	१
आरसी	१५.११.१	१
आलि	१६.३९.१	१
ऊजड़	४.४.३	३
औलौती	प. १३५.६	१
कंकर	प. १३१.५	१
कंगन	प. १७.४	१
कंगुरै	सा. १४.३६.२	१
कंद	प. ८६.४	१
कंदूरी	प. १२९.३	१
कंवल	प. १८.३	१२
कउवा	प. २८.४	३
कछुआ	प. ११४.५	१
कड़िया	सा. १६.३८.२	१
कतरनी	प. ९४.२	१
कनफूका	प. १६५.५	१
कबिता	प. ८५.५	१
कबीर		४१५
कमंडल	सा. १२.३१.२	१
करंक	२.२१.२	२
करगह	प. १४०.२	१
करछी	प. १९२.५	१
करतूत	र. ६.२	१
करव	प. १९.१	२
करहा	प. १३१.२	३
करवा	प. १९०.५	३
करिया	प. ११२.४	१
करोड़ी	प. ४२.४	२
कविलास	सा. १५५.२	१
कसनी	सा. १.३०.३	१
कसाई	प. १११.६	१
कसौटी	प. १९४.१	२
काइ	२८.२.२	२
कांच	१२६.२	१
कांजी	२२.५.२	१
कांसि	२१.३२.२	१
कांची	प. ४४.२	३
कांचुरी	सा. १५.२२.२	१
काजर	प. १७.५	५
काजल	१६५.२	२
किंगरी	प. १३३.१	१
किरखी	प. ९१.५	१
किरिम	प. ६८.३	२
कुभंक	प. १५.७	१
कुकड़ी	१८३.७	१
कुकुरि	१४०.८	१
कुकही	१५.१३.१	१
कुटवाल	प. १५५.१०	२
कुड	प. ६०.३	२
कुकुरि	१४०.८	१
कुहाड़ी	प. १५.२९.२	१
कुहारि	प. १५.६०.१	१
कूंटि	७५.७	
कूड़ा	२३.८.२	१
कूप	१९६.६	४
कोंहरा	प. ७६.४	१
कोखि	र. ३.३	१
कोठरी	प. ८०.३	१
कोथली	३१.१५.१	१
कोपीन	१२.४.१	१
कौड़ी	प. ३९.८	५
खंखर	१५.४५.२	१
खड़की	१६.३८.२	१
खप्पर	१४२.७	२

खपसी	१९.५.७	१	गुदरी	प. ९६.३	१
खहु	प. १७३.१	१	गुफा	प. १२२.५	४
खांड	प. ६२.३		गुवाड़े	सा: २५.९.२	१
खांडे	सा. १४.१९.१	१	गुसांई	प. २४.३	
खिन	प. ६५.८	५	गूगा	प. १५७.८	३
खिमा	प. १४.२.७	४	गेह	प. १३.१	२
खिलौना	प. १८.९.२	१	गैल	प. १०.२.१	१
खीचरी	सा. २१.३.१	१	गोंदरी	प. ६५.६	
खुर	र. १२४.२	२	गौहनि	सा. २१.२४.१	१
खूंटी	प. १३६.३	१	गोद	र. ३.३	२
खेत	प. ८३.४	८	गोनि	प. १२६.३	२
खोरि	सा. १५.१८.१	२	गोबरु	प. १९२.६	१
गँवार	सा. ३०.१५.१	१	गोरू	प. १८८.७	१
गंवारा	प. ७२.१	२	घड़ा	प. १२२.७	१
गगरी	प. ४४.३	१	घर	७.१	५४
गड़री	प. ११४.६	१	घरी	प. ४१.२	३
गढ़	प. २५.१	८	घाड़	२.३१.१	१
गदहरा	सा. २५.९.२	१	घाट	चौ. र. २'८	५
गरत्थ	सा. ३१.५.२	१	घाम	प. १३०.१४	२
गली	१५.३.२	१	घानि	सा. ३१.१७.१	१
गहनी	र. १३.३	२	घी	२९.५.२	१
गहमरा	सा. १४.२९.१	१	घूंस	११४.४	१
गहेलरी	सा. २.४१.२	१	घोड़ा	प. ४.२	३
गांउं	प. ४४.१	२०	चंच	सा. ३१.२५.२	१
गांगी रोले	सा. २५.२२.२	१	चंदा	प. १०२.५	४
गांठि	सा. २२.१	९	चउका	प. १९.२.६	१
गागरि	प. ५०.३	१	चउबारे	१५५.६	१
गाठरी	सा. ३२.६.१	१	चकनाचूर	२०.२.१	१
गादह	प. ११४.३	१	चटाई	सा. १८.६.२	१
गाहक	सा. १८.४.२	७	चबैना	१६.२६.२	१
गिरद	सा. १४.९.१	१	चरूआ	प. १६७.४	१
गिरही	सा. ९०.३	३	चांदिना	९.८.१	१
गुड़	५१.३	५	चाकि	१२.१.२	१
गुड़िया	प. ११९.४	१	चारा	१५.२.३	१

पंख	प. १.३	१	परजा	प. १०५.४	३
पंगी	१०८.६	१	परतखि	१०.३.१	१
पंजर	९.७.१	३	(पर्णी) परनीं	प. १६०.२	१
पंडिआ	प. १३३.३	२	परमल	३०.१०.२	१
पंडा	प. १६३.४	१	परलै	१६५.८	१
पईसा	२१.१९.२	१	परवान	१७३.७	३
पख	१७.२.२	२	परस	१७९.७	१
पखान	२९.२१.२	१	पल्ला	४.१७.२	२
पंखी	२०-७-२	१	पलान	प. ४.३	१
पग	प. १०८.४	६	पसाउ	प. ५४.३	१
पगरा	१५.७०.१	२	पसारा	सा. १५२.२	३
पच्छिम	१७७.१०	१	पहजन	प. १११.४	१
पछेवरा	प. ५३.५	१	पहर	२.४०.२	२
पटंतर	४.१०.२	१	पहरी	प. १७५.५	१
पटंबर	प. ६५.५	१	पहार	प. २६.६	१
पछोरि	सा. १७.७.२	१	पाइं	प. १.३	४
पटम	२५.१३.२	१	पाडंल	३२.१०.१	१
पटिया	प. २६.३	१	पांड़े	प. १९६.२	२
पट्टन	४.४.१	३	पांन	प. ५३.६	१
पताल	प. ११७.४	४	पांव	प. १४६.६	६
पतिआरा	११.८.२	१	पांवड़े	प. ८१.१	१
पत्ता	प. ११६.५	१	पांवरी	१४.३.४	१
पनह	प. ४२.७	१	पांसा	१.१३.१	३
पनिआ	प. १३७.२	१	पाखंड	प. ६६.४	४
पनिहार	प. १५५.७	१	पाखर	प. ११९.४	२
पपिहा	सा. २.४८.२	१	पाखान	१७६.८	१
पयाना	प. १०२.४	१	पागा	६२.४	१
पयारा	प. ६५.६	१	पाटन	१००.५	१
परअपवार्दाहि	प. ४०.५	१	पात	७३.४	४
परकास	प. १३०.८	२	पातग	र. १.३	२
परख	१८.५.२	१	पाती	प. १५२.३	७
परसोतम	प. १०८.७	१	पाथर	प. ७७.४	२
परगट	प. १५२.५	१	पान	प. ११४.४	३
परचा	चौ. र. ८.१	४	पानी	प. ३४.४	३५

वस्ती	प. ८९.४	१
वस्तु	प. ७२.४	८
वहनोई	प. १४०.५	१
वहरा	१.१२.१	१
वहिआं	प. १२६.३	१
वहुरिया	प. ११.२	२
वहुवरि	र. १७.९	१
वहू	प. ११०.६	१
वांझ	प. ६४.३	५
बांबी	प. ३४.१३	१
बांवरिया	प. ९४.६	१
बांस	प. १४.४	३
बांहि	प. २.११.२	२
बाउ	सा. ३१.१०.१	१
बाकी	प. ४१.२	१
बागुल	सा. १५.५८.२	२
बाघिनी	प. १६५.१	१
बाचा	३.७.२	५
बांच	१.२०.२	२
बाट	६३.१०	२
बाड़ी	प. ११२.२	१
बाती	प. ९९.२	१०
बादरी	२.५३.१	१
बाप	प. ४९.४	४
बाब	प. २६.१	१
बाबुल	११०.४	७
बारन	प. ८०.४	१
बाला	प. ७०.२	१
बालू	६९.९	१
बावरिया	८४.९	१
बासन	१५.७९.२	१
बासा	प. १८.३	६
बिंजना	प. ३४.११	१
बिंदत	प. ११५.२	१
बिखिया	४.२४.२	५
बिगूचनि	प. १८१.१	१
बिछोह	७.४.२	२
बिजुली	प. १३०.३	१
बिटिया	प. ११०.३	१
बिनांन	प. १७३.६	१
बिपदा	प. ४५.५	१
बिपरीती	प. ९०.९	१
बिरिखि	प. ५५.३	७
बिरिछ	प. १५२.२	२
बिलंगी	९.४०.२	२
बिलंबा	२.३७.१	१
बिलाई	११६.३	२
बिदेस	१८.८.१	१
बिसाहुना	१.१५.२	१
बिसूधा	र. १२.७	१
बिहड़ै	८.१७.२	१
बींद	१६.२८.२	१
बीछुरां	२.३.३	१
बुडभुज	प. ६४.३	१
बुड़ाई	१५.७८.२	१
बढ़ापौं	९८.३	१
बूटी	२.२४.२	१
बूंड़	२२.१४.२	१
बूंढ़ा	प. ५३.३	४
बूता	प. १४०.७	१
बेटा	१६.४०.१	१
बेड़ा	१५.२७.१	१
बेर	६.२३.८	२
बेरियां	प. २२.४	१
बेलरी	सा. ३१.१०.१	१
बेवहारा	र. १४.७	१
बेसास	१५.६२.२	४
बेसि	१९२.२	१

मेहरी	प. १००.३	१	लुहार	सा. १.३०.१	२
भैंड़िया	१५.८४.१	३	लूखा	२९.५.२	१
मैवासी	प. २५.३	२	लेंहड़ा	४.१८.२	१
मोर	प. ९.३	८	लेखा	प. ४१.२	१२
मोल	प. ८.१२.२	२	लेजुर	प. ९५.४	१
रखवारा	प. १६२.२	१	लेपन	प. १७३.४	१
रगत	प. १२४.३	१	लोइन	प. १८३.७	३
रसरिया	प. १७०.६	१	लोभु	प. ७७.३	१
रसोई	प. ५६.५	१	लोहा	प. ३.५	४
रहंटखा	प. १३६.३	१	लौन	१.२४.१	४
रांड	प. १०९.६	३	लौलीन	प. १५.४	१
राइ	प. १११.१	५	संगात	प. ७३.९	१
रावल	प. ५१.७	१	संघाती	प. १०४.७	१
रिदा	प. १३७.८	१	संझा	प. ७२.२	१
रुसंवा	र. १७.१०	१	सगाई	२९.२२.१	१
रुंड	३३.८.२	१	सरोवर	प. ५.५	१
रूख	प. १५७.५	३	सांकरा	२९.१.१	१
रोग	प. ६३.५	२	सहेली	१०९.४	२
रोझ	२५.९.२	२	साकत	१०६.२	१४
रोटी	२१.३.२	१	साक	२९.४६.१	१
रोड़ा	१९.६.१	१	सायर	१३८.६	४
रौंस	३७.६.१	१	साव	२.४६.१	१
रौलि	१५.८३.२	१	सावज	प. १२१.६	१
लटछूही	१५५.११	१	सासत्र	प. ८४.८	१
लंगर	प. १३७.४	१	सिंघ	प. ७१.४	८
लकड़ी	६२.८	१	सिंचाई	प. १६८.४	१
लरिका	१६४.३	१	सिंम्रित	प. १५३.२	२
लव	चौं.र. ७.७	१	सिख	११५.३	५
लहंग	प. ८७.७	१	सिखर	२२.१०.१	२
लहुरिया	प. ११.२	१	सियार	प. ७१.५	१
लाडू	प. १७.६	१	सिरहाने	१५.१.१	१
लात	प. १५.६.२	१	सिस्टि	र. ४१	२
लापसी	प. १८७.६	१	सीढ़ी	२०.२.१	१
लालच	प. ७४.३	३	सुखमन	प. ५१.६	२

सुपने	४.१३.१	२
सुपारी	१५.२६.१	१
सुमिरिनी	प. ९४.२	१
सुहागिनि	प. ११.७	३
सुहेला	६८.७	१
सेंबल	१५.४६.१	२
सेज	प. ११.६	६
सैली	प. १३१.४	१
सोना	१५.२५.२	१
सोव्रन	३३.७.२	१
सोरहा	२५.१२.१	१
सौंज	प. ५०.६	१
स्यार	प. १२०.४	१
हंकारा	१९७.३	३
हंडिया	१५.३०.२	१
हत्थ	९.३२.२	१
हथियार	१.२२.२	१
हरदी	२०.३.१	१
हलाहल	२६.५.२	१
हांम	१७०.५	१
हाड़	६२.५	४
हिन्दू	८५.३	११
हींगला	२५.२.२	१
हुलास	२५.१८.१	१
हैवर	१५.२४.२	१
हौंस	३३.६.२	१

१२.३ शब्दकोश

विशेषण		आवृत्ति
अऊत	सा.४.३८.२	१
अकन	प. १६०.३	१
अकेल	१६.२६.२	१
अकारथ	प. ७३.१	२
अगह	प. १५६.३	२
अघट्ट	सा. १.१५.१	१
अघाइ	सा. १५.१४.२	२
अजंच	८.१५.१	१
अजरावर	१५.६५.२	२
अजांण	सा. ११.१०.२	१
अथाहु	प. ४३.६	१
अटल	चौ. र. ४.२	१
अनजाने	सा. ४.२७.१	१
अनव्यावर	सा. १३.३.१	१
अनमेटू	प. १४६.५	१
अनियारे	प. ८.१	१
अपरबल	सा. २.५१.१	१
अपसर	सा. ४.२७.२	१
अपूठा	सा. २९.२३.२	१
अबिहड़	सा. ८.१६.१	१
अबूझ	सा. १४.६.१	१
अयांना	प. ४७.३	५
अलख	प. १४५.४	७
अलग	सा. ८.१४.२	१
अलह	प. १७७.१०	५
आछा	सा. २१.१२.१	१
उताने	प. १००.२	१
उतावला	२९.३.२	१
उनमनि	प. ५६.२	२
उलटा	प. १४२.८	१
ऊमर	प. ५०.३	१
ऊले	र. ३.९	१
ऊजर	सा. १५.६.२	३
ओछी	प. ४६.५	१
ओढ़न	प. ५३.५	१
ओदी	सा. २.८.९	२
औंधा	प. १२२.७	५
औघट	सा. ९.१९.१	१
औझड़	सा. १६.२७.१	३
कठिन	प. १५०.३	४
कठोर	प. २३.८	१

कुचिल	प. ६४.४	१	ढिग	१६६.३	३
कारी	प. ८.३	४	तनक	प. ११.२	१
काली	४.३४.२	२	तीखा	सा. १७.८.१	१
क्वांरी	१६०.२	१	थका	८५.२	२
खारा	सा. १६.३९.१	१	थिर	प. ७३.७	४
खार	सा. ३०.४.२		थोड़ा	सा. १५.४६.१	१
खाली	प. १७७.७	३	थोथरा	२६.६.१	१
खेम	प. १०१.१	१	दिढ़	प. १०.१०	४
खोटा	सा. १९.४.१	१	दुहेला	२३.३.२	१
गरवा	सा. ६.१०.२	२	दुबुरी	१६.३.१	१
गहिर	प. २४.३	१	नई	८.३.२	१
गाढ़ा	प. १६५.२	१	नकटू	प. ४१.४	१
गुज्झ	सा. २१.१५.१	१	नांगी	प.११.८.२	१
गुानयाले	सा. ११.७.१	१	नांनां	प.१८४.९	३
गार	सा. ३.१.२	१	निनारा	र. १.४	१
गाला	सा. २५.६	१	न्यारा	प.१४.४	४
गांहांन	प. १०.९.१	१	पंगुल	१.१२.२	१
गान	सा. ३.२४.१	१	पतड़ा	सा.२५.२०.२	१
घनां	प. २९.१४.२	१	पराई	१५.१५.२	२
घमसाना	प. ५९.३	१	पांवन	१९.१४.२	१
चंचल	१५९.६	५	पाकं पाक	प.८७.९	१
चोखा	र. २०.३	२	पाका	प.१२-१.२	३
चौड़े	सा. १४.११.२	१	पुराना	प.५०.४	३
छलीं	प. १५५.१४	१	पोच	र.१६.५	१
छारा	प. ५१.७	१	फीका	३१.२१.२	१
छापा	प. १४.४	१	फूटमफूट	२.५.१	१
छोछी	प. १११.८	१	बउरा	९७.१	१४
जेठ	प. १३५.३	१	बड़ा	प.२७.२	५
झीन	सा. २९.३.१	१	बपुरा	प.१५४.८	५
झूरि	सा. २.६.१	२	बरघ	प.१२६.३	१
टुक	प. ८७.४	२	बराबरि	प.१६.३	२
टेढ़ा	प. ४४.२	१	बांका	प.५१.८	१
ठिठकी	प. १६२.५	१	बिकट	प.५१.८	३
डहडही	१३.२.१	१	बिकरारा	प.३६.३	१

बिकराल	१५५.११	१	उवरै	प.१९६.८	१
बुरहा	२.१६.१	१	ऊगा	सा.९.३६.१	१
बुरा	३.१०.१	६	ऊनई	२.५३.१	१
बौरा	प.५८.१	२	कहैला	प.१६६.६	१
भला	प.१९.२	१३	काढ़ा	सा.१६.१३.२	१
भालि	सा.२.१२.१	२	कातल	५.१३.६.४	१
मंहगे	१४.२०.१	१	कुरलियाँ	सा.२.३.१	१
मटिया	५ १००.२	१	खड़ा	१८.१३.१	६
मा लु	१५.३०.१	१	खदेरा	प.८९.४	२
मूढ़	२.१२.७	२	खद्ध	१.७.१	१
मैंगर	र.१५.१	१	खसें	र. ९.६	१
मैंगल	१२.७.१	३	खेदा प.१२१.३ प.७१.५		१
मैमता	र.१५.१	६	खोज	प.१०८.६	१
मैली	९.३०.२	१	खोद	प.१९७.५	१
मौटी	१५.१८.१	२	खोलि	प.१६.३	५
लंबी	१६.२२२	१	खोवै	सा २१.२२.१	२
सिलहला	प.१४६.३	१	गइया	प.१४०.२	१
सूखिम	१०.१६.१	२	गड़े	सा.१५.१०.२	१
हरियर	१३.१.१	२	गला	१४.२०.२	२
हरुए	१५.२७.१	१	गहा	१६.४.२	१
१२.४ शब्दकोश	**क्रिया**		गाइए	प.८२.१	१
अंचवै	१२२.१३	१	गिरै	प.२६.६	१
अखै	चौ. २.४	१	गुदरावै	प.४२.१	१
अछत	सा. १०.११.२	१	घहराई	प.१११.५	१
अटक	प.३४.६	१	घालै	प.११८.४	२
अत्थि	प.२०.६	३	घोलै	प.९३.३	१
अवतरिया	प.६.१	१	घूमत	सा.१२.५.७	१
आथवै	१६.१९.१	१	घेरै	प.१३८.३	१
उचारिया	१.१३.२	१	चढ़ा	.५६.२	३
उठी	प.३५.६	२	चमंकिया	३.२३.१	१
उड़ाइ	सा.१६.३७.२	१	चरावै	प.११६.१	१
उतरा	सा. ८.९.२	२	चाखा	प.५६.७	१
उनवै	र.१३.५	१	चीन्हा	प.११५ ३	६
उपानी	र.४.२	१	चुआ	प.५६.५	१

चुनावै	प १५ ८४ १	२
चुनिया	सा १६.१९ २	१
चूका	प ११८.३	१
चैता	सा ९ २० २	१
चोंघते	सा. १६ ११.१	३
छडाऊं	प २६ ५	१
छांडा	प.१५९ ५	२
छाजै	प.१५७.१०	१
छाया	प.७८.८	२
छिटकाई	प.१८३.१०	१
छिपाए	प.१७७ ३	१
छीजै	प ९८.४	२
छुए	र.७ ४	१
छुड़ाया	प.१७५ ६	१
छित्रैला (छुए)	प.१६६ ४	१
छुवाऊँ	प.१६०.७	१
छेक	सा १.९.२	१
छोड़ई	प.३९.४	१
जगाइ	सा. २.४३.१	२
जाँचउँ	५.११५.१	१
जेवावै	प.१९७.४	१
झकोरे	प.११२.६	१
झपेड़	सा. ११.१२.१	१
झरै	१५ ७४.२	२
झुलाइ	२५.२१.१	१
झोंकिया	१८ ८.२	१
टरत	प.९०.२	१
टांचिया	प.१८७.४	१
टिकै	सा.१०.२.२	१
टूटा	प.५२.३	२
ठहरानी	प.९२.५	१
ठाढ़ा	प.१०८.२	२
ठेलिया	५.१.६.२	१
डंस्यों	प.३६.५	१
डंहके	प.१६४.७	१
डारा	प.१५२.२	४
डाला	प. १७५.८	१
डिगा	३.१८.२	१
डूबै	प. १२२.७	१
डोला	र. ३.६	१
ढहाया	प. २५.७	१
ढालि	प. ८८.७	१
ढुरि	प. १३१.२	४
ढूढ	चो र. ४.८	१
तकत	प. २२.४.१	१
तजत	प. १५.१०	१
तनायो	प. १५०.१	१
तरसै	प. २.१८.२	१
तिराई	सा. २४.११.१	१
तुरावा	प. १५.४	१
तुलै	र. २.१	२
थापहु	प. १९.१.५	२
दई	१.१५.१	१
दरसा	प. १.८	१
दाघी	१६.२.१	१
दिखलाई	२.४०.१	१
दिया	प. ९९.२	११
दीसा	१८५.६	१
देना	१५.२४.२	१
धरा	१६.२०.१	१
धाउं	प. ३५.६	१
धारी	प. १७६.१२	१
धोई	प. १०४.३	२
नसाइया	र. ७.८	१
निकंदिया	२६.५.२	१
निकसी	प. ४.१.५	२
निगले	प. ११४.७	१
निगुसावां	६.३.१	१

सौपा	१४.२३.२	१
हंसि	२.३८.१	१
हरसिया	१४.१७.२	२

१२.५ विदेशी शब्द (कोश) संज्ञा, विशेषण, क्रिया, क्रिया-विशेषण अव्यय आदि)

अकिलि	प. १३४.२	१
अजब	प. २.२	१
अतर	चौ. र. ५.१	१
अनाज	प. ९७.६	१
अलहजा	१६.३९.१	१
अल्लह	पा. १७७.१	२
अवलि	पा. १८४.३	१
असर	प. ३४.४	१
असरार	सा. ३.४,२	२
असवार	सा. १४.३५.१	१
आदम	प. ४२.५	२
आल	प. २६.३	१
आलम	प. ६६.३	१
आब	सा. २.४७.१	१
इतबारा	प. १५२.१	१
इफतरा	प. ८७.३	१
इला	प. ११३.४	१
ईमान	प. १७२.३	१
उजागर	प. १७६.७	१
उजू	प. १७७.४	१
उसारि	सा. १६.१२.१	२
औरति	प. १७७.१२	२
कतेब	८१.४	६
कमाई	प. ६३.३	४
कमान	प. ४.४	२
कमाया	सा. १५.८२.१	१
करज	प. १९५.११	१
करदन	प. ८७.७	१
करीम	प. ८७.१०	२
करेजा	प. १६५.३	१
कवादे	प. १७८.८	१
कागद	प. ३.५	८
काबै	प. १८४.६	२
कालबूत	प. ९७.४	२
कालर	सा. २४.१५.२	१
किबला	प. १२९.२	१
कुंजड़न	सा. १८.१२.१	१
	प. ६०.३	
कुदरति	प. १८५.३	३
कुरान	र. ६.१	१
कुलुफ	प. ८०.४	१
कूता	११६.२	२
कोइला	३०.१७.२	२
खत	१६.१५.२	१
खतना	१८२.३	१
खपत	चौ र. ९.१	२
खबर	४४.६	१
खरच	८९.५	१
खरसान	१७.८.१	१
खलक	८७.६	४
खसम	चौ र. २.३	९
खांडे	१४.१९.१	१
खाक	१६.३	३
खाद	२१.३.१	१
खान	२१.३.१	१
खालसौ	८६.९	१
खालिक	८७.६	५
खान	सा. २१.३.१	१
खाला	सा. १४.३१.१	५
खुदाइ	प. ८७.४	१
खुमारि	सा. १२.५.१	२
खुसी	प. ८७.५	१
खून	प. १७७.३	१

दस्तगीरी	पा. ८७.२	१
दांव	१.३३.२	१
दाइम	८७.८	१
दाझत	२.५३.२	१
दावा	३२.२.२	१
दिल	प. ८७.१	१९
दिलाई	प. ४२.५	१
दिवाना	प. ४२.५	३
दिसावरि	प. १५१.२	१
दीदार	प. ३३.८	२
दीवान	२१.२.२	१
दुनियाँ	प. ७९.६	८
दुरुस	प. १७.२.३	१
दोजक	प. १७८.८	१
दोस्त	प. ६६.१	२
नजरि	प. ४२.५	३
नजीकि	प. ४२.७	१
नफर	६.१०.२	१
नबेरा	चौ र. ५-७	१
नाज	प. ७३.२	२
निसान	१६४.१०	१
नौबति	१००.१	३
पतंग	र. ११.६	६
पयंबर	प. १६४.७	१
परवाना	चौ र. ३.७	१
परेसानी	प. ८७.१	१
पलंघ	प. ६५.५	१
पलीता	प. २५.६	२
पुरिजा	सा. १४.२२.२	१
पैगम्बर	४२.२	२
फंक	चौ र. ६.४	३
फंद	प. ९४.६	२
फरंकि	सा. १.१०.२	१
फांकि	प. १९७.३	१
फांस	प. ६७.६	२
फिकिर	प. ८७.८	१
फुरमाया	१८४.३	१
फूंक	१.५.२	१
बंद	चौ. र. ६६	१
बंदगी	४.३६.२	४
बंदा	१६३.८	४
बकसहु	प. ३७.१	१
बरवसि	प. ४१.५	१
बगुचां	प. १६.३०.१	१
बगुला	प. १८.५.२	२
बदउंगा	प. १७८.३	१
बरखिया	२२.९.१	४
बरकस	प. १११. ६	१
बलइया	प. १४०.१	१
बलाइ	प. ५५.५	२
बाँग	१२९.१	१
बाजारि	१.३२.१	१
बाजीगरी	प. ६०.८	१
बिल्लाइत	३२.२.२	१
बिसमिल्ला	र. ५.३	१
विसमिल	प. १८३.३	१
बीबी	प. ८९.६	१
बुत	८५.३	१
बेकाम	३.९.२	२
बेखबर	प. ८७.५	१
बेगाना	प. १३४.२	१
बेहद	९.२.११	४
बेहाल	प. १३.८	१
मंद	१.४.२	१
मंदरिया	प. ५०.२	१
मक्के	प. १९३.४	१
मजलिसि	प. ४२.१	१
मतवारा	प. ५६.१	१

कबीर की काव्य-भाषा का क्षेत्र-कालानुक्रम

कबीर (सं० १४५५-१५७५) की भाषा भाषा-वैज्ञानिकों के लिए एक जटिल पहेली रही है। इस पहेली में प्रमुखतः दो समस्याएँ उलझी हैं—

१—कबीर का आविर्भाव काल ईस्वी १५ शताब्दी में (१३९८-१५१९ ई०) हुआ है। अतएव कालानुक्रम से कबीर ग्रन्थावली में इसी काल की भाषा का गठन मिलना चाहिए। किन्तु कबीर काव्य की कोई भी हस्तलिखित प्रति कबीर रचित या कबीर के समय की नहीं मिलती है। अतएव १८ वीं, १९ वीं तथा २० वीं शती ई० की प्रतियों के आधार पर निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता है, कि कबीर काव्य का जो पाठ मिलता है उसकी भाषा किस काल की है। भिन्न-भिन्न प्रतिलिपिकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए भिन्न-भिन्न पाठों में भाषा के अनेक रूप मिलते हैं। अतएव साधारण पाठक ही नहीं अपितु भाषा-वैज्ञानिक भी इस उलझन में पड़ जाते हैं, कि कबीर की कविता की मूलाधार भाषा का स्वरूप क्या है। डा० पारसनाथ तिवारी ने पाठ विज्ञान के आधार पर कबीर ग्रन्थावली का संपादन किया है जिसमें २०० पद, २० रमैनियाँ तथा १ चौंतीस रमैनी तथा ७४४ साखियाँ कबीर की प्रामाणिक रचनाएँ मानी गई हैं। यदि काल-क्रम से इन रचनाओं की भाषा १५ वीं शती ई० की सिद्ध हो सके तो इस संपादन की प्रामाणिकता को बहुत ही बल मिल सकता है। इस समस्या का सुलझाव तभी संभव है जबकि भारतीय आर्यभाषा के विकास की पृष्ठभूमि में कबीर ग्रन्थावली की भाषा का कालानुक्रमिक अध्ययन किया जाए जिससे यह निश्चय हो सके कि प्रस्तुत पाठ की भाषा १५ वीं शती ई० की है अथवा नहीं। कबीर से १ शती पूर्व १४ वीं शती और कबीर से १ शती बाद से १६ वीं शती में रचे ग्रन्थों की भाषा और कबीर की भाषा के तुलनात्मक अध्ययन से कबीर की भाषा का काल निश्चित हो सकता है।

२—कबीर की काव्य-भाषा से संबोधित दूसरी समस्या उसकी क्षेत्रीय प्रकृति की है। आधुनिक युग में मध्य देश या हिन्दी प्रदेश के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में बोली जाने वाली अनेक बोलियों या भाषाओं के दृष्टिकोण से कबीर ग्रन्थावली में अनेक बोलियां या भाषाएँ (खड़ी, ब्रज, पंजाबी, राजस्थानी, अवधी, भोजपुरी) के रूप मिलते हैं। भाषा सम्बन्धी इस अनेकरूपता के कारण ही भिन्न-भिन्न विद्वान् कबीर की भाषा में भिन्न-भिन्न रूप देखते हैं। कबीर की भाषा के सम्बन्ध में प्रमुख मत निम्नलिखित हैं—

(१) आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार दोहे-साखी की भाषा सधुक्कड़ी अर्थात् राजस्थानी, पंजाबी मिली खड़ी बोली है। पर रमैनी और पद में गाने के पद हैं जिनमें काव्य की ब्रजभाषा और कहीं-कहीं पूर्वी बोली का भी व्यवहार है।"[1]

(२) शुक्ल जी द्वारा वर्णित 'सधुक्कड़ी' 'भाषा को डा० श्यामसुन्दर दास 'खिचड़ी' की संज्ञा देते हैं। इनके अनुसार 'कबीर' की भाषा का निर्णय करना टेढ़ी खीर है; क्योंकि वह खिचड़ी है। यद्यपि उन्होंने स्वयं कहा है कि मेरी बोली पूरबी है तथापि खड़ी बोली, ब्रज, पंजाबी, राजस्थानी, अरबी, फारसी आदि अनेक भाषाओं का पुट भी उनकी भाषा पर चढ़ा है। पूरबी से उनका तात्पर्य क्या है नहीं कह सकते हैं उनका बनारस निवास-स्थान पूरबी से अवधी का अर्थ लेने के पक्ष में है परन्तु उनकी रचना में बिहारी का पर्याप्त मेल मिलता है।'

(—कबीर ग्रन्थावली, भूमिका, पृ० ६७)

(३) डा० सुनीति कुमार चटर्जी के मतानुसार कबीर काव्य की सामान्य भाषा ब्रज है जिसमें पूरबी (भोजपुरी) का पुट है—इनका मत है कि 'कबीर' यद्यपि भोजपुरी क्षेत्र के निवासी थे, किन्तु तत्कालीन हिन्दुस्तानी (हिंदी) कवियों की तरह उन्होंने प्रायः व्रजभाषा का प्रयोग किया और अवधी का भी। उनकी व्रजभाषा में कभी-कभी पूरबी (भोजपुरी) रूप भी झलक आता है; किन्तु जब वे अपनी बोली भोजपुरी में लिखते हैं तो व्रजभाषा के तथा अन्य पश्चिमी भाषिक तत्व दिखाई पड़ते हैं। (पृ० ९९)

(४) डा० उदयनारायण तिवारी भोजपुरी को कबीर काव्य की मूलभाषा मानते हैं और उसकी विविधता को बुद्ध वचनों की समता करते हुए अपना यह मत प्रकट करते हैं, 'कबीर की मूल भोजपुरी में लिखी वाणी बुद्ध वचनों की तरह कई भाषाओं में अनूदित हो गई थी इसलिए उसमें इतने प्रकार की विविधता पाई जाती है।'

(हिन्दी अनुशीलन, अंक २)

(५) भाषा की दृष्टि से आचार्य शुक्ल की 'सधुक्कड़ी', डा० श्यामसुन्दर दास की 'खिचड़ी', डा० रामकुमार वर्मा की 'अपरिष्कृत' प्रतीत होती है क्योंकि 'संतकाव्य तीन भाषाओं से प्रभावित मिलता है--पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी और पंजाबी।'

(हि० सा० आ० इ०, तृ० सं०, पृ० २९७)

(६) डा० शिवप्रसाद सिंह संतों की भाषा के विषय में अभिव्यक्त किए गए अपने पूर्व विद्वानों के मतों की आलोचना करते हुए 'संतों की भाषा को खिचड़ी, सधुक्कड़ी, पंचमेल आदि विशेषण देकर भाषा विषयक अध्ययन की इयत्ता' नहीं मानते हैं; बल्कि कबीर की भाषा का विश्लेषण करते हुए यह कहते हैं, कि कबीर बनारस के थे

१–रामचंद्र शुक्ल, हि० सा० इ०, पृ० ८०, संस्करण

इसलिए उनकी भाषा बनारसी रही होगी। यह तत्कालीन स्वीकृत भाषा पद्धतियों के सही विश्लेषण से उत्पन्न तर्क नहीं कहा जा सकता है—'वस्तुस्थिति यह है, कि कबीर ने स्वयं कई भाषाओं का प्रयोग किया संभवत: इतनी बारीकी से वे इन भेदों को स्वीकार नहीं करते थे। डा० सिंह के मतानुसार कहा जा सकता है कि कबीर ने भिन्न-भिन्न प्रकार के भाव-विचारों को भिन्न-भिन्न काव्य-शैलियों में व्यक्त किया और भिन्न-भिन्न शैलियों में भिन्न-भिन्न भाषाओं का प्रयोग किया। कबीर की ये रचनाएँ जिनमें वे ढोंगियों, धर्मध्वजों, मज-हबी ठेकेदारों के खिलाफ़ बग़ावत की आवाज़ बुलन्द करते हैं खड़ी बोली या रेख़ता शैली में दिखाई पड़ते हैं ठीक इसके विपरीत जब अपने सहज रूप में आत्मनिवेदन, पणपत्ति या आत्मा परमात्मा के मधुर मिलन के गीत गाते हैं तब उनकी रचनाओं का माध्यम ब्रजभाषा हो जाती है'। कबीर को अवधी की दोहा चौपाई की शैली प्रिय लगी अतएव रमैनी की रचना इसी शैली में ही की। रमैनी की भाषा कुछ अवधी नहीं है फिर भी अवधी के स्पष्ट रूप दिखाई पड़ते हैं ब्रज का प्रभाव भी कम नहीं है।

(७) कुछ विद्वान समस्त भिन्न-भिन्न मतों की आलोचना-प्रत्यालोचना के उलझन में न फंस कर 'बोली मेरी पूरबी' को मौलिक भाषा का द्योतक न मान कर प्रतीकात्मक या आध्यात्मिक अर्थ ग्रहण करते हैं। भाषा का एक वस्तुपरक अध्ययन प्रस्तुत करने के उद्देश्य से कबीर द्वारा प्रयुक्त कबीर के आंशिक रूप से व्याकरणिक रूपों के उदाहरणों के आधार पर ये विद्वान स्थापना करते हैं, कि कबीर ने अपने युग की परिनिष्ठित काव्य भाषा अथवा ब्रज में कविता की थी। उनकी काव्य भाषा पश्चिमी बोली ही थी—पूरबी नहीं।

उपर्युक्त सातों विद्वानों ने कबीर के भाषा रूपी हस्ती का स्वरूप-गठन वर्णन करने का अपने-अपने ढंग से प्रयत्न किया है। इन मतों में सत्यासत्य का निरूपण सम्पूर्ण कबीर ग्रन्थावली में प्रयुक्त व्याकरणिक रूपों के प्रयोग के बिना वैज्ञानिक नहीं कहा जा सका। अतएव समस्या के पूर्व पक्ष में पाठकों को और अधिक न उलझा कर हम कबीर काव्य का क्षेत्रीय कालानुक्रमिक अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास करेंगे।

कबीर काल में तथा कबीर से १ शताब्दी पूर्व और एक शताब्दी बाद की रचनाओं के आधार पर कबीर ग्रन्थावली में खड़ी, ब्रज, राजस्थानी, पंजाबी, अवधी तथा भोजपुरी बोलियों की सापेक्षिक स्थिति पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया जाएगा। प्रयोगावृत्ति के सापेक्षिक आधिक्य के आधार पर ही कबीर की आधारभूत बोली की प्रकृति का निर्णय किया जा सकता है। इन बोलियों के सापेक्षिक प्रयोगावृत्ति के आधार पर यह भी निष्कर्ष निकाला जा सकता है, कि कबीर ग्रन्थावली (१) एक प्राचीन सामान्य भाषा में लिखी गई है और उसमें विविध रूपयों की प्राप्ति उसी की प्रान्तीय रूपता या अन्तर्प्रान्तीय रूपता का परिचायक है। (२) अथवा कबीर ने अपनी रचना में सचेत होकर शैली तथा भाव-

---

(डा० शिवप्रसाद सिंह—ब्रजभाषा, पृ० १८४)

विचार-भिन्नता के साथ-साथ भाषा भिन्नता को बनाए रखने के उद्देश्य से खड़ी, राजस्थानी, पंजाबी तथा अवधी और भोजपुरी का प्रयोग किया है। (३) अथवा कबीर ने सचेत होकर अपनी रचनाओं में किसी एक भाषा का प्रयोग नहीं किया; बल्कि जिस-जिस प्रान्त में जाते थे वहाँ-वहाँ अपने श्रोताओं की भाषा में रचना करते थे जिससे उनकी भाषा पँचमेल खिचड़ी या सधुक्कड़ी हो जाती है।

कबीर ग्रन्थावली की मूलाधार बोली

यह तो निर्विवाद है, कि महात्मा कबीर ने मध्य देश अथवा आधुनिक हिन्दी प्रदेश में बोली जाने वाली एक बोली या अनेक बोलियों में ही काव्य रचना की होगी। कबीर ग्रन्थावली में पश्चिमी (खड़ी, ब्रज, पंजाबी तथा राजस्थानी) तथा पूर्वी हिन्दी के दोनों व्याकरणिक रूप प्रयुक्त हुए हैं किन्तु इनमें से कौन-सी बोली मूलाधार और किसका मिश्रण मात्र है इसका निर्णय कबीर ग्रन्थावली में प्रयुक्त व्याकरणिक रूपों की सापेक्षिक प्रयोगावृत्ति से ही संभव है।

उपर्युक्त तीन संभावनाओं में से कौन-सी संभावना कबीर ग्रन्थावली में सत्य उतरती है इसके निर्णय का एक मात्र साधन प्रयोगावृत्ति का विवेचन ही है। यह विवेचन यदि ध्वनि पद-वाक्य तथा शब्द कोश इन समस्त स्तरों पर हो तो निष्कर्ष अधिकाधिक वैज्ञानिक होगा।

व्याकरणिक रूपों की सापेक्षिक प्रयोगावृत्ति

पच्छिमी हिन्दी की खड़ी बोली में जो शब्द रूप (संज्ञा मूल रूप पुलिंग, ए० ब० संबंध कारक, पुरुषवाचक सर्वनामों के संबंध कारकीय रूप, विशेषण तथा भूतकालिक कृदन्त) आकारान्त होते हैं अधिकांशतः वे ब्रज और राजस्थानी (तथा कन्नौजी, बुंदेली आदि) में ओ-औकारान्त और यही अवधी (तथा भोजपुरी) में लघ्वन्त या व्यंजनांत: अथवा दीर्घ दीर्घतर होते हैं।

(प्रस्तुत विवेचन में मध्यकालीन ब्रज के रूपों के लिए डा० धीरेन्द्र वर्मा कृत 'ब्रज-भाषा' तथा मध्यकालीन अवधी के लिए डा० बाबूराम सक्सेना कृत 'एवोल्यूशन आव अवधी' से सहायता ली गई है। जो रूप तत्कालीन ब्रज-अवधी में नहीं मिलते और आधुनिक खड़ी बोली में ही मिलते हैं उन्हें मध्यकालीन खड़ी बोली के रूप मान लेने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए।)

कबीर ग्रन्थवली में संज्ञा मूल रूप, ए० व० पुलिंग के निम्नलिखित रूप ऐसे हैं जो तीनों बोलियों में भिन्न रूप से अपना अन्त्यस्वर रखते हैं।

खड़ी	ब्रज	अवधी
अंदेसा १ : सा. १०.५.१:	....	अंदेस १ (सा.६.७.२)
अंधियारा-१ : सा. ९.१.२:	....	....

	अचंभौ ५ : प.३, सा. २ १ :प.८९.७:	....
कूड़ा १- :सा.२३.८.२:	अरुझेरो-........	....
छाला १ :सा. २.३६.२:	....	....
जूठा ६ :प. ६:	....	....
झगरा १ :प.२७.१:	....	....
टीका १ :प.१४३.२:	....	....
घका २:१५.८९.२:	....	....
धागा १:प. १६.६:	....	....
नाला १ प. १.५:	....	....
पियारा ३ :र.१२.४ :	पियारो १ :सा.३०.२४.१:	....
सा. ३.२०.१	....	....
९.७.२	....	....
बछरा १ : १८.६.२	....	....
बनजारा १ : १२.६.५ :	....	....
बेटा १ : सा. १६.४०.१:	....	....
बेडा १.१५.२७.१	....	....
पौहडा १ : १५.४१.१	....	....
भरोसा २.३८.१,३२.७.२	....	....
मंझधारा १ : प.३.६ :	....	....
रंहटा १ : प. १३६. ५ :	रहट १: २.४८.१	रहटवां १ प.१३६.३
रहटा १ प. १३६.१	... .	....
रोड़ा १.१९.६.१	....	.. — ....
लेंहडा १.४.१८.२	....	....
लेखा १ प. ४.१.२	....	....
लोहा ४ प. ३.५	....	लोह प. १: १६६.४
३२.४	....	सा. २४.११.१
सा. ३. १०. २	....	....
२४.११.१	....	.... —

संबंध कारक

कबीर ग्रन्थावली में संबंधकारकीय परसर्गों की सापेक्षिक प्रयोगावृत्ति निम्न-लिखित है—

प्रसर्ग	खड़ी	ब्रज	अवधी	विशेष
ए० व०	+ का १३५ आवृत्ति			
	प.४३			
	र.९			
	सा. ८३			
			+ क २५ आवृत्ति	
		+ कौ २५ आवृत्ति		
			+ केर २ आवृत्ति	
			र. १८.४	
			१६.३	
			+ केरा ८ आवृत्ति	
			प. १ आवृत्ति	
			सा. ७ आवृत्ति	
वि० रूप	+ के १८२ आवृत्ति	तीनों बोलियों में प्रयुक्त		
स्त्रीलिंग	+ की २६८ आवृत्ति	”	”	
			+ केरे ६ आवृत्ति	
			६ सा.	
			–केरी ७ आवृत्ति	

पुरुषवाचक सर्वनाम संबंधकारीकीय रूप

खड़ी	ब्रज	अवधी
मेरा–२१ आवृत्ति	मेरो–१० आवृत्ति	मोर–१० आवृत्त
		मोरा–१० आवृत्त
मेरी–१८ आवृत्ति	मेरी–१८ आवृत्ति	मोरी–२ आवृत्ति
हमारा–७ आवृत्ति	हमारो	हमरा–२ आवृत्ति
		हमार–१ आवृत्ति
हमारी–२ आवृत्ति	हमारी–२ आवृत्ति	हमरी–४ आवृत्ति
हमारे–६ आवृत्ति		हमरे–४ आवृत्ति
तेरा–१५ आवृत्ति	तेरो–३ आवृत्ति	तोर–५ आवृत्ति
		तोरा–४ आवृत्ति
तुम्हारा–१ बार		तुम्हरा–२ आवृत्ति
तुम्हारी–८ बार	तुम्हारी–८ आवृत्ति	तुम्हरी–१ आवृत्ति
तुम्हारे–२ बार		तुम्हरे–१ आवृत्ति

विशेषण

खड़ी बोली में पुलिंग, ए० व० के जो विशेषण पद आकारान्त होते हैं अधिकांशतः वे पद ब्रज (बुंदेली, कन्नौजी, राजस्थानी) में ओ–औकारान्त तथा अवधी में आकारान्त या व्यंजनांत (लघुवन्त) होते हैं। इस दृष्टि से कबीर ग्रन्थावली में इन विशेषण रूपों की सापेक्षिक प्रयोगावृत्ति निम्नलिखित है—

खड़ी	ब्रज	अवधी
(१) अकेला (हंसु) ४ आवृत्ति प. ३ आवृत्ति ६८.२, ११०.४ ११९.२ र. १–४.५		अकेल (मैं) सा.१६ २६.२ १ आवृत्ति
(२) अयाना (सुत) ५ आवृति प. ३ - ४७.३, ६६.३, ६९.९ र. १ - १०.६		
(३) आछा (गाँव) १ आवृत्ति सा. २१.१२.१		अवधी
(४) आंवरा (बेदकतेब) १ आवृत्ति प.८७.३		
(५) इफतरा (बेदकतेब) १ आवृत्ति प.८७.३		
(६) उजियारा (घट) १ आवृत्ति प. ६४		ऊजल - ५ आवृत्ति
(७) ऊजला (पिउ) सा. ९.३.२		सा.४.३१.३ १२.३.१ १५.२६.१ १५.६५.१ २०.३.१
(८) ऊजरा सा. २२.३.२		ऊजर सा. १५.६.१
(९) कांचा (तुम्म) सा. १५.५९.१		
(१०) खरा (कहनु) २ आवृत्ति प. ११५.१		

खड़ी	ब्रज	अवधी
सा. २३.२		
(११) खारा (ज़ग) १ आवृत्ति		खार
सा. १६.३९.२		सा. ३०.४०.२
(१२) घनां (साझी) २ आवृत्ति		घन ४ आवृत्ति
सा. १६.१२.२		प.१-१३१.११
१.३१.२		सा. ३-४-३.१
		४.१०.१
		३१.१३.२
(१३) झूंठा ४ आवृत्ति		झूंठ (कुल)
		र.१०.५
प. ८९.१,१८३.५, १७९.१		झूंठ (संसारा)
र. १७.८		र.१९.१
(१४) (जरजरा) बेड़ा : २ आवृत्ति		जरजर १ आवृत्ति
सा. १.१०.२		सा. २.३४.१
१५.२७.१		
(१५) थोथरां (जपतप) १ आवृत्ति		
सा. २६.६.१		
(१६) थोड़ा (जीवना)		
सा. १५.४३.१		
थोरा-सा. ३१.२२.१		
(१७) पातरा : १ आवृत्ति		
२९.३.१२		
(१८) पियारा ३ आवृत्ति	पियारो १ आवृत्ति	
र. १२	सा. ३१.२४.१	
(१९) बावरा		
र. १. २		
(२०) भला १३ आवृत्ति	भलो भलो	भल ५ आवृत्ति
सा. २१.१.१	२ आवृत्ति	प.३
प.२	२१.२७.१	सां. २
सा.११ आवृत्ति		
(२१) सयाना र.३		

खड़ी	ब्रज	अवधी
(२२) सांचा सा. १.९.१		
(२३) सांकरा सा. १६.१.१		
(२४) सगा सा. १.३.२		

निजवाचक सर्वनाम-संबंधकारकीय

निजवाचक सर्वनाम के संबंधकारकीय रूप खड़ी, ब्रज और अवधी तीनों में विशिष्ट हैं––

खड़ी	ब्रज	अवधी
अपना-५ आवृत्ति		
प.२		
सा.३		
आपना-२ आवृत्ति		
सा. २		
	अपनौ १ आवृत्ति	
		आपन ५ आवृत्ति
		प.२
		र.१
		सा.२
		आपुन १ आवृत्ति
		सा. ३१.२४.२

सार्वनामिक विशेषण (प्रकार या गुणबोधक) अवधी

खड़ी	ब्रज	अवधी
जैसा ८ आवृत्ति		
प.३		
सा. ५		
	जैसो १ आवृत्ति	
तैसा २ आवृत्ति		
सा.२		
	तैसो २ आवृत्ति	
कैसा २ आवृत्ति		
प.१		
सा.१		
	कैसो १ आवृत्ति	
प.१३.४		
१५		

क० ग्र० खड़ी	ब्रज	अवधी
ऐसा ३४ आवृत्ति प.१२ सा. २२		
	ऐसो १ आवृत्ति प. १५४.६	

सहायक क्रिया

'अस्' 'भू' तथा रह धातु से विकसित सहायक क्रिया से संबंधित भूत निश्चयार्थ के रूप में खड़ी, ब्रज और अवधी में भिन्न रूप से निर्मित होते हैं। कबीर ग्रन्थावली में इन रूपों की सापेक्षिक आवृत्ति निम्नलिखित है:—

खड़ी	ब्रज	अवधी
था ७ आवृत्ति		
थे ४,,		
	हते १ आवृति	
हुआ, हूआ, हुवा ११ आवृत्ति		
भया ७० आवृत्ति		
	भयौ १७ आवृत्ति	
		भएउ० १ आवृत्ति
		भवा १ आवृत्ति
रहा २ आवृत्ति		

क्रियार्थक संज्ञा

खड़ी बोली में क्रियार्थक संज्ञा के रूप ना अना : तथा ब्रज भाषा में अनो-अनौ बौ तथा अवधी—अब् लगा कर बनते हैं। कबीर ग्रन्थावली में इन रूपों की सापेक्षिक आवृत्ति निम्नलिखित है—

खड़ी	**ब्रज**	**अवधी**
+ना अना १५ आवृत्ति		
	+नौ अनौ १ आवृत्ति	
		+अब्-३ आवृत्ति
+अन् न २० आवृत्ति		

भूतनिश्चयार्थ

अन्य पु० ए० व० पुलिंग भूतनिश्चयार्थ के रूप खड़ी ब्रज और अवधी में भिन्न-भिन्न रूप से निर्मित होते हैं। कबीर ग्रन्थावली में इनकी सापेक्षिक आवृत्ति निम्नलिखित है—

+इया या आ
१५० आवृत्ति

क०ग्र० खड़ी	ब्रज	अवधी	भोजपुरी
	–इयौ यौ औ औ ३० आवृत्ति		
		+वा एउ एहु १३ आवृति	
			+ला ५ आवृत्ति

कुछ विशिष्ट भूतनिश्चयार्थक क्रिया रूपों की सापेक्षिक प्रयोगावृत्ति नीचे दी जाती है :—

	खड़ी	ब्रज	अवधी	भोजपुरी
गया ४८ आवृत्ति	खड़ी			
गया २१ ,,		ब्रज		
गया ,,			अवधी	
भया ७० आवृत्ति	खड़ी			
भयौ १७ ,,		ब्रज		
भएउ १ ,,			अवधी	
भैला-भैल–आ				भोजपुरी
मिला २० आवृत्ति	खड़ी			
मिलिया ८ ,,	,,			
मिल्या १ ,,	,,			
मिलियौ ८ ,,		ब्रज		
मिलिऔ १ ,,				
मिल्यौ २ ,,		ब्रज		
मिलैला १ ,,				भोजपुरी
हुआ ५ आवृत्ति	खड़ी			
हूआ २ ,,	खड़ी			
हूवा ४ ,,	खड़ी			
हैला ४ ,,				भोजपुरी
आया १७ आवृत्ति	खड़ी			
आइया ३ ,,	खड़ी			
आयौ ५ ,,	खड़ी			
आवा ६ ,,			अवधी	
पाया २७ ,,	खड़ी			

	खड़ी	ब्रज	अवधी
पाइया ४ ,,	खड़ी		
पायौ २ ,,		ब्रज	
पावा ८ ,,			अवधी
किया ४८ ,,	खड़ी		
कीया १२ ,,			
कियौ ६ आवृत्ति		ब्रज	
कीन्ह ६ ,,			अवधी
कीन्हां १३ ,,			अवधी
किएहु १ ,,			अवधी
देखा १६ ,,	खड़ी		
देखिया ,,	खड़ी		
देख्या १ ,,	खड़ी		
देख्यौ १ ,,		ब्रज	
चला ९ ,,	खड़ी		
चल्यौ ४ ,,		ब्रज	
खाया १० ,,	खड़ी		
खायौ ५		ब्रज	
खाइयौ १		ब्रज	

भविष्य निश्चयार्थ

+है लगाकर भविय निश्चयार्थ की रचना मध्यकालीन खड़ी, ब्रज और अवधी तीनों में मिलती है—कबीर ग्रन्थावली में भी ये रूप पर्याप्त मात्रा में प्रयुक्त हुए हैं।+स् लगाकर भविष्य रचना की पद्धति प्राचीन रूपों की ओर संकेत करती है यद्यपि आज ।–स भविष्यत पंजाबी की विशेषता है। ।–ग् भविष्यत खड़ी तथा ब्रज की विशेषता है उसमें भी खड़ी में ।–गा तथा ब्रज में ।–गो गौ विभक्तियाँ लगती हैं। कबीर ग्रन्थावली से संकलित उदाहरणों में इनकी सापेक्षिक आवृत्ति निम्नलिखित है :–
प्रत्यय–

+है

	खड़ी	ब्रज	अवधी
जानिहै बिनसहै परिहै			

+सी				
होसी, करसी खेसी, भाजसी जासी, लाजसी आदि	,,	,,	,,	पंजाबी
+गा १२ आवृत्ति	खड़ी			
समाइगा १ बार	खड़ी			
नसाइगा १ बार	,,			
होइगा ८ आवृत्ति				
होइयो १		ब्रज		
गहेगा १	खड़ी			
जाइगा १०	खड़ी			
जानेगा १	खड़ी			
करेगा १	खड़ी			
बूड़ैगा २	खड़ी			
बिनसैगो ३		ब्रज		
+वा व कहिबौ १ आ०		ब्रज		
+बौ बो देबा १ आ०			अवधी	

क्षेत्रीय प्रकृति :––कबीर ग्रन्थावली में प्रयुक्त खड़ी-ब्रज--अवधी, पंजाबी, भोजपुरी के कुछ विशिष्ट व्याकरणिक रूपों की सापेक्षिक प्रयोगावृत्ति के आधार पर यह तो सहज ही ज्ञात हो जाता है कि कबीर ग्रन्थावली में खड़ी बोली के व्याकरणिक रूपों की अधिकता है। अतएव निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि खड़ी बोली ही कबीर ग्रन्थावली की मूलाधार बोली है; ब्रज, अवधी, भोजपुरी या पंजाबी नहीं। किन्तु मात्र इस निष्कर्ष से ही कबीर की काव्य-भाषा की प्रकृति पूर्ण रूपेण वर्णित नहीं हो पाती, क्योंकि खड़ी बोली के साथ-साथ ब्रज और अवधी रूपों के भी प्रचुर प्रयोग मिलते हैं। इस प्रकार भविष्य निश्चयार्थ में 'स' भविष्यत के भी बहुत प्रयोग हैं। इन रूपों का प्रयोग ऐसा नहीं है जिन्हें केवल ऊपर से लाया हुआ मिश्रण मात्र कहा जाए। कबीर की काव्य भाषा में खड़ी बोली के सर्वनाम के साथ ब्रजभाषा की क्रिया और ब्रजभाषा के सर्वनाम के साथ खड़ी बोली की क्रिया का सहज रूप में प्रयोग मिलता है। अतएव निष्कर्ष यही निकलता है कि जिन व्याकरण रूपों को हम ब्रज के रूप कहते हैं वे रूप भी कबीर की काव्य भाषा की आन्तरिक प्रकृति के स्वाभाविक रूप हैं जो शौरशेनी या पश्चिमी अपभ्रंश से हिन्दी को प्राप्त हुए थे और जिन्हें समान रूप से कबीर युग में खड़ी, ब्रज, अवधी की अविभक्त सम्पत्ति कहा जा सकता है। कबीर ग्रन्थावली में प्राप्त ऐसे रूप अनेक हैं जो तत्कालीन खड़ी-ब्रज तथा अवधी में समान रूप से प्रयुक्त होते रहे होंगे :––

यथा :—१–संज्ञा में वहुबचन का प्रत्यय 'अन्' 'अनि' २–कर्म-संप्रदान करण-अपादान, तथा संबंध कारक की संयोगी कारक विभक्ति ए–(अहि) ३–कर्म-संप्रदान की वियोग कारक परसर्ग कौं, को

करण-संप्रदान की वियोग कारक परसर्ग कौं,कौ

करण-अपादान की „ „ सौं, सों, त्यौं ते

अधिकरण की वियोगी „ „ में मैं, मांहि, महि

४—सर्वनाम–मैं, हम, तू, तुम, यह, एहु, सो जो, कौन

५—कृदन्त–पूर्वकालिक विभक्ति-करि

६—काल वर्तमान सामान्य विभक्ति—अहु, ऐ आदि

इसके अतिरिक्त कबीर की भाषा में कुछ ऐसे व्याकरणिक रूप मिलते हैं जो आज ब्रजभाषा (राजस्थानी, कनौजी, बुंदेलखंडी आदि) के ही विशिष्ट रूप कहे जाते हैं। इन प्रयोगों से इस तथ्य की ओर संकेत मिलता है कि खड़ी बोली मूलाधार बोली अवश्य है; किन्तु आगरा क्षेत्र की बोली भी उसमें अंतः सहयोगिनी की भांति संयुक्त है। इस प्रकार कबीर की काव्य भाषा में दिल्ली, मेरठ, आगरा की क्षेत्रीय बोली प्रधानतः काव्य भाषा के रूप में प्रयुक्त है। यद्यपि उसके केन्द्र में दिल्ली-मेरठ की बोली ही है। हिन्दी प्रदेश में बोली जाने वाली भिन्न-भिन्न बोलियों का जो सीमित क्षेत्र है उस सीमित चौखटे में कबीर की काव्यभाषा पूर्ण रूप से समा नहीं पाती है। जिस प्रकार कबीर की धार्मिक साधना किसी सीमित दार्शनिक वाद के कटघरे में नहीं समाती उसी प्रकार कबीर की काव्य भाषा भी वर्तमान बोलियों के सीमित क्षेत्र में समा नहीं पाती है। कबीर के काव्य में खड़ी-ब्रज के इतने सहज मिलन से यह भी सिद्ध होता है कि आज खड़ी, ब्रज की सीमाएँ जितनी निश्चित हैं वैसा अलगाव कबीर-युग में नहीं था। उस युग के भाषाशास्त्रियों या कवियों द्वारा दिए गए नामों से हम कबीर की भाषा की क्षेत्रीय प्रकृति का नामकरण करें तो अधिक न्यायसंगत होगा। कबीर से पूर्व अमीर खुसरो ने अपनी फारसी पुस्तक 'नूह सिपहर' में अपने समय की भारतीय भाषाओं की गणना की है। उन नामों में मध्यप्रदेश की दो भाषाओं का नामांकन करते हैं:(१) देहलवी (२) पूरबी। अमीर खुसरो ने बड़े गर्व के साथ कहा कि मैं फारसी के साथ-साथ हिन्दवी जानता हूँ और उसमें भी कविता कर सकता हूँ। खुसरो एटा जिला पटियाली में जन्मे और अधिकांश भाग दिल्ली में व्यतीत किया था अतएव खुसरो की हिन्दवी और देहलवी को समानार्थक मानना पड़ेगा। खुसरो की देहलवी या हिन्दवी में भी मूलाधार दिल्ली-मेरठ की खड़ी बोली है, किन्तु आगरे की भाषा भी सहज भाव से मिली है। निष्कर्षतः यही कहा जा सकता है कि देहलवी के क्षेत्र में उस समय दिल्ली-मेरठ-आगरा तथा पूर्वी पंजाब के पूर्वी भाग की बोली आती रही होगी। यही

तत्कालीन देहलवी या हिन्दवी अमीर खुसरो की काव्य भाषा थी इसी को अपनाकर नाथों ने हिन्दी प्रदेश तथा हिन्दी प्रदेश के बाहर भी अपने धर्म का प्रचार किया होगा—इसी देहलवी या हिन्दवी को मुसलमानों ने भी अपनाया और अन्तर्प्रान्तीय रूप प्रदान किया। उस युग में संस्कृत-पाली प्राकृत-अपभ्रंश के अतिरिक्त यदि किसी आधुनिक भारतीय आर्य भाषा को अन्तर्प्रान्तीय या राष्ट्रीय दर्जा प्राप्त था तो वह पद हिन्दवी को ही जिसके केन्द्र में तो वही बोली थी जिसे आज हम खड़ी बोली कहते हैं किन्तु जिसके आन्तरिक प्रकृति के साथ ब्रज भी सहजरूप से मिली थी तथा उसमें अन्तर्प्रान्तीय क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाली अपभ्रंश या अवहट्ट से विकसित वे रूप भी मिलते थे जो अविभाजित धरोहर के रूप में पंजाबी, खड़ी, ब्रज, अवधी, राजस्थानी प्रदेश में प्रयुक्त होते थे। ऐसे रूपों को पंजाबी, खड़ी या ब्रज अथवा अवधी या भोजपुरी के रूप न कह कर तत्कालीन काव्य भाषा तत्कालीन प्रचलित भाषा के अविभक्त रूप कहना अधिक वैज्ञानिक और न्यायसंगत होगा। कबीर को सारे देश में हिन्दू-मुसलमान दोनों जातियों में अपने धर्म का प्रचार करना था अतएव कबीर को अपनी काव्य भाषा के रूप में प्रमुखतः उपर्युक्त हिन्दवी को अपनाना अधिक उपयोगी सिद्ध हुआ होगा। **कबीर की काव्य भाषा को तत्कालीन हिन्दवी की संज्ञा देना ही अधिक न्यायसंगत, अधिक वैज्ञानिक होगा।** गोरखनाथ तथा अमीर खुसरो की भाषा कबीर की हिन्दवी की पूर्वगामी कड़ी तथा दक्खिनी कवियों की हिन्दवी कबीर की भाषा की एक सम-सामयिक कड़ी कही जा सकती है। दक्खिनी कवियों से यदि गुजराती मराठी का क्षेत्रीय रंग निकाल दिया जाय तो कबीर की हिन्दवी के दर्शन हो जाएँगे। एक देश-व्यापी सरल-सीधी-हिन्दवी या हिन्दुस्तानी भाषा के माध्यम से समस्त देश में समस्त जातियों में अपने धर्म का प्रचार करने वाले स्वामी प्राणनाथ (१७वीं शताब्दी) की भाषा कबीर की हिन्दवी का १७वीं शती का रूप है और रामप्रसाद निरंजनी के 'योग-वासिष्ट' तथा दौलत राम के 'पउम चरिउ' में इसी हिन्दवी का १८वीं शती ई० का रूप विद्यमान है। यह कड़ी हमें १०९ शती ई० के प्रथम चरण में लल्लूलाल तक ले जाती है। यही कारण है कि लल्लूलाल के प्रेमसागर में मूलतः खड़ी बोली का प्रयोग होने पर भी ऐसे व्याकरणिक प्रयोग भी सहज रूप से गुथे हैं जिन्हें आज ब्रज भाषा के रूप कहा जाता है। उपर्युक्त विवेचन से यह तो निश्चयात्मक रूप से स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दवी ही कबीर काव्य की प्रधान काव्य भाषा है। किन्तु इतने पर भी कबीर की काव्य भाषा का स्वरूप कुछ-कुछ अछूता रह जाता है। कबीर ने अन्तर्प्रान्तीय व्यवहार के लिए अपने काव्य में हिन्दवी को अपनाया किन्तु वह बनारस तथा मगहर की बोली को छोड़ नहीं सकते थे। आज भी यदि कोई अशिक्षित किन्तु पर्यटनशील स्वभाव का प्रचारक सारे देश में अपनी बात कहना चाहेगा तो राष्ट्रभाषा हिन्दी को

अपनाएगा, किन्तु राष्ट्रभाषा हिन्दी के साथ-साथ उसमें अपनी मातृभाषा भी सहज रूप से मिल जाएगी। उसी प्रकार कबीर के काव्य में हिन्दवी के साथ साथ कबीर की मातृ भाषा––बनारस और मगहर की बोली––भी सहज ही में मिल गई। इसी बोली को अमीर खुसरो ने 'पूरबी' की संज्ञा दी थी––उसी को प्राचीन कोशली तथा वर्त्तमान युग में अवधी की संज्ञा दी जाती है। रोड़ा कृत राउलबेलि[1] से यह ज्ञात होता है कि उस युग में भी प्राचीन कोशली या पूरबी में भी कविता हो सकती थी, किन्तु पूरबी या कोशली को लेकर सारे देश में प्रचार संभव नहीं था। अतएव, हिन्दवी को अपनाना आवश्यक हो गया होगा फिर भी अपनी मातृभाषा या जनपदीय भाषा का आ जाना स्वाभाविक था। कबीर की काव्यभाषा हिन्दवी में पूरबी के दो प्रकार के प्रयोग मिलते हैं: १––वे प्रयोग जो अन्तर्प्रान्तीय अपभ्रंश या अवहट्ठ के ऐसे अवशिष्ट रूप थे जो तत्कालीन खड़ी-ब्रज-अवधी सभी बोलियों में पाए जाते हैं। उन रूपों का आना तो सहज स्वाभाविक था क्योंकि वे सब में सर्वनिष्ट थे। २– दूसरे अवधी के कुछ ऐसे विशिष्ट रूप हैं जो नितान्त अवधी के ही हैं और कबीर की मातृ-भाषा होने के कारण ऐसे ठेठ शब्दों का आ जाना स्वाभाविक था। अवधी प्रदेश से मिला हुआ भोजपुरी का प्रदेश है अतएव अवधी के साथ यत्र-तत्र भोजपुरी के रूप भी आ गए हैं। यद्यपि भोजपुरी में बहुत सीमित प्रयोग मिलते हैं। इस प्रकार कबीर की काव्य भाषा हिन्दवी की पूरबी शैली अपनाए हुए है ठीक उसी प्रकार जैसे दक्खिनी कवियों की भाषा हिन्दवी की दक्खिनी शैली को ग्रहण किए हुए। कबीर के लगभग समसामयिक दक्खिनी के प्रथम लेखक ख्वाजा बंदा नेवाज़ के 'मिराजुल आशकीन' की भाषा को यदि हम दक्खिनी हिन्दवी कहेंगे तो कबीर की काव्य भाषा को पूरब में प्रचलित हिन्दवी कहना सब प्रकार से न्यायसंगत, वैज्ञानिक तथा ऐतिहासिक होगा। देशव्यापी धर्म तथा समाजसुधारक क्रान्तिकारी कबीर की प्रकृति के अनुकूल यही है। कबीर की काव्य भाषा को सधुक्कड़ी, खिचड़ी, पंचमेल मिठाई आदि नामों से संबोधित करना अवैज्ञानिक, अनैतिहासिक निष्कर्ष है वास्तव में कबीर की काव्य भाषा का एक ही स्वरूप है, एक ही भाषा वैज्ञानिक प्रकृति है उसे भिन्न-भिन्न बोलियों का मिश्रण कहना सर्वथा अवैज्ञानिक है। कबीर ने सचेत होकर अपनी काव्य भाषा का स्वरूप चुना था। अशिक्षा के कारण ऐसा नहीं हुआ कि जिस प्रदेश में गए **भाषा को अपनाया**। कबीर ने अपने काव्य के लिए उसी भाषा को चुना **जिसे उस युग में** तत्कालीन भारत की राष्ट्रभाषा कह सकते हैं।

कालानुक्रमिक विश्लेषण

उपर्युक्त विवेचन से यह तो स्पष्ट हो गया कि कबीर ने प्रधानतया काव्य भाषा

१––'राउल वेलि' डा० माताप्रसाद गुप्त १९६३

के रूप में तत्कालीन हिन्दवी का प्रयोग किया है। दूसरे शब्दों में कबीर की काव्य भाषा राष्ट्रभाषा हिन्दी की वह महत्वपूर्ण कड़ी है, जिसके पूर्व में गोरखनाथ, अमीर खुसरो आदि की तथा बाद में प्राणनाथ, रामप्रसाद निरंजनी, दौलतराम और लल्लूलाल आदि की भाषा शृंङ्खला जुड़ी है। इस भाषा शृंङ्खला के संदर्भ में कबीर की काव्य भाषा के गठनात्मक अध्ययन के आधार पर कबीर के कालानुक्रम की समस्या को सुलझाने में कुछ सहायता मिल सकती है। गोरखनाथ तथा अमीर खुसरो की हिन्दी कविता या हिन्दवी के वैज्ञानिक संस्करण अभाग्य से अभी तक प्राप्त नहीं हैं अतएव इनसे इस समस्या पर विशेष सहायता नहीं मिल सकती है। किन्तु सुधारु रचित पउम चरिउ (१४ वीं श० शई०) छिताई वार्ता (१५वीं श०ई०) बीसलदेव राऊ (१४वीं श० ई०) आदि के वैज्ञानिक संस्करण सौभाग्य से प्राप्त हैं। इन ग्रन्थों में भी यत्र-तत्र खड़ी बोली या हिन्दवी के प्रयोग मिलते हैं अतएव इन ग्रन्थों के भाषा गठन तथा कबीर ग्रन्थावली के भाषा गठन के तुलनात्मक अध्ययन इस संबंध में उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। इन ग्रन्थों के ध्वन्यात्मक गठन में एक यह बात विशेष द्रष्टव्य है कि इसमें अउ अइ के स्वर संयोग (शब्द की अंतिम स्थिति में) अधिकांशतः प्राप्त होते हैं इनके अइ > ऐ और अउ > ओ के रूप में प्रयोग बहुत बिरल हैं जब कि कबीर ग्रन्थावली में इस दृष्टि से इन प्रयोगों का अनुपात ६० : ४० का होगा। जैसे-जैसे हम ख्वाजाबन्दा नेवाज़ (१३४६-१४२३) बजही (१६३५ ई० के लेखक) 'कुलजम सरूप' के लेखक प्राणनाथ (१६१८-१६९४ ई०) की ओर आते हैं वैसे ही वैसे अइ, अउ के स्वर संयोग लुप्त होने लगते हैं और इनके स्थान में ऐ और औ के बहुत प्रयोग मिलने लगते हैं। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि कबीर ग्रन्थावली का रचनाकाल पउम-चरिउ, छिताई वार्ता के बाद और मिराजुल आशिकीन सबरस और कुलजम स्वरूप के पूर्व ही सिद्ध होता है। गुरुनानक में इनका अनुपात लगभग ५० : ५० होगा। पदात्मक गठन के तुलनात्मक अध्ययन से भी हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं। भूतकालिक समर्थक क्रिया के कर्ता के बाद कारक परसर्ग 'ने' का प्रयोग आधुनिक हिन्दी तथा मध्यकालीन हिन्दी की बहुत बड़ी विशेषता है। गोरखनाथ ने कबीर ग्रन्थावली में 'ने' का एक भी प्रयोग नहीं किया। परमचरिउ, छिताई वार्ता आदि पूर्ववर्ती ग्रन्थों में भी कर्ताकारक परसर्ग के रूप में 'ने' का प्रयोग दुर्लभ है। गुरुनानक की हिन्दवी में भी यह प्रयोग अलभ्य है। मिराजुल आशिकीन में इसके आधुनिक प्रयोग मिलने लगते हैं और सबरस तथा कुलजम सरूप तक तो बहुत प्रयोग प्राप्त होते हैं। इसी प्रकार कबीर ग्रन्थावली में अपभ्रंश के अनेक संयुक्त विशेषण तथा क्रिया पद मिलते हैं। जनभाषा में इन प्रयोगों का काल साधारणतः १६ शती ई० के प्रथम चरण के बाद में नहीं ले जाया जा सकता है। प्राचीन काव्य परम्परा में

पारंगत पंडित भले ही १६वीं-१७वीं शती ई० तक भी अपभ्रंश का प्रयोग करते रहे हों; किन्तु जनभाषा में काव्य रचने की प्रतिज्ञा करने वाले कबीर में इसके प्रयोग सिद्ध करते हैं कि कबीर ग्रन्थावली की भाषा १६वीं शती ई० के पूर्व की होनी चाहिए। इस प्रकार ध्वनि-पद गठन के आधार पर कबीर ग्रन्थावली की भाषा १४वीं शती के बाद और १६वीं शती ई० के पूर्व की सिद्ध हो जाती है जो सर्वथा इतिहास के अनुकूल प्रतीत होती है ।

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि कबीर की काव्य भाषा में १५ श० ई० तथा १६वीं श० ई० पूर्वार्ध की हिन्दवी का वह स्वरूप सुरक्षित है, जिसे हम तत्कालीन राष्ट्रभाषा का स्वरूप कह सकते हैं ।

———